لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ

Rafiqul Mo’tamireen (Hindi)

रफ़ीक़ुल मो’तमिरीन

उ़म्रे का त़रीक़ा और दुआएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाजे़ खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुजु़र्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़िफ़रत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(रफ़ीकु़ल मो 'तमिरीन)

येह किताब **(रफ़ीकु़ल मो 'तमिरीन)**

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुता-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net
I.T. Majlis of Dawateislami

रफ़ीकुल मो 'तमिरीन

मुअल्लिफ़ :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नाम किताब : रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन

मुअल्लिफ़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

तारीखे़ इशाअ़त : शव्वालुल मुकर्रम 1434 सि.हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की शाखे़ं

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : मस्जिद ग़रीब नवाज़ के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर - फ़ोन : 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, अजमेर

है़दरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, है़दरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़्हा
उ़म्रे वाले के लिये 52 निय्यतें	7
आप को अ़ज़्मे मदीना मुबारक हो	17
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	21
तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم	21
उ़म्रह की तय्यारी कीजिये	21
एह़राम बांधने का त़रीक़ा	21
इस्लामी बहनों का एह़राम	22
एह़राम के नफ़्ल	23
उ़म्रे की निय्यत	23
लब्बैक	24
दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم	24
मा'ना पर नज़र रखते हुए लब्बैक पढ़िये	25
लब्बैक कहने के बा'द की एक सुन्नत	25
लब्बैक के 9 म-दनी फूल	26
निय्यत के मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी हिदायत	27
एह़राम के मा'ना	28
एह़राम में येह बातें ह़राम हैं	28
एह़राम में येह बातें मक्रूह हैं	30
येह बातें एह़राम में जाइज़ हैं	31
मर्द व औ़रत के एह़राम में फ़र्क़	33
एह़राम की 9 मुफ़ीद एह़तियातें	34
एह़राम के बारे में ज़रूरी तम्बीह	37
ह़रम की वज़ाह़त	37
मक्कए मुकर्रमा की ह़ाज़िरी	38
ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये	39
का'बए मुशर्रफ़ा पर पहली नज़र	40
सब से अफ़्ज़ल दुआ़	41
त़वाफ़ में दुआ़ के लिये रुकना मन्अ़ है	41
उ़म्रे का त़रीक़ा	42
त़वाफ़ का त़रीक़ा	42
पहले चक्कर की दुआ़	46
दूसरे चक्कर की दुआ़	49
तीसरे चक्कर की दुआ़	51
चौथे चक्कर की दुआ़	53
पांचवें चक्कर की दुआ़	55
छटे चक्कर की दुआ़	58
सातवें चक्कर की दुआ़	60
मक़ामे इब्राहीम	62
नमाज़े त़वाफ़	62
मक़ामे इब्राहीम की दुआ़	63
नमाज़ के चार म-दनी फूल	64
अब मुल्तज़म पर आइये...!	65
मक़ामे मुल्तज़म पर पढ़ने की दुआ़	66
एक अहम मस्अला	68
अब ज़मज़म पर आइये !	68
आबे ज़मज़म पी कर येह दुआ़ पढ़िये	69
आबे ज़मज़म पीते वक़्त दुआ़ मांगने का त़रीक़ा	69
ज़ियादा ठन्डा न पियें	70
नज़र तेज़ होती है	70
सफ़ा व मर्वह की सअ्य	71
सफ़ा पर अ़वाम के मुख़ालिफ़ अन्दाज़	73
कोहे सफ़ा की दुआ़	74
सअ्य की निय्यत	80
सफ़ा/मर्वह से उतरने की दुआ़	81
सब्ज़ मीलों के दरमियान पढ़ने की दुआ़	82
दौराने सअ्य एक ज़रूरी एह़तियात	84
नमाज़े सअ्य मुस्तह़ब है	84
ह़ल्क़ या तक़्सीर	84
तक़्सीर की ता'रीफ़	84
इस्लामी बहनों की तक़्सीर	85
चप्पलों के बारे में ज़रूरी मस्अला	85
जिस ने दूसरों के जूते ना जाइज़ इस्ति'माल कर लिये अब क्या करें ?	86
इस्लामी बहनों के लिये म-दनी फूल	87
त़वाफ़ में सात बातें ह़राम हैं	87
त़वाफ़ के ग्यारह मक्रूहात	88
त़वाफ़ व सअ्य में येह सात काम जाइज़ हैं	89
सअ्य के 10 मक्रूहात	89
सअ्य के चार मु-तफ़र्रिक़ म-दनी फूल	90
इस्लामी बहनों के लिये ख़ास ताकीद	90
मदीने की ह़ाज़िरी	91
ज़ौक़ बढ़ाने का त़रीक़ा	91
मदीना कितनी देर में आएगा !	91
नंगे पाउं रहने की क़ुरआनी दलील	93
ह़ाज़िरी की तय्यारी	94
ऐ लीजिये ! सब्ज़ गुम्बद आ गया	94
हो सके तो बाबुल बक़ीअ़ से ह़ाज़िर हों	96
नमाज़े शुक्राना	97
सुनहरी जालियों के रू बरू	97
मुवा-जहा शरीफ़ पर ह़ाज़िरी	98
बारगाहे रिसालत में सलाम अ़र्ज़ कीजिये	99
सिद्दीक़े अक्बर की ख़िदमत में सलाम	101
फ़ारूक़े आ'ज़म की ख़िदमत में सलाम	102
दोबारा एक साथ शैख़ैन की ख़िदमतों में सलाम	102
येह दुआ़एं मांगिये	103
बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी के 12 म-दनी फूल	104
जाली मुबारक के रू बरू पढ़ने का विर्द	106
दुआ़ के लिये जाली मुबारक को पीठ मत कीजिये	106
पचास हज़ार ए'तिकाफ़ का सवाब	107
रोज़ाना पांच ह़ज का सवाब	108
सलाम ज़बानी ही अ़र्ज़ कीजिये	108

उ़न्वान	सफ़्हा
बुढ़िया को दीदार हो गया	109
अल इन्तिज़ार..! अल इन्तिज़ार..!	110
एक मेमन ह़ाजी को दीदार हो गया	110
गलियों में न थूकिये !	111
जन्नतुल बक़ीअ़	111
अहले बक़ीअ़ को सलाम अ़र्ज़ कीजिये	112
दिलों पर ख़न्जर फिर जाता	113
अल वदाई ह़ाज़िरी	113
अल वदाअ़ ताजदारे मदीना	115
मक्कए मुकर्रमा की ज़ियारतें	118
विलादत गाहे सरवरे आ़लम	118
ज-बले अबू क़ुबैस	118
ख़दी-जतुल कुब्रा का मकान	120
ग़ारे ज-बले सौर	121
ग़ारे हि़रा	121
दारे अरक़म	122
मह़ल्लए मस्फ़ला	123
जन्नतुल मअ़ला	123
मस्जिदे जिन्न	124
मस्जिदुर्रायह	124
मस्जिदे ख़ैफ़	125
मस्जिदे जिइर्राना	125
मज़ारे मैमूना	127
मस्जिदुल ह़राम में नमाज़े मुस्त़फ़ा के 11 मक़ामात	128
मदीनए मुनव्वरह की ज़ियारतें	129
रौ-ज़तुल जन्नह	129
मस्जिदे क़ुबा	130
उ़म्रे का सवाब	131
मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा	131
शु-हदाए उहुद को सलाम करने की फ़ज़ीलत	132
सय्यिदुना ह़म्ज़ा की ख़िदमत में सलाम	132
शु-हदाए उहुद को मज्मूई सलाम	134
ज़ियारतों पर ह़ाज़िरी के दो त़रीक़े	135
सुवाल व जवाब	
जराइम और इन के कफ़्फ़ारे	136
दम वग़ैरा की ता'रीफ़	136
दम वग़ैरा में रिआ़यत	136
दम, स-दक़े और रोज़े के	137
ज़रूरी मसाइल	
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरिये	138
त़वाफ़ के बारे में मु-तफ़र्रिक़ सुवाल व जवाब	139
इस्तिलामे ह़जर में हाथ कहां तक उठाएं ?	139
त़वाफ़ में फेरों की गिनती याद न रही तो ?	140
दौराने त़वाफ़ वुज़ू टूट जाए तो क्या करे ?	140
क़त़रे के मरीज़ के त़वाफ़ का अहम मस्अला	141
औ़रत ने बारी के दिनों में नफ़्ली त़वाफ़ कर लिया तो ?	142
मस्जिदुल ह़राम की पहली या दूसरी मन्ज़िल से त़वाफ़ का मस्अला	143
दौराने त़वाफ़ बुलन्द आवाज़ से मुनाजात पढ़ना कैसा ?	144
इज़्तिबाअ़ और रमल के बारे में सुवाल व जवाब	145
बोसो कनार के बारे में सुवाल व जवाब	145
एह़राम में अम्रद से मुसा-फ़ह़ा किया और......?	147
मियां बीवी का हाथ में हाथ डाल कर चलना	148
नाख़ुन तराश्ने के बारे में सुवाल व जवाब	148
बाल दूर करने के बारे में सुवाल व जवाब	149
ख़ुश्बू के बारे में सुवाल व जवाब	152
एह़राम में ख़ुश्बूदार साबुन का इस्ति'माल	159
मोह़रिम और गुलाब के फूलों के गजरे	160
सिले हुए कपड़े वग़ैरा के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब	165
एह़राम में टिशू पेपर का इस्ति'माल	166
ह़ल्क़ व तक़्सीर के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब	171
मु-तफ़र्रिक़ सुवाल व जवाब	172
13 को ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द एह़राम बांध सकते हैं	174
अ़रब शरीफ़ में काम करने वालों के लिये	177
एह़राम न बांधना हो तो ह़ीला	178
उ़म्रह या ह़ज के लिये सुवाल करना कैसा ?	179
उ़म्रे के वीज़े पर ह़ज के लिये रुकना कैसा ?	181
ग़ैर क़ानूनी रुकने वाले की नमाज़ का अहम मस्अला	182
ह़रम में कबूतरों, टिड्डियों को उड़ाना, सताना	183
ह़रम के पेड़ वग़ैरा काटना	187
मीक़ात से बिग़ैर एह़राम गुज़रने के बारे में सुवाल जवाब	189
मआख़िज़ो मराजेअ़	190

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

उ़म्रे वाले के लिये 52 निय्यतें

(मअ़ रिवायात, ह़िकायात व म-दनी फूल)

(हुज्जाज व **मो 'तमिरीन** इन में से मौक़अ़ की मुना-सबत से वोह निय्यतें कर लें जिन पर अ़मल करने का वाक़ेई ज़ेह्न हो)

﴾1﴿ सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये **उ़म्रह** करूंगा। (क़बूलिय्यत के लिये इख़्लास शर्त़ है और इख़्लास ह़ासिल करने में येह बात बहुत मुआ़विन है कि रियाकारी और शोहरत के तमाम अस्बाब तर्क कर दिये जाएं) ﴾2﴿ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी में **उ़म्रह** करूंगा ﴾3﴿ मां बाप की रिज़ा मन्दी ले लूंगा। (बीवी शोहर को रिज़ा मन्द करे, मक़रूज़ जो अभी क़र्ज़ अदा नहीं कर सकता तो उस (क़र्ज़ ख़्वाह) से भी इजाज़त ले। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1051)) ﴾4﴿ माले ह़लाल से उ़म्रह करूंगा ﴾5﴿ चलते वक़्त घर वालों, रिश्तेदारों और दोस्तों से क़ुसूर मुआ़फ़ करवाऊंगा, इन से दुआ़ करवाऊंगा। (दूसरों से दुआ़ करवाने से ब-र-कत ह़ासिल होती है, अपने ह़क़ में दूसरे की दुआ़ क़बूल होने की ज़ियादा उम्मीद होती है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 326 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ज़ाइले दुआ़" **सफ़ह़ा** 111 पर मन्क़ूल है, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ख़ित़ाब हुवा : ऐ मूसा ! मुझ से उस मुंह के साथ दुआ़ मांग जिस से तू ने गुनाह न किया। अ़र्ज़ की : इलाही ! वोह मुंह कहां से लाऊं ? (यहां अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तवाज़ोअ़ है वरना वोह यक़ीनन हर गुनाह से

मा'सूम हैं) फ़रमाया : औरों से दुआ़ करा कि उन के मुंह से तू ने गुनाह न किया । (مُلَخَّص از مثنوی مولانا روم دفتر سوم ص۳۱) ﴿6﴾ ह़ाजत से ज़ाइद तोशा (अख़्राजात) रख कर रु-फ़क़ा पर ख़र्च और फु-क़रा पर तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) कर के सवाब कमाऊंगा ﴿7﴾ ज़बान और आंख वग़ैरा की ह़िफ़ाज़त करूंगा । (नसीह़तों के म-दनी फूल **सफ़ह़ा** 29 और 30 पर है : (1) (ह़दीसे पाक है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है) **ऐ इब्ने आदम !** तेरा दीन उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं हो सकता जब तक तेरी ज़बान सीधी न हो और तेरी ज़बान तब तक सीधी नहीं हो सकती जब तक तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ह़या न करे । (2) जिस ने मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों से अपनी आंखों को झुका लिया (या'नी उन्हें देखने से बचा) मैं उसे जहन्नम से अमान (या'नी पनाह) अ़ता कर दूंगा) ﴿8﴾ दौराने सफ़र ज़िक्रो दुरूद से दिल बहलाऊंगा । (इस से फ़िरिश्ता साथ रहेगा ! गाने बाजे और लग़्विय्यात का सिल्सिला रखा तो शैत़ान साथ रहेगा) ﴿9﴾ अपने लिये और तमाम मुसल्मानों के लिये दुआ़ करता रहूंगा । (मुसाफ़िर की दुआ़ क़बूल होती है । नीज़ ''फ़ज़ाइले दुआ़'' **सफ़ह़ा** 220 पर है : मुसल्मान, कि मुसल्मान के लिये उस की **ग़ैबत** (या'नी ग़ैर मौजू-दगी) में (जो) दुआ़ मांगे (वोह क़बूल होती है) ह़दीस शरीफ़ में है : येह (या'नी ग़ैर मौजू-दगी वाली) दुआ़ निहायत जल्द क़बूल होती है । फ़िरिश्ते कहते हैं : उस के ह़क़ में तेरी दुआ़ क़बूल और तुझे भी इसी त़रह़ की ने'मत ह़सूल) ﴿10﴾ सब के साथ अच्छी गुफ़्त-गू करूंगा, और ह़स्बे ह़ैसिय्यत मुसल्मानों को खाना खिलाऊंगा ﴿11﴾ परेशानियां आएंगी तो **सब्र** करूंगा

﴾12﴿ अपने रु-फ़क़ा के साथ हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ा-हरा करते हुए उन के आराम वग़ैरा का ख़याल रखूंगा, गुस्से से बचूंगा, बेकार बातों में नहीं पड़ूंगा, लोगों की (ना ख़ुश गवार) बातें बरदाश्त करूंगा ﴾13﴿ तमाम ख़ुश अ़क़ीदा मुसल्मान अ़-रबों से (वोह चाहे कितनी ही सख़्ती करें, मैं) नरमी के साथ पेश आऊंगा। (बहारे शरीअ़त जिल्द 1 हिस्सा 6 **सफ़हा** 1060 पर है : बद्दूओं और सब अ़-रबिय्यों से बहुत नरमी के साथ पेश आए, अगर वोह सख़्ती करें (भी तो) अदब से **तहम्मुल** (या'नी बरदाश्त) करे इस पर **शफ़ाअ़त** नसीब होने का वा'दा फ़रमाया है। ख़ुसूसन अहले ह़-रमैन, ख़ुसूसन अहले मदीना। अहले अ़रब के अफ़्आ़ल पर ए'तिराज़ न करे, न दिल में कदूरत (या'नी मैल) लाए, इस में दोनों[2] जहां की सआ़दत है) ﴾14﴿ भीड़ के मौक़अ़ पर भी लोगों को अज़िय्यत न पहुंचे इस का ख़याल रखूंगा और अगर ख़ुद को किसी से तक्लीफ़ पहुंची तो **सब्र** करते हुए मुआ़फ़ करूंगा। (ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स अपने **गुस्से** को रोकेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस से अपना अ़ज़ाब रोक देगा। (شُعَبُ الْإیمان ج٦ ص٣١٥ حدیث ٨٣١١)) ﴾15﴿ मुसल्मानों पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए "नेकी की दा'वत" दे कर सवाब कमाऊंगा ﴾16﴿ सफ़र की सुन्नतों और आदाब का ह़त्तल इम्कान ख़याल रखूंगा ﴾17﴿ एह़राम में **लब्बैक** की ख़ूब कसरत करूंगा। (इस्लामी भाई बुलन्द आवाज़ से कहे और इस्लामी बहन पस्त आवाज़ से) ﴾18﴿ **मस्जिदैने करीमैन** (बल्कि हर जगह हर मस्जिद) में दाख़िल होते वक़्त पहले

सीधा पाउं अन्दर रखूंगा और मस्जिद में दाख़िले की दुआ पढ़ूंगा। इसी त़रह़ निकलते वक़्त उलटा पाउं पहले निकालूंगा और बाहर निकलने की दुआ पढ़ूंगा ﴾19﴿ जब जब किसी मस्जिद खुसूसन **मस्जिदैने करीमैन** में दाख़िला नसीब हुवा, नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत कर के सवाब कमाऊंगा। (याद रहे ! मस्जिद में खाना पीना, आबे ज़मज़म पीना, स-ह़री व इफ़्त़ार करना और सोना जाइज़ नहीं, ए'तिकाफ़ की निय्यत की होगी तो ज़िम्नन येह सब काम जाइज़ हो जाएंगे) ﴾20﴿ का'बए मुशर्रफ़ा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا पर **पहली नज़र** पड़ते ही दुरूदे पाक पढ़ कर दुआ मांगूंगा ﴾21﴿ दौराने त़वाफ़ "मुस्तजाब" पर (जहां सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते दुआ पर आमीन कहने के लिये मुक़र्रर हैं वहां) अपनी और सारी उम्मत की मग़फ़िरत के लिये दुआ करूंगा ﴾22﴿ जब जब आबे ज़मज़म पियूंगा, अदाए सुन्नत की निय्यत से क़िब्ला रू, खड़े हो कर, **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर, चूस चूस कर तीन[3] सांस में, पेट भर कर पियूंगा, फिर दुआ मांगूंगा कि वक़्ते क़बूल है। (फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : हम में और मुनाफ़िक़ों में येह फ़र्क़ है कि वोह ज़मज़म कूख (या'नी पेट) भर नहीं पीते। (ابن ماجه ج ۳ ص ٤٨٩ حديث ۳۰٦۱)) ﴾23﴿ **मुल्तज़म** से लिपटते वक़्त येह निय्यत कीजिये कि **महब्बत** व शौक़ के साथ का'बा और रब्बे का'बा عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल कर रहा हूं और उस के तअ़ल्लुक़ से ब-र-कत पा रहा हूं। (उस वक़्त येह उम्मीद रखिये कि बदन का हर वोह ह़िस्सा जो का'बए मुशर्रफ़ा से मस (TOUCH) हुवा है اِنْ شَآءَاللّٰه जहन्नम से आज़ाद होगा) ﴾24﴿ **ग़िलाफ़े का'बा** से चिमटते वक़्त येह निय्यत कीजिये कि

मग़्फ़िरत व आ़फ़िय्यत के सुवाल में इस्रार कर रहा हूं, जैसे कोई ख़त़ाकार उस शख़्स के कपड़ों से लिपट कर गिड़-गिड़ाता है जिस का वोह मुजरिम है और ख़ूब आ़जिज़ी करता है कि जब तक अपने जुर्म की मुआ़फ़ी और आयन्दा के अम्न व सलामती की ज़मानत नहीं मिलेगी दामन नहीं छोड़ूंगा। (**ग़िलाफ़े का'बा** वग़ैरा पर लोग काफ़ी ख़ुश्बू लगाते हैं लिहाज़ा एह़राम की ह़ालत में एह़तियात़ कीजिये)

﴾25﴿ रम्ये जमरात में **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुशा-बहत (या'नी मुवा-फ़क़त) और **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल, शैत़ान को रुस्वा कर के मार भगाने और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को रज्म (या'नी संगसार) करने की निय्यत कीजिये। (**ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی ने एक ह़ाजी से पूछा कि तूने **रम्य** के वक़्त नफ़्सानी ख़्वाहिशात को कंकरियां मारीं या नहीं ? उस ने जवाब दिया : नहीं। फ़रमाया : तो फिर तूने **रम्य** ही नहीं की। (या'नी रम्य का पूरा ह़क़ अदा नहीं किया) (مُلَخَّص از کشف المحجوب ص ۳۶۳))

﴾26﴿ त़वाफ़ व सअ़्य में लोगों को धक्के देने से बचता रहूंगा। (जान बूझ कर किसी को इस त़रह़ धक्के देना कि ईज़ा पहुंचे बन्दे की ह़क़ त-लफ़ी और गुनाह है, तौबा भी करनी होगी और जिस को ईज़ा पहुंचाई उस से मुआ़फ़ भी कराना होगा। बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है : एक दांग की (या'नी मा'मूली सी) मिक़्दार **अल्लाह तआ़ला** के किसी ना पसन्दीदा फ़े'ल को तर्क कर देना मुझे **पांच सो नफ़्ली ह़ज** करने से ज़ियादा पसन्दीदा है। (جامع العلوم والحکم لابن رجب ص ۱۲۵))

﴾27﴿ उ़-लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत की ज़ियारत व सोह़बत से

ब-र-कत ह़ासिल करूंगा, इन से अपने लिये बे ह़िसाब मग़्फ़िरत की दुआ़ करवाऊंगा ﴾28﴿ इ़बादात की कसरत करूंगा बिल ख़ुसूस नमाज़े पन्जगाना पाबन्दी से अदा करूंगा ﴾29﴿ गुनाहों से हमेशा के लिये तौबा करता हूं और सिर्फ़ अच्छी सोह़बत में रहा करूंगा ﴾30﴿ वापसी के बा'द गुनाहों के क़रीब भी न जाऊंगा, नेकियों में ख़ूब इज़ाफ़ा करूंगा और सुन्नतों पर मज़ीद अ़मल बढ़ाऊंगा ﴾31﴿ **मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह** زَادَھُمَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا के यादगार मुबारक मक़ामात की ज़ियारत करूंगा ﴾32﴿ सआ़दत समझते हुए ब निय्यते सवाब **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا की ज़ियारत करूंगा ﴾33﴿ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार की पहली ह़ाज़िरी से क़ब्ल ग़ुस्ल करूंगा, नया सफ़ेद लिबास, सर पर नया सरबन्द नई टोपी और उस पर नया इ़मामा शरीफ़ बांधूंगा, सुरमा और उ़म्दा ख़ुश्बू लगाऊंगा ﴾34﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ﴿۶۴﴾

(پ۵،النساء:۶۴) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब ! तुम्हारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान पाएं) पर अ़मल करते हुए मदीने के शहन्शाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िरी दूंगा ﴾35﴿ अगर बस में हुवा तो अपने मोह़सिन व ग़म गुसार आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में इस त़रह़ ह़ाज़िर होउंगा जिस त़रह़ एक भागा हुवा ग़ुलाम अपने आक़ा की बारगाह में लरज़ता कांपता, आंसू बहाता ह़ाज़िर होता है। (**ह़िकायत :** सय्यिदुना **इमामे मालिक** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡخَالِق जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करते रंग उन का बदल जाता और झुक जाते। **ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡخَالِق से किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब **सख़्तियानी** قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی के बारे में पूछा तो फ़रमाया : मैं जिन ह़ज़रात से रिवायत करता हूं वोह उन सब में अफ़्ज़ल हैं, मैं ने उन्हें दो[2] मर्तबा सफ़रे ह़ज में देखा कि जब उन के सामने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیۡہِ اَفۡضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسۡلِیۡم का ज़िक्रे अन्वर होता तो वोह इतना रोते कि मुझे उन पर रह़म आने लगता। मैं ने उन में जब ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा व इश्क़े ह़बीबे ख़ुदा का येह आ़लम देखा तो **मु-तअस्सिर** हो कर उन से अह़ादीसे मुबा-रका रिवायत करनी शुरूअ़ कीं। (الشفاء ج۲ ص ٤١، ٤٢)) ﴾36﴿ सरकारे नामदार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के शाही दरबार में अ-दबो एह़तिराम और ज़ौक़ो शौक़ के साथ दर्द भरी मो'तदिल (या'नी दरमियानी) आवाज़ में सलाम अ़र्ज़ करूंगा ﴾37﴿ हुक्मे क़ुरआनी :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲

(پ۲۶،الحجرات:۲) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो) पर अ़मल करते हुए अपनी आवाज़ को पस्त और क़दरे धीमी रखूंगा ﴿38﴾ اَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَارَسُوْلَ الله (या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप की शफ़ाअ़त का सुवाली हूं) की तकरार कर के शफ़ाअ़त की भीक मांगूंगा ﴿39﴾ शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की अ़-ज़मत वाली बारगाहों में भी सलाम अ़र्ज़ करूंगा ﴿40﴾ ह़ाज़िरी के वक़्त इधर उधर देखने और सुनहरी जालियों के अन्दर झांकने से बचूंगा ﴿41﴾ जिन लोगों ने सलाम पेश करने का कहा था उन का सलाम बारगाहे शाहे अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ करूंगा ﴿42﴾ सुनहरी जालियों की त़रफ़ पीठ नहीं करूंगा ﴿43﴾ **जन्नतुल बक़ीअ़** के मदफ़ूनीन की ख़िदमतों में सलाम अ़र्ज़ करूंगा ﴿44﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ और शु-हदाए उहुद के मज़ारात की ज़ियारत करूंगा, दुआ़ व ईसाले सवाब करूंगा, ज-बले उहुद का दीदार करूंगा ﴿45﴾ मस्जिदे क़ुबा शरीफ़ में ह़ाज़िरी दूंगा ﴿46﴾ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के दरो दीवार, बर्गो बार, गुलो ख़ार और पथ्थर व ग़ुबार और वहां की हर शै का ख़ूब अ-दबो एह़तिराम करूंगा । (**ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق ने ता'ज़ीमे ख़ाके

मदीना की ख़ातिर मदीनए तय्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में कभी भी क़ज़ाए हाजत नहीं की बल्कि हमेशा हरम से बाहर तशरीफ़ ले जाते थे, अलबत्ता हालते मरज़ में मजबूरी की वजह से मा'ज़ूर थे। (بستان المحدثين ص١٩) ﴿47﴾ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की किसी भी शै पर ऐब नहीं लगाऊंगा। (**हिकायत : मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में एक शख़्स हर वक़्त रोता और मुआफ़ी मांगता रहता था, जब इस का सबब पूछा गया तो बोला : मैं ने एक दिन **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की **दही शरीफ़** को खट्टा और ख़राब कह दिया, येह कहते ही मेरी निस्बत सल्ब हो गई और मुझ पर इताब हुवा (या'नी डांट पड़ी) कि "ओ दियारे महबूब की **दही** को ख़राब कहने वाले ! निगाहे **महब्बत** से देख ! महबूब की गली की हर हर शै उम्दा है।" (माख़ूज़ अज़ बहारे मस्नवी, स. 128)

हिकायत : हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق के सामने किसी ने येह कह दिया कि "मदीने की मिट्टी ख़राब है" येह सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيْه ने फ़तवा दिया कि इस गुस्ताख़ को तीस दुर्रे लगाए जाएं और क़ैद में डाल दिया जाए। (الشفاء ج٢ص٥٧))

﴿48﴾ अज़ीज़ों और इस्लामी भाइयों को तोहफ़ा देने के लिये आबे ज़मज़म, **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की खजूरें और सादा **तस्बीहें** वग़ैरा लाऊंगा। (बारगाहे आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيْه में **सुवाल** हुवा : तस्बीह किस चीज़ की होनी चाहिये ? आया लकड़ी की या पथ्थर वग़ैरा की ? **अल जवाब :** तस्बीह लकड़ी की हो या पथ्थर की मगर बेश क़ीमत (या'नी क़ीमती) होना मकरूह है और सोने

चांदी की ह़राम । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 597)) ﴾49﴿ जब तक **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में रहूंगा दुरूदो सलाम की कसरत करूंगा ﴾50﴿ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में क़ियाम के दौरान जब जब सब्ज़ गुम्बद की त़रफ़ गुज़र होगा, फ़ौरन उस त़रफ़ रुख़ कर के खड़े खड़े हाथ बांध कर सलाम अ़र्ज़ करूंगा । (**ह़िकायत : मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर एक साह़िब ने बताया : मुझे ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, फ़रमाया : अबू ह़ाज़िम से कह दो, "तुम मेरे पास से यूं ही गुज़र जाते हो, रुक कर सलाम भी नहीं करते !" इस के बा'द सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने अपना मा'मूल बना लिया कि जब भी रौज़ए अन्वर की त़रफ़ गुज़र होता, अ-दबो एह़तिराम के साथ खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करते, फिर आगे बढ़ते । **(المنامات مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج٣ص١٥٣حديث٣٢٣)**) ﴾51﴿ अगर जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न नसीब न हुवा, और **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا से रुख़्सत की जां सोज़ घड़ी आ गई तो बारगाहे रिसालत में अल वदाई़ ह़ाज़िरी दूंगा और गिड़गिड़ा कर बल्कि मुम्किन हुवा तो रो रो कर बार बार ह़ाज़िरी की इल्तिजा करूंगा ﴾52﴿ अगर बस में हुवा तो मां की मामता भरी गोद से जुदा होने वाले बच्चे की त़रह़ बिलक बिलक कर रोते हुए दरबारे रसूल को बार बार ह़सरत भरी निगाहों से देखते हुए रुख़्सत होउंगा ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

आप को अ़ज़्मे मदीना मुबारक हो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : "इ़ल्म का ह़ासिल करना हर मुसलमान पर **फ़र्ज़** है।" (اِبن ماجه ج١ ص١٤٦ حديث ٢٢٤) इस की शर्ह़ में येह भी है कि **ह़ज व उ़म्रह** अदा करने वाले पर फ़र्ज़ है कि **ह़ज व उ़म्रह** के ज़रूरी मसाइल जानता हो। उ़मूमन हुज्जाज व **मो'तमिरीन** त़वाफ़ व सअ्य वग़ैरा में पढ़ी जाने वाली **अ़-रबी दुआ़ओं** में ज़ियादा दिल चस्पी लेते हैं अगर्चे येह भी बहुत अच्छा है जब कि दुरुस्त पढ़ सकते हों, अगर कोई येह दुआ़एं न भी पढ़े तो गुनहगार नहीं मगर **ह़ज व उ़म्रह** के ज़रूरी मसाइल न जानना गुनाह है। **रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को बहुत सारे गुनाहों से बचा लेगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन** बरसों से लाखों की ता'दाद में छप रही है। इस में ज़ियादा तर **फ़तावा र-ज़विय्या** शरीफ़ और **बहारे शरीअ़त** जैसी मुस्तनद किताबों में मुन्दरज मसाइल आसान कर के लिखने की कोशिश की गई है, अब इस के अन्दर मज़ीद तरमीम व इज़ाफ़ा किया गया है और इस पर **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने नज़रे सानी की है और **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** ने अव्वल ता आख़िर एक एक मस्अला देख कर रहनुमाई फ़रमाई है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ूब अच्छी अच्छी निय्यतें कर के **रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन** की

तरकीब की गई है । **वल्लाह ! रफ़ीक़ुल मो 'तमिरीन** के ज़रीए मदीने के मुसाफ़िरों की रहनुमाई कर के सिर्फ़ व सिर्फ़ सवाबे आख़िरत का हुसूल मक़्सूद है, ज़ाती आमदनी का तसव्वुर नहीं । शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर हिम्मत हारे बिग़ैर ब निय्यते सवाब **रफ़ीक़ुल मो 'तमिरीन** अव्वल ता आख़िर पूरी पढ़ लीजिये ।

बयान कर्दा मसाइल पर ग़ौर कीजिये, कोई बात समझ में न आए तो उ़-लमाए अहले सुन्नत से पूछिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! "**रफ़ीक़ुल मो 'तमिरीन**" के अन्दर **ह़ज व उ़म्रे** के मसाइल के साथ साथ कसीर ता'दाद में **अ़-रबी दुआ़एं** भी मअ़ तरजमा शामिल हैं । अगर सफ़रे मदीना में **रफ़ीक़ुल मो 'तमिरीन** आप के साथ हुई तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **उ़म्रे** की किसी और किताब की कम ही ह़ाजत होगी । हां, जो इस से भी ज़ियादा मसाइल सीखना चाहे और सीखना भी चाहिये तो **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 6 का मुत़ा-लआ़ करे ।

म-दनी इल्तिजा : हो सके तो 12 अ़दद **रफ़ीक़ुल मो 'तमिरीन**, 12 अ़दद जेबी साइज़ के कोई से भी रसाइल और 12 अ़दद सुन्नतों भरे बयानात की V.C.Ds **मक-त-बतुल मदीना** से हदिय्यतन ह़ासिल कर के साथ ले लीजिये और हुसूले सवाब के लिये वहां तक़्सीम फ़रमा दीजिये नीज़ फ़राग़त के बा'द ब निय्यते सवाब अपनी **रफ़ीक़ुल मो 'तमिरीन** भी ह़-रमैने त़य्यिबैन ही में किसी **इस्लामी भाई** को पेश कर दीजिये ।

बारगाहे रिसालत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, **शैख़ैने करीमैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और सय्यिदुना ह़म्ज़ा, शु-हदाए उहुद, अहले बक़ीअ़ व मअ़्ला के मदफ़ूनीन की बारगाहों में मेरा सलाम अ़र्ज़ कीजियेगा। दौराने सफ़र बिल ख़ुसूस ह़-रमैने त़य्यिबैन में मुझ गुनहगार की बे ह़िसाब बख़्शिश और तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत की दुआ़ के लिये म-दनी इल्तिजा है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप का उ़म्रह व सफ़रे मदीना आसान करे और क़बूल फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

एक चुप सो100 सुख

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

29 र-जबुल मुरज्जब 1433 हि.

20-06-2012

हर सुब्ह़ येह निय्यत कर लीजिये

आज का दिन आंख, कान, ज़बान और हर उ़ज़्व को **गुनाहों** और फ़ुज़ूलियात से बचाते हुए, **नेकियों** में गुज़ारूंगा। اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami

गो ज़लीलो ख़्वार हूं कर दो करम

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہ येह कलाम 1414 सि.हि. की ह़ाज़िरी में 29 **ज़ुल हिज्जतिल ह़राम** को मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में बैठ कर क़लम बन्द किया)

गो ज़लीलो ख़्वार हूं कर दो करम पर सगे दरबार हूं कर दो करम

या रसूलल्लाह ! रह़मत की नज़र ह़ाज़िरे दरबार हूं कर दो करम

रह़मतों की भीक लेने के लिये ह़ाज़िरे दरबार हूं कर दो करम

दर्दे इ़स्यां की दवा के वासिते़ ह़ाज़िरे दरबार हूं कर दो करम

अपना ग़म दो चश्मे नम दो दर्दे दिल ह़ाज़िरे दरबार हूं कर दो करम

आह ! पल्ले कुछ नहीं ह़ुस्ने अ़मल ! मुफ़्लिसो नादार हूं कर दो करम

इ़ल्म है न जज़्बए ह़ुस्ने अ़मल ! नाक़िसो बेकार हूं कर दो करम

आ़सियों में कोई हम-पल्ला न हो ! हाए वोह बदकार हूं कर दो करम

है तरक़्क़ी पर गुनाहों का मरज़ आह ! वोह बीमार हूं कर दो करम

तुम गुनहगारों के हो आक़ा शफ़ीअ़ मैं भी तो ह़क़दार हूं कर दो करम

दौलते अख़्लाक़ से मह़रूम हूं हाए ! बद गुफ़्तार हूं कर दो करम

आंख दे कर मुद्दआ़ पूरा करो त़ालिबे दीदार हूं कर दो करम

दोस्त, दुश्मन हो गए या मुस्त़फ़ा बे-कसो लाचार हूं कर दो करम

कर के तौबा फिर गुनह करता है जो
मैं वोही अ़त्त़ार हूं कर दो करम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है, दस द-रजात बुलन्द फ़रमाता है। (نَسائی ج۱ص۲۲۲حدیث ۱۲۹٤)

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ र-मज़ान में उ़म्रह मेरे साथ ह़ज के बराबर है। (بخاری ج۱ص٦۱٤حدیث۱۸٦۳) ﴿2﴾ जो उ़म्रे के लिये निकला और मर गया उस के लिये क़ियामत तक उ़म्रह करने वाले का सवाब लिखा जाएगा। (ابو یعلی ج٥ص٤٤۱حدیث٦۳۲۷) ﴿3﴾ उ़म्रह से उ़म्रह तक उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जो दरमियान में हुए और ह़ज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है। (بخاری ۱ص٥٨٦حدیث۱۷۷۳)

उ़म्रह की तय्यारी कीजिये

एह़राम बांधने का त़रीक़ा : ह़ज हो या **उ़म्रह** एह़राम बांधने का त़रीक़ा दोनों का एक ही है। हां निय्यत और उस के अल्फ़ाज़ में थोड़ा सा फ़र्क़ है। निय्यत का बयान اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

आगे आ रहा है। पहले **एह़राम बांधने का त़रीक़ा** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ नाख़ुन तराशिये ﴾2﴿ बग़ल और नाफ़ के नीचे के बाल दूर कीजिये बल्कि पीछे के बाल भी साफ़ कर लीजिये ﴾3﴿ मिस्वाक कीजिये ﴾4﴿ वुज़ू कीजिये ﴾5﴿ ख़ूब अच्छी त़रह़ मल कर ग़ुस्ल कीजिये ﴾6﴿ जिस्म और एह़राम की चादरों पर ख़ुश्बू लगाइये कि येह सुन्नत है, कपड़ों पर ऐसी ख़ुश्बू (म-सलन ख़ुश्क अ़म्बर वग़ैरा) न लगाइये जिस का जिर्म (या'नी तह) जम जाए ﴾7﴿ इस्लामी भाई सिले हुए कपड़े उतार कर एक नई या धुली हुई सफ़ेद चादर ओढ़ें और ऐसी ही चादर का तहबन्द बांधें। (तहबन्द के लिये लठ्ठा और ओढ़ने के लिये तोलिया हो तो सहूलत रहती है, तहबन्द का कपड़ा मोटा लीजिये ताकि बदन की रंगत न चमके और तोलिया भी क़दरे बड़ी साइज़ का हो तो अच्छा) ﴾8﴿ पासपोर्ट या रक़म वग़ैरा रखने के लिये जेब वाला बेल्ट चाहें तो बांध सकते हैं। रेग्ज़ीन का बेल्ट अक्सर फट जाता है, आगे की त़रफ़ ज़िप (zip) वाला बटवा लगा हुवा नाईलोन (nylon) या चमड़े का बेल्ट काफ़ी मज़्बूत़ होता और बरसों काम दे सकता है।

इस्लामी बहनों का एह़राम : इस्लामी बहनें ह़स्बे मा'मूल सिले हुए कपड़े पहनें, दस्ताने और मोज़े भी पहन सकती हैं, वोह सर भी ढांपें मगर चेहरे पर चादर नहीं ओढ़ सकतीं, ग़ैर मर्दों से चेहरा छुपाने

के लिये हाथ का पंखा या कोई किताब वग़ैरा से ज़रूरतन आड़ कर लें। एह़राम में औ़रतों को किसी ऐसी चीज़ से मुंह छुपाना जो चेहरे से चिपटी हो ह़राम है।

एह़राम के नफ़्ल : अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो[2] रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल ब निय्यते एह़राम (मर्द भी सर ढांप कर) पढ़ें, बेहतर येह है कि पहली रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ के बा'द قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी रक्अ़त में قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ पढ़ें।

उ़म्रे की निय्यत : अब इस्लामी भाई सर नंगा कर दें और इस्लामी बहनें सर पर ब दस्तूर चादर ओढ़े रहें और उ़म्रे की इस त़रह़ निय्यत करें :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ فَیَسِّرْهَا لِیْ وَتَقَبَّلْهَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं उ़म्रे का इरादा करता हूं मेरे लिये इसे आसान और इसे मेरी त़रफ़

مِنِّیْ وَاَعِنِّیْ عَلَیْهَا وَبَارِكْ لِیْ فِیْهَا ؕ نَوَیْتُ

से क़बूल फ़रमा और इसे (अदा करने में) मेरी मदद फ़रमा और इसे मेरे लिये बा ब-र-कत फ़रमा। मैं

الْعُمْرَةَ وَاَحْرَمْتُ بِهَا لِلّٰهِ تَعَالٰی ؕ

ने उ़म्रे की निय्यत की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस का एह़राम बांधा।

लब्बैक : निय्यत के बा'द कम अज़् कम एक बार **लब्बैक** कहना लाज़िमी है और तीन[3] बार कहना अफ़्ज़ल है। **लब्बैक** येह है :

لَبَّیْکَ ؕ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ ؕ لَبَّیْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ ؕ

मैं ह़ाज़िर हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ह़ाज़िर हूं, (हां) मैं ह़ाज़िर हूं तेरा कोई शरीक नहीं मैं ह़ाज़िर हूं,

اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ ؕ لَاشَرِیْکَ لَکَ ؕ

बेशक तमाम ख़ूबियां और ने'मतें तेरे लिये हैं और तेरा ही मुल्क भी, तेरा कोई शरीक नहीं।

ऐ मदीने के मुसाफ़िरो ! आप का **एह़राम** शुरूअ़ हो गया, अब येह **लब्बैक** ही आप का वज़ीफ़ा और विर्द है, उठते बैठते, चलते फिरते इस का ख़ूब विर्द कीजिये।

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ﴾1﴿ जब **लब्बैक** कहने वाला **लब्बैक** कहता है तो उसे **ख़ुश ख़बरी** दी जाती है। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी जाती है ? इर्शाद फ़रमाया : "हां" (مُعْجَم اَوْسَط ج٥ ص٤١٠ حدیث ٧٧٧٩) ﴾2﴿ जब मुसल्मान "**लब्बैक**" कहता है तो उस के दाएं और बाएं ज़मीन के आख़िरी सिरे तक जो भी पथ्थर, दरख़्त और ढेला है वोह सब **लब्बैक** कहते हैं।

(تِرمِذی ج٢ ص٢٢٦ حدیث٨٢٩)

मा 'ना पर नज़र रखते हुए लब्बैक पढ़िये : इधर उधर देखते हुए बे दिली से पढ़ने के बजाए निहायत खुशूओ खुज़ूअ के साथ मा'ना पर नज़र रखते हुए **लब्बैक** पढ़ना मुनासिब है। एह़राम बांधने वाला **लब्बैक** कहते वक़्त अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुख़ातिब होता है और अ़र्ज़ करता है : "**लब्बैक**" या'नी मैं ह़ाज़िर हूं, अपने मां बाप को अगर कोई येही अल्फ़ाज़ कहे तो यक़ीनन तवज्जोह से कहेगा, फिर अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ो मा'रूज़ में कितनी तवज्जोह होनी चाहिये येह हर ज़ी शुऊ़र समझ सकता है। इसी बिना पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : एक फ़र्द **लब्बैक** के अल्फ़ाज़ पढ़ाए और दूसरे उस के पीछे पीछे पढ़ें येह **मुस्तह़ब** नहीं बल्कि हर फ़र्द ख़ुद **तल्बिया** पढ़े। **(اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط لِلقارى ص١٠٣)**

लब्बैक कहने के बा 'द की एक सुन्नत : लब्बैक से फ़ारिग़ होने के बा'द **दुआ़ मांगना सुन्नत है,** जैसा कि ह़दीसे मुबारक में है कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब **लब्बैक** से फ़ारिग़ होते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की खुशनूदी और जन्नत का सुवाल करते और जहन्नम से पनाह मांगते। **(مُسنَد إمام شافعى ص١٢٣)** यक़ीनन हमारे

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ खुश है, बिला शुबा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क़त्ई जन्नती बल्कि ब अ़त़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ मालिके जन्नत हैं मगर येह सब दुआ़एं दीगर बहुत सारी ह़िक्मतों के साथ साथ उम्मत की ता'लीम के लिये भी हैं कि हम भी सुन्नत समझ कर दुआ़ मांग लिया करें ।

"اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ" के नव हुरूफ़ की निस्बत से लब्बैक के 9 म-दनी फूल

﴾1﴿ उठते बैठते, चलते फिरते, वुज़ू बे वुज़ू हर ह़ाल में **लब्बैक** कहिये ﴾2﴿ खुसूसन चढ़ाई पर चढ़ते, ढलवान उतरते (सीढ़ियों पर चढ़ते उतरते), दो क़ाफ़िलों के मिलते, सुब्ह़ व शाम, पिछली रात, पांचों वक़्त की नमाज़ों के बा'द, ग़रज़ कि हर ह़ालत के बदलने पर **लब्बैक** कहिये ﴾3﴿ जब भी **लब्बैक** शुरूअ़ करें कम अज़ कम तीन[3] बार कहें ﴾4﴿ "**मो 'तमिर**" या'नी उ़म्रह करने वाला और "**मु-तमत्तेअ़**" भी उ़म्रह करते वक़्त जब का'बए मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ शुरूअ़ करे उस वक़्त **ह़-जरे अस्वद** का पहला इस्तिलाम करते ही "**लब्बैक**" कहना छोड़ दे ﴾5﴿ "**मुफ़्रिद**" और "**क़ारिन**" **लब्बैक** कहते हुए **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में ठहरें कि इन की **लब्बैक** और **मु-तमत्तेअ़** जब

ह़ज का एह़राम बांधे उस की **लब्बैक** 10 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** शरीफ़ को **जम्रतुल अ़-क़बा** (या'नी बड़े शैत़ान) को पहली कंकरी मारते वक़्त **ख़त्म** होगी ﴾6﴿ **इस्लामी भाई** ब आवाज़े बुलन्द **लब्बैक** कहा करें मगर आवाज़ इतनी भी बुलन्द न करें कि इस से ख़ुद को या किसी दूसरे को तक्लीफ़ हो ﴾7﴿ इस्लामी बहनें जब भी **लब्बैक** कहें धीमी आवाज़ से कहें और येह सभी याद रखें कि इ़लावा ह़ज व उ़म्रह के भी जब कभी जो कुछ पढ़ें तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी में इतनी आवाज़ लाज़िमी है कि अगर बहरा पन या शोरो ग़ुल न हो तो ख़ुद सुन सकें ﴾8﴿ **एह़राम के लिये** निय्यत शर्त़ है अगर बिग़ैर निय्यत **लब्बैक** कहा **एह़राम** न हुवा, इसी त़रह़ तन्हा निय्यत भी काफ़ी नहीं जब तक **लब्बैक** या इस के क़ाइम मक़ाम कोई और चीज़ न हो **(فتاوٰی عالمگیری ج۱ ص ۲۲۲)** ﴾9﴿ एह़राम के लिये एक बार ज़बान से **लब्बैक** कहना ज़रूरी है और अगर इस की जगह سُبْحٰنَ اللہ या اَلْحَمْدُ لِلّٰہ या لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ या कोई और **ज़िक्रुल्लाह** किया और एह़राम की निय्यत की तो एह़राम हो गया मगर सुन्नत **लब्बैक** कहना है। **(ایضاً)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

निय्यत के मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी हिदायत : याद रखिये ! निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं। ख़्वाह नमाज़, रोज़ा, एह़राम कुछ भी हो, अगर दिल में निय्यत मौजूद न हो तो सिर्फ़ ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ अदा कर लेने से निय्यत नहीं हो सकती और

निय्यत के अल्फ़ाज़ अ़-रबी ज़बान में कहना ज़रूरी नहीं, अपनी मा-दरी ज़बान में भी कह सकते हैं बल्कि ज़बान से कहना लाज़िमी नहीं, **सिर्फ़ दिल में इरादा भी काफ़ी है।** हां ज़बान से कह लेना अफ़्ज़ल है और अ़-रबी ज़बान में ज़ियादा बेहतर क्यूं कि येह हमारे मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी ज़बान है। अ़-रबी ज़बान में जब निय्यत के अल्फ़ाज़ कहें तो उस के मा'ना भी ज़रूर ज़ेह्न में होने चाहिएं।

एह़राम के मा'ना : एह़राम के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : ह़राम करना क्यूं कि एह़राम बांधने वाले पर बा'ज़ ह़लाल बातें भी ह़राम हो जाती हैं, एह़राम वाले इस्लामी भाई को **मोह़रिम** और इस्लामी बहन को **मोह़रिमा** कहते हैं।

एह़राम में येह बातें ह़राम हैं : ﴾1﴿ इस्लामी भाई को सिलाई किया हुवा कपड़ा पहनना ﴾2﴿ सर पर टोपी ओढ़ना, इमामा या रुमाल वग़ैरा बांधना ﴾3﴿ मर्द का सर पर कपड़े की गठड़ी उठाना (इस्लामी बहनें सर पर चादर ओढ़ें और इन्हें सर पर कपड़े की गठरी उठाना मन्अ़ नहीं) ﴾4﴿ मर्द का दस्ताने पहनना। (इस्लामी बहनों को मन्अ़ नहीं) ﴾5﴿ इस्लामी भाई ऐसे मोज़े या जूते नहीं पहन सकते जो वस्त़े क़दम (या'नी क़दम के बीच का उभार) छुपाएं, (हवाई चप्पल मुनासिब हैं) ﴾6﴿ जिस्म, लिबास या बालों में ख़ुश्बू लगाना ﴾7﴿ ख़ालिस ख़ुश्बू म-सलन इलायची, लोंग, दारचीनी,

ज़ा'फ़रान, जावत्तरी खाना या आंचल में बांधना, येह चीज़ें अगर किसी खाने या सालन वग़ैरा में डाल कर पकाई गई हों अब चाहे ख़ुश्बू भी दे रही हों तो भी खाने में ह़रज नहीं ﴾8﴿ जिमाअ़ करना या बोसा, मसास (या'नी छूना), गले लगाना, अन्दामे निहानी (औ़रत की शर्मगाह) पर निगाह डालना जब कि येह आख़िरी चारों[4] या'नी जिमाअ़ के इ़लावा काम ब शह्वत हों ﴾9﴿ फ़ोह़्श और हर क़िस्म का गुनाह हमेशा ह़राम था अब और भी सख़्त ह़राम हो गया ﴾10﴿ किसी से दुन्यवी लड़ाई झगड़ा ﴾11﴿ जंगल का शिकार करना या किसी त़रह़ भी इस पर मुआ़विन होना, इस का गोश्त या अन्डा वग़ैरा ख़रीदना, बेचना या खाना ﴾12﴿ अपना या दूसरे का नाख़ुन कतरना, या दूसरे से **अपने नाख़ुन कतरवाना** ﴾13﴿ **सर** या दाढ़ी के बाल काटना, बग़लें बनाना, मूए ज़ेरे नाफ़ लेना, बल्कि सर से पाउं तक कहीं से कोई बाल जुदा करना ﴾14﴿ **वस्मा** या मेंहदी का ख़िज़ाब लगाना ﴾15﴿ ज़ैतून का या तिल का तेल चाहे बे ख़ुश्बू हो, बालों या जिस्म पर लगाना ﴾16﴿ किसी का सर मूंडना ख़्वाह वोह एह़राम में हो या न हो। (हां एह़राम से बाहर होने का वक़्त आ गया तो अब अपना या दूसरे का सर मूंड सकता है) ﴾17﴿ **जूं** मारना, फेंकना, किसी को मारने के लिये इशारा करना, कपड़ा उस के मारने के लिये धोना या धूप में डालना, बालों में जूं मारने के लिये किसी क़िस्म की दवा वग़ैरा डालना, ग़-रज़े कि किसी त़रह़ उस के हलाक पर बाइ़स होना।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1078, 1079)

एह़राम में येह बातें मक्रूह हैं : ﴾1﴿ जिस्म का मैल छुड़ाना ﴾2﴿ बाल या जिस्म साबुन वग़ैरा से धोना ﴾3﴿ कंघी करना ﴾4﴿ इस त़रह़ खुजाना कि बाल टूटने या जूं गिरने का अन्देशा हो ﴾5﴿ कुरता या शेरवानी वग़ैरा पहनने की त़रह़ कन्धों पर डालना ﴾6﴿ जान बूझ कर ख़ुश्बू सूंघना ﴾7﴿ ख़ुश्बूदार फल या पत्ता म-सलन लीमूं, पोदीना, नारंगी वग़ैरा सूंघना (खाने में मुज़ा-यक़ा नहीं) ﴾8﴿ इत़्र फ़रोश की दुकान पर इस निय्यत से बैठना कि ख़ुश्बू आए ﴾9﴿ **महक्ती ख़ुश्बू** हाथ से छूना जब कि हाथ पर न लग जाए वरना ह़राम है ﴾10﴿ कोई ऐसी चीज़ खाना या पीना जिस में ख़ुश्बू पड़ी हो और न वोह पकाई गई हो न बू ज़ाइल (या'नी ख़त्म) हो गई हो ﴾11﴿ **ग़िलाफ़े का'बा** के अन्दर इस त़रह़ दाख़िल होना कि ग़िलाफ़ शरीफ़ सर या मुंह से लगे ﴾12﴿ नाक वग़ैरा मुंह का कोई भी ह़िस्सा कपड़े से छुपाना ﴾13﴿ बे सिला कपड़ा रफ़ू किया हुवा या पैवन्द लगा हुवा पहनना ﴾14﴿ **तक्ये** पर मुंह रख कर औंधा लैटना (एह़राम के इ़लावा भी औंधा सोना मन्अ़ है कि ह़दीसे पाक में इस त़रह़ सोने को जहन्नमियों का त़रीक़ा कहा गया है) ﴾15﴿ ता'वीज़ अगर्चे बे सिले कपड़े में लपेटा हुवा हो, उसे बांधना मक्रूह है। हां अगर बे सिले कपड़े में लपेटा हुवा ता'वीज़ बाज़ू वग़ैरा पर बांधा नहीं बल्कि गले में डाल लिया तो ह़रज नहीं ﴾16﴿ सर या मुंह पर पट्टी बांधना ﴾17﴿ बिला उ़ज़्र बदन पर पट्टी बांधना ﴾18﴿ बनाव सिंघार करना ﴾19﴿ चादर ओढ़ कर इस के सिरों में गिरह दे लेना जब कि सर खुला हो वरना ह़राम है ﴾20﴿ तहबन्द के दोनों[2] कनारों में गिरह देना

《21》 रक़्म वग़ैरा रखने की निय्यत से जेब वाला बेल्ट बांधने की इजाज़त है। अलबत्ता सिर्फ़ तहबन्द को कसने की निय्यत से **बेल्ट या रस्सी** वग़ैरा बांधना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1079, 1080)

येह बातें एहराम में जाइज़ हैं : 《1》 मिस्वाक करना 《2》 अंगूठी पहनना[1] 《3》 बे ख़ुश्बू सुरमा लगाना । लेकिन मोह़रिम के लिये बिला ज़रूरत इस का इस्ति'माल मक्रूहे तन्ज़ीही है। (ख़ुश्बूदार सुरमा एक या दो बार लगाया तो ''स-दक़ा'' है और तीन या इस से ज़ाइद में ''दम'') 《4》 बे मैल छुड़ाए ग़ुस्ल करना 《5》 कपड़े धोना। (मगर जूं मारने की ग़रज़ से ह़राम है) 《6》 सर या बदन

مدینہ

1 : अंगूठी के बारे में अ़र्ज़ है कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा अ-ज़मत में एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पीतल की अंगूठी पहने हुए थे। मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या बात है कि तुम से बुत की बू आती है ? उन्हों ने वोह (पीतल की) अंगूठी उतार कर फेंक दी फिर लोहे की अंगूठी पहन कर ह़ाज़िर हुए। फ़रमाया : क्या बात है कि तुम जहन्नमियों का ज़ेवर पहने हुए हो ? उन्हों ने उसे भी फेंक दिया फिर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कैसी अंगूठी बनवाऊं ? फ़रमाया : चांदी की बनाओ और एक मिस्क़ाल पूरा न करो। (ابو داؤد ج٤ ص١٢٢ حديث٤٢٢٣) या'नी साढ़े चार माशा से कम वज़्न की हो। इस्लामी भाई जब कभी अंगूठी पहनें तो सिर्फ़ चांदी की साढ़े चार माशा (या'नी 4 ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम वज़्न चांदी की एक ही अंगूठी पहनें एक से ज़ियादा न पहनें और उस एक अंगूठी में नगीना भी एक ही हो एक से ज़ियादा नगीने न हों और बिग़ैर नगीने के भी न पहनें। नगीने के वज़्न की कोई क़ैद नहीं। चांदी या किसी और धात का छल्ला (चाहे मदीनए मुनव्वरह ही का क्यूं न हो) या चांदी के बयान कर्दा वज़्न वग़ैरा के इ़लावा किसी भी धात (म-सलन सोना, तांबा, लोहा, पीतल, स्टील वग़ैरा) की अंगूठी नहीं पहन सकते। सोने चांदी या किसी भी धात की ज़न्जीर गले में पहनना गुनाह है। इस्लामी बहनें सोने चांदी की अंगूठियां और ज़न्जीरें वग़ैरा पहन सकती हैं, वज़्न और नगीनों की कोई क़ैद नहीं। (अंगूठी के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये, फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 के बाब ''नेकी की दा'वत'' (ह़िस्सए अव्वल) सफ़ह़ा 408 ता 412 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

इस त़रह़ आहिस्ता से खुजाना कि बाल न टूटें ﴾7﴿ छत्री लगाना या किसी चीज़ के साए में बैठना ﴾8﴿ चादर के आंचलों को तहबन्द में घुरसना ﴾9﴿ दाढ़ उखाड़ना ﴾10﴿ टूटे हुए नाख़ुन जुदा करना ﴾11﴿ फुन्सी तोड़ देना ﴾12﴿ आंख में जो बाल निकले, उसे जुदा करना ﴾13﴿ ख़तना करना ﴾14﴿ फ़स्द (बिग़ैर बाल मूंडे) **पछने** (ह़जामत) करवाना ﴾15﴿ चील, कव्वा, चूहा, छुपकली, गिरगट, सांप, बिच्छू, खटमल, मच्छर, पिस्सू, मख्खी वग़ैरा ख़बीस और मूज़ी जानवरों को मारना। (ह़रम में भी इन को मार सकते हैं) ﴾16﴿ सर या मुंह के इलावा किसी और जगह ज़ख़्म पर पट्टी बांधना[1] ﴾17﴿ सर या गाल के नीचे तक्या रखना ﴾18﴿ कान कपड़े से छुपाना ﴾19﴿ सर या नाक पर अपना या दूसरे का हाथ रखना (कपड़ा या रुमाल नहीं रख सकते) ﴾20﴿ ठोड़ी से नीचे दाढ़ी पर कपड़ा आना ﴾21﴿ सर पर सीनी (या'नी धात का बना हुवा ख़्वान) या ग़ल्ले की बोरी उठाना जाइज़ है मगर सर पर कपड़े की गठड़ी उठाना **ह़राम** है। हां "**मोह़रिमा**" दोनों उठा सकती है ﴾22﴿ जिस खाने में इलायची, दारचीनी, लोंग वग़ैरा पकाई गई हों अगर्चे उन की **ख़ुश्बू** भी आ रही हो (म-सलन क़ोरमा, बिरयानी, ज़र्दा वग़ैरा) उस का खाना या बे पकाए जिस खाने पीने में कोई **ख़ुश्बू** डाली हुई हो वोह बू नहीं देती, उस का खाना पीना ﴾23﴿ घी या चरबी या

مدینہ

1 : मजबूरी की सूरत में सर या मुंह पर पट्टी बांध सकते हैं मगर इस पर कफ़्फ़ारा देना होगा। (इस का मस्अला सफ़्ह़ा 172 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं)

कड़्वा तेल या बादाम या नारियल या कद्दू, काहू का तेल जिस में **ख़ुश्बू** न डाली हुई हो उस का बालों या जिस्म पर लगाना
《24》 ऐसा जूता पहनना जाइज़ है जो क़दम के वस्त़ के जोड़ या'नी क़दम के बीच की उभरी हुई हड्डी को न छुपाए। (लिहाज़ा **मोह़रिम** के लिये इसी में आसानी है कि वोह हवाई चप्पल पहने)
《25》 बे सिले हुए कपड़े में लपेट कर ता'वीज़ गले में डालना
《26》 पालतू जानवर म-सलन ऊंट, बकरी, मुर्ग़ी, गाय वग़ैरा को ज़ब्ह़ करना उस का गोश्त पकाना, खाना। उस के अन्डे तोड़ना, भूनना, खाना। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1081, 1082)

मर्द व औ़रत के एह़राम में फ़र्क़ : **एह़राम** के मज़्कूरए बाला मसाइल में मर्द व औ़रत दोनों[2] बराबर हैं ताहम चन्द बातें इस्लामी बहनों के लिये जाइज़ हैं। **आज** कल एह़राम के नाम पर सिले सिलाए "स्कार्फ़" बाज़ार में बिकते हैं, मा'लूमात की कमी की बिना पर इस्लामी बहनें उसी को एह़राम समझती हैं, ह़ालां कि ऐसा नहीं, ह़स्बे मा'मूल सिले हुए कपड़े पहनें। हां अगर मज़्कूरा स्कार्फ़ को शरअ़न ज़रूरी न समझें और वैसे ही पहनना चाहें तो मन्अ़ नहीं।
《1》 **सर** छुपाना, बल्कि एह़राम के इ़लावा भी नमाज़ में और ना मह़रम (जिन में ख़ालू, फूफा, बहनोई, मामूंज़ाद, चचाज़ाद, फूफीज़ाद, ख़ालाज़ाद और ख़ुसूसिय्यत के साथ देवर व जेठ भी शामिल हैं) के सामने फ़र्ज़ है। ना मह़रमों के सामने औ़रत का इस त़रह़ आ जाना कि सर खुला हुवा हो या इतना बारीक दुपट्टा ओढ़ा हुवा हो कि बालों की सियाही चमक्ती हो इ़लावा एह़राम

के भी **ह़राम** है और एह़राम में सख़्त ह़राम ﴾2﴿ **मोह़रिमा** जब सर छुपा सकती है तो कपड़े की गठड़ी सर पर उठाना ब द-र-जए औला **जाइज़** हुवा ﴾3﴿ सिला हुवा ता'वीज़ गले या बाज़ू में बांधना ﴾4﴿ ग़िलाफ़े **का'बए मुशर्रफ़ा** में यूं दाख़िल होना कि सर पर रहे मुंह पर न आए कि इसे भी मुंह पर कपड़ा डालना **ह़राम** है। (आज कल ग़िलाफ़े का'बा पर लोग ख़ूब ख़ुश्बू छिड़क्ते हैं लिहाज़ा एह़राम में एह़तियात़ करें) ﴾5﴿ दस्ताने, मोज़े और सिले कपड़े पहनना ﴾6﴿ एह़राम में मुंह छुपाना औ़रत को भी ह़राम है, ना मह़रम के आगे कोई पंखा (या गत्ता) वग़ैरा मुंह से बचा हुवा सामने रखे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1083) ﴾7﴿ इस्लामी बहन पी केप वाला निक़ाब भी पहन सकती है मगर येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि चेहरे से मस (TOUCH) न हो। इस में येह अन्देशा रहेगा कि तेज़ हवा चले और निक़ाब चेहरे से चिपक जाए या बे तवज्जोही में पसीना वग़ैरा उसी निक़ाब से पोंछने लगे, लिहाज़ा सख़्त एह़तियात़ रखनी होगी।

"ह़ज का एह़राम" के नव ह़ुरूफ़ की निस्बत से एह़राम की 9 मुफ़ीद एह़तियातें

﴾1﴿ एह़राम ख़रीदते वक़्त खोल कर देख लीजिये वरना रवानगी के मौक़अ़ पर पहनते वक़्त छोटा बड़ा निकला तो सख़्त आज़्माइश हो सकती है ﴾2﴿ रवानगी से चन्द रोज़ क़ब्ल घर ही में एह़राम बांधने की मश्क़ कर लीजिये ﴾3﴿ ऊपर की चादर तोलिये की और तहबन्द मोटे

लठ्ठे का रखिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ों में भी सहूलत रहेगी ﴾4﴿ एहराम और बेल्ट वग़ैरा बांध कर घर में कुछ चल फिर लीजिये ताकि मश्क़ हो जाए, वरना बांध कर एक दम से चलने फिरने में तहबन्द ख़ूब टाइट होने या खुल जाने वग़ैरा की सूरत में परेशानी हो सकती है ﴾5﴿ ख़ुसूसन लठ्ठे का एहराम उ़म्दा और मोटे कपड़े का लीजिये वरना पतला कपड़ा हुवा और पसीना आया तो तहबन्द चिपक जाने की सूरत में रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर हो सकती है। बा'ज़ अवक़ात तहबन्द का कपड़ा इतना बारीक होता है कि पसीना न हो तब भी रानों वग़ैरा की रंगत चमक्ती है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 496 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**नमाज़ के अह़काम**" **सफ़ह़ा** 194 पर है : अगर ऐसा बारीक कपड़ा पहना जिस से बदन का वोह ह़िस्सा जिस का नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ है नज़र आए या जिल्द का रंग ज़ाहिर हो नमाज़ न होगी। (فتاوی عالمگیری ج۱ ص۵۸) आज कल बारीक कपड़ों का रवाज बढ़ता जा रहा है। ऐसे बारीक कपड़े का पाजामा पहनना जिस से रान या सत्र का कोई ह़िस्सा चमक्ता हो इलावा नमाज़ के भी पहनना **ह़राम** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 480) ﴾6﴿ निय्यत से क़ब्ल एह़राम पर ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है, बेशक लगाइये मगर लगाने के बा'द इ़त्र की शीशी बेल्ट की जेब में मत डालिये। वरना निय्यत के बा'द जेब में हाथ डालने की सूरत में ख़ुश्बू लग सकती है। अगर हाथ में इतना इ़त्र लग गया कि देखने वाले कहें कि "ज़ियादा है" तो दम वाजिब होगा और कम कहें तो स-दक़ा। अगर इ़त्र की तरी वग़ैरा नहीं लगी

हाथ में सिर्फ़ महक आ गई तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं । बेग में भी रखना हो तो किसी शोंपर वग़ैरा में लपेट कर ख़ूब एह़तियात़ की जगह रखिये ﴾7﴿ ऊपर की चादर दुरुस्त करने में येह एह़तियात़ रखिये कि अपने या किसी दूसरे **मोह़रिम** के सर या चेहरे पर न पड़े । सगे मदीना عُفِیَ عَنۡہُ ने भीड़भाड़ में एह़राम दुरुस्त करने वालों की चादरों में दीगर मोह़रिमों के मुंडे हुए सर फंसते देखे हैं ﴾8﴿ कई **मोह़रिम** ह़ज़रात के **एह़राम का तहबन्द** नाफ़ के नीचे होता है और ऊपर की चादर पेट पर से अक्सर सरकती रहती और नाफ़ के नीचे का कुछ ह़िस्सा सब के सामने ज़ाहिर होता रहता है और वोह इस की परवाह नहीं करते, इसी त़रह़ चलते फिरते और उठते बैठते वक़्त बे एह़तियात़ी के बाइस बा'ज़ एह़राम वालों की रान वग़ैरा भी दूसरों पर ज़ाहिर हो जाती है । बराए मेहरबानी ! इस मस्अले को याद रखिये कि नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों समेत जिस्म का सारा ह़िस्सा सत्र है और इस में से थोड़ा सा ह़िस्सा भी बिला इजाज़ते शर-ई दूसरों के आगे खोलना **ह़राम** है । सत्र के येह मसाइल सिर्फ़ एह़राम के साथ मख़्सूस नहीं । **एह़राम** के इलावा भी दूसरों के आगे **अपना सत्र खोलना या दूसरों के खुले सत्र की त़रफ़ नज़र करना ह़राम है** ﴾9﴿ बा'ज़ों के एह़राम का तहबन्द नाफ़ के नीचे होता है और बे एह़तियात़ी की वजह से مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दूसरों की मौजू-दगी में **पेड़ू**[1] का कुछ ह़िस्सा खुला रहता है । **बहारे शरीअ़त** में है : नमाज़ में

1 : नाफ़ के नीचे से ले कर उ़ज़्वे मख़्सूस की जड़ तक बदन की गोलाई में जितना ह़िस्सा आता है से "पेड़ू" कहते हैं ।

चौथाई (1/4) की मिक़्दार (**पेड़ू**) खुला रहा तो नमाज़ न होगी और बा'ज़ बेबाक ऐसे हैं कि लोगों के सामने घुटने बल्कि रानें खोले रहते हैं येह (नमाज़ व एह़राम के इ़लावा) भी **ह़राम** है और इस की आ़दत है तो **फ़ासिक़** हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 481)

एह़राम के बारे में ज़रूरी तम्बीह : जो बातें **एह़राम** में ना जाइज़ हैं अगर वोह किसी मजबूरी के सबब या भूल कर हों तो गुनाह नहीं मगर उन पर जो जुर्माना मुक़र्रर है वोह बहर ह़ाल अदा करना होगा अब येह बातें चाहे बिग़ैर इरादा हों, भूल कर हों, सोते में हों या जब्रन कोई करवाए। (ऐज़न, स. 1083)

मैं एह़राम बांधूं करूं ह़ज्जो उ़म्रह
मिले लुत़्फ़े सअ़्ये सफ़ा और मर्वह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़रम की वज़ाह़त : आ़म बोलचाल में लोग "**मस्जिदे ह़राम**" को **ह़रम शरीफ़** कहते हैं, इस में कोई शक नहीं कि **मस्जिदे ह़राम शरीफ़ ह़-रमे मोह़तरम ही में दाख़िल है** मगर ह़रम शरीफ़ मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا समेत[1] उस के इर्द गिर्द मीलों तक फैला हुवा है और हर त़रफ़ इस की ह़दें बनी हुई हैं। म-सलन जद्दा शरीफ़ से आते हुए

1 : मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में आबादी बढ़ती जा रही है और कहीं कहीं ह़रम के बाहर तक फैल चुकी है म-सलन **तन्ईम** कि येह ह़रम से बाहर है मगर शायद शहरे मक्का में दाख़िल। واللہ ورسولہٗ اعلم۔

मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا से क़ब्ल 23 किलो मीटर पहले पोलीस चौकी आती है, यहां सड़क के ऊपर बोर्ड पर जली हुरूफ़ में لِلۡمُسۡلِمِیۡنَ فَقَط (या'नी सिर्फ़ मुसल्मानों के लिये) लिखा हुवा है। इसी सड़क पर जब मज़ीद आगे बढ़ते हैं तो **बीरे शमीस** या'नी हुदैबिया का मक़ाम है, इस सम्त पर "**ह़रम शरीफ़**" की ह़द यहां से शुरूअ़ हो जाती है। "एक **मुअर्रिख़** की जदीद पैमाइश के ह़िसाब से **ह़रम** के रक़्बे का दाएरा 127 किलो मीटर है जब कि कुल रक़्बा 550 मुरब्बअ़ किलो मीटर है।" (तारीख़े मक्कए मुकर्रमा, स. 15) (जंगलों की कांट छांट, पहाड़ों की तराश ख़राश और सुरंगों (TUNNELS) की तरकीबों वग़ैरा के ज़रीए बनाए जाने वाले नए रास्तों और सड़कों के सबब वहां फ़ासिले में कमी बेशी होती रहती है ह़रम की अस्ल हुदूद वोही हैं जिन का अह़ादीसे मुबा-रका में बयान हुवा है)

ठन्डी ठन्डी हवा ह़रम की है
बारिश अल्लाह के करम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 124)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا **की ह़ाज़िरी : ह़रम** जब क़रीब आए तो सर झुकाए, आंखें शर्मे गुनाह से नीची किये खुशूओ़ खुज़ूअ़ के साथ इस की ह़द में दाख़िल हों, ज़िक्रो दुरूद और **लब्बैक** की ख़ूब कसरत कीजिये और जूं

ही **रब्बुल आ़-लमीन** جَلَّ جَلَالُہٗ के मुक़द्दस शहर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا पर नज़र पड़े तो येह दुआ़ पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ لِّیْ قَرَارًا وَّارْزُقْنِیْ فِیْھَا رِزْقًا حَلَالًا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस में क़रार और रिज़्क़े ह़लाल अ़ता फ़रमा ।

मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا पहुंच कर ज़रूरतन मकान और ह़िफ़ाज़ते सामान वग़ैरा का इन्तिज़ाम कर के ''**लब्बैक**'' कहते हुए ''**बाबुस्सलाम**'' पर ह़ाज़िर हों और उस दरवाज़ए पाक को चूम कर पहले सीधा पाउं **मस्जिदुल ह़राम** में रख कर हमेशा की त़रह़ मस्जिद में दाख़िले की दुआ़ पढ़िये :

بِسْمِ اللّٰہِ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ط اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ط

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये अपनी **रह़मत** के दरवाज़े खोल दे ।

ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये : जब भी किसी मस्जिद में दाख़िल हों और ए'तिकाफ़ की निय्यत करें तो सवाब मिलता है, मस्जिदुल ह़राम में भी निय्यत कर लीजिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ यहां **एक नेकी लाख नेकी के बराबर है,** लिहाज़ा एक लाख ए'तिकाफ़ का सवाब पाएंगे जब तक मस्जिद के अन्दर रहेंगे

ए'तिकाफ़ का सवाब मिलेगा और ज़िम्नन खाना, ज़मज़म शरीफ़ पीना और सोना वग़ैरा भी जाइज़ हो जाएगा वरना मस्जिद में येह चीज़ें शरअ़न **ना जाइज़** हैं।

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَافِ **तरजमा :** मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

का'बए मुशर्रफ़ा पर पहली नज़र : जूं ही **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** पर पहली नज़र पड़े तीन बार لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ कहिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दुआ़ मांगिये कि **का'बतुल्लाह** शरीफ़ पर पहली नज़र जब पड़ती है उस वक़्त मांगी हुई दुआ़ ज़रूर क़बूल होती है। आप चाहें तो येह दुआ़ मांग लीजिये कि **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मैं जब भी कोई जाइज़ दुआ़ मांगा करूं और उस में बेहतरी हो तो वोह क़बूल हुवा करे।"** हज़रते अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی ने फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के ह़वाले से लिखा है : **का'बतुल्लाह** पर पहली नज़र पड़ते वक़्त जन्नत में बे ह़िसाब दाख़िले की दुआ़ मांगी जाए और दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए।

(رَدُّالْمُحتار ج٣ص ٥٧٥)

नूरी चादर तनी है का'बे पर
बारिश अल्लाह के करम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 124)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब से अफ़्ज़ल दुआ : अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की रिज़ा के तलब गार **मोह़तरम आशिक़ाने रसूल !** अगर त़वाफ़ व सअ्य वग़ैरा में हर जगह किसी और दुआ के बजाए दुरूद शरीफ़ ही पढ़ते रहें तो येह सब से अफ़्ज़ल है और اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दुरूदो सलाम की ब-र-कत से बिगड़े काम संवर जाएंगे, वोह इख़्तियार करो जो **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सच्चे वा'दे से तमाम दुआओं से बेहतर व अफ़्ज़ल है या'नी यहां और तमाम मवाक़ेअ़ में अपने लिये दुआ के बदले अपने ह़बीब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजो, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ऐसा करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे सब काम बना देगा और तेरे गुनाह **मुआफ़** फ़रमा देगा ।

(ترمذی ج ٤ ص ٢٠٧ حدیث ٢٤٦٥, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 740)

त़वाफ़ में दुआ के लिये रुकना मन्अ़ है : मोह़तरम ज़ाइरो ! चाहें तो सिर्फ़ दुरूदो सलाम पर ही इक्तिफ़ा कीजिये कि येह आसान भी है और अफ़्ज़ल भी । ताहम शाइक़ीने दुआ के लिये दुआएं भी दाख़िले तरकीब कर दी हैं लेकिन याद रहे कि दुरूदो सलाम पढ़ें या दुआएं सब आहिस्ता आवाज़ में पढ़ना है, चिल्ला कर नहीं जैसा कि बा'ज़ मुत़व्विफ़ (या'नी त़वाफ़ करने वाले) पढ़ाते हैं नीज़ चलते चलते पढ़ना है, पढ़ने के लिये दौराने त़वाफ़ कहीं भी रुकना नहीं है ।

उ़म्रे का त़रीक़ा

त़वाफ़ का त़रीक़ा : त़वाफ़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल मर्द **इज़्ति़बाअ़** कर लें या'नी चादर सीधे हाथ की बग़ल के नीचे से निकाल कर उस के दोनों पल्ले उलटे कन्धे पर इस त़रह़ डाल लें कि सीधा कन्धा खुला रहे । अब परवाना वार **शम्ए़ का'बा** के गिर्द त़वाफ़ के लिये तय्यार हो जाइये ।

इज़्तिबाई ह़ालत में का'बा शरीफ़ की त़रफ़ मुंह किये **ह़-जरे अस्वद** की बाईं (left) त़रफ़ रुक्ने यमानी की जानिब **ह़-जरे अस्वद** के क़रीब इस त़रह़ खड़े हो जाइये कि पूरा ''**ह़-जरे अस्वद**'' आप के सीधे हाथ की त़रफ़ रहे । अब बिग़ैर हाथ उठाए इस त़रह़ **त़वाफ़ की निय्यत**[1] कीजिये :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اُرِیۡدُ طَوَافَ بَیۡتِکَ الۡحَرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे **मोह़तरम घर** का त़वाफ़ करने का इरादा करता हूं,

---

1 : नमाज़, रोज़ा, ए'तिकाफ़, त़वाफ़ वग़ैरा हर जगह येह मस्अला ज़ेह्न में रखिये कि अ़-रबी ज़बान में निय्यत उसी वक़्त कारआमद होती है जब कि उस के मा'ना मा'लूम हों वरना निय्यत उर्दू में बल्कि अपनी मा-दरी ज़बान में भी हो सकती है और हर सूरत में **दिल में निय्यत होना शर्त़ है,** ज़बान से न भी कहें तब भी चल जाएगा कि दिल ही में निय्यत होना काफ़ी है हां ज़बान से कह लेना **अफ़्ज़ल** है ।

فَیَسِّرْهُ لِیْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ ط

तू इसे मेरे लिये आसान फ़रमा दे और मेरी जानिब से इसे क़बूल फ़रमा।

निय्यत कर लेने के बा'द **का'बा शरीफ़** ही की त़रफ़ मुंह किये सीधे हाथ की जानिब इतना चलिये कि ह़-जरे अस्वद आप के ऐ़न सामने हो जाए। (और येह मा'मूली सा सरक्ने से हो जाएगा, आप ह़-जरे अस्वद की ऐ़न सीध में आ चुके इस की अ़लामत येह है कि दूर सुतून में जो सब्ज़ लाइट लगी है वोह आप की पीठ के बिल्कुल पीछे हो जाएगी)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! **येह जन्नत का वोह ख़ुश नसीब पथ्थर** है जिसे हमारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने यक़ीनन चूमा है। अब दोनों हाथ कानों तक इस त़रह़ उठाइये कि हथेलियां ह़-जरे अस्वद की त़रफ़ रहें और पढ़िये :

بِسْمِ اللہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَاللہُ اَکْبَرُ وَالصَّلٰوۃُ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से और तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है

وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللہِ ط

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम हों।

अब अगर मुम्किन हो तो **ह़-जरे अस्वद** शरीफ़ पर दोनों हथेलियां और उन के बीच में मुंह रख कर यूं बोसा दीजिये कि आवाज़ पैदा न हो, तीन3 बार ऐसा ही कीजिये। سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! झूम

जाइये कि आप के लब उस मुबारक जगह लग रहे हैं जहां यक़ीनन मदीने वाले आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के **लबहाए मुबा-रका** लगे हैं। मचल जाइये...... तड़प उठिये...... और हो सके तो आंसूओं को बहने दीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि हमारे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **ह़-जरे अस्वद** पर लबहाए मुबा-रका रख कर रोते रहे फिर **इल्तिफ़ात** फ़रमाया (या'नी तवज्जोह फ़रमाई) तो क्या देखते हैं कि ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी रो रहे हैं। इर्शाद फ़रमाया : ऐ उ़मर (رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ) ! येह रोने और आंसू बहाने का ही मक़ाम है। **(اِبن ماجه ج۳ ص۴۳۴ حديث۲۹۴۵)**

रोने वाली आंखें मांगो रोना सब का काम नहीं
ज़िक्रे मह़ब्बत आ़म है लेकिन सोज़े मह़ब्बत आ़म नहीं

इस बात का ख़याल रखिये कि लोगों को आप के धक्के न लगें कि येह कुव्वत के मुज़ा-हरे की नहीं, आ़जिज़ी और मिस्कीनी के इज़्हार की जगह है। हुजूम के सबब अगर बोसा मुयस्सर न आ सके तो न औरों को ईज़ा दें न ख़ुद दबें कुचलें बल्कि हाथ या लकड़ी से ह़-जरे अस्वद को छू कर उसे चूम लीजिये, येह भी न बन पड़े तो हाथों का इशारा कर के अपने हाथों को चूम लीजिये, येही क्या कम है कि मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक मुंह रखने की जगह पर आप की निगाहें पड़ रही हैं।

ह़-जरे अस्वद को बोसा देने या लकड़ी या हाथ से छू

कर चूमने या हाथों का इशारा कर के उन्हें चूम लेने को "**इस्तिलाम**" कहते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : रोज़े क़ियामत येह पथ्थर उठाया जाएगा, इस की आंखें होंगी जिन से देखेगा, ज़बान होगी जिस से कलाम करेगा, जिस ने ह़क़ के साथ उस का इस्तिलाम किया उस के लिये गवाही देगा। (ترمذی ج۲ص۲۸٦حدیث۹٦۳)

अब اَللّٰھُمَّ اِیۡمَانًا بِکَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّۃِ نَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّمۡ **तरजमा :** इलाही तुझ पर ईमान ला कर और तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत की पैरवी करने को येह त़वाफ़ करता हूं। कहते हुए **का'बा शरीफ़** की त़रफ़ ही चेहरा किये सीधे हाथ की त़रफ़ थोड़ा सा सरक्ये जब **ह़–जरे अस्वद** आप के चेहरे के सामने न रहे (और येह अदना सी ह़–र–कत में हो जाएगा) तो फ़ौरन इस त़रह़ सीधे हो जाइये कि **ख़ानए का'बा** आप के उलटे हाथ की त़रफ़ रहे, इस त़रह़ चलिये कि किसी को आप का धक्का न लगे। मर्द इब्तिदाई तीन फेरों में **रमल** करते चलें या'नी जल्द जल्द छोटे क़दम रखते, शाने (या'नी कन्धे) हिलाते चलें जैसे क़वी व बहादुर लोग चलते हैं। बा'ज़ लोग कूदते और दौड़ते हुए जाते हैं, येह **सुन्नत** नहीं है। जहां जहां भीड़ ज़ियादा हो और रमल में ख़ुद को या दूसरों को तक्लीफ़ होती हो उतनी देर रमल तर्क कर दीजिये मगर **रमल** की ख़ात़िर रुकिये

नहीं, त़वाफ़ में मश्ग़ूल रहिये। फिर जूं ही मौक़अ़ मिले, उतनी देर तक के लिये **रमल** के साथ त़वाफ़ कीजिये।

त़वाफ़ में जिस क़दर **ख़ानए का'बा** से क़रीब रहें येह बेहतर है मगर इतने ज़ियादा क़रीब भी न हो जाएं कि कपड़ा या जिस्म पुश्तए दीवार[1] से लगे और अगर नज़्दीकी में हुजूम के सबब **रमल** न हो सके तो अब दूरी बेहतर है। इस्लामी बहनों के लिये त़वाफ़ में ख़ानए का'बा से दूरी अफ़्ज़ल है। पहले चक्कर में चलते चलते दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

पहले चक्कर की दुआ़

سُبۡحٰنَ اللّٰہِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ

अल्लाह तआ़ला पाक है और सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

اَكۡبَرُ ؕ وَلَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الۡعَلِیِّ

सब से बड़ा है और गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द

الۡعَظِيۡمِ ؕ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوۡلِ اللّٰہِ

और अ़-ज़मत वाला है और रह़मते कामिला और सलाम नाज़िल हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल

مدینہ

1 : मिट्टी (या सिमेन्ट) का ढेर जो मकान की बाहरी दीवार की मज़्बूती के लिये उस की जड़ में लगाते हैं उसे "पुश्तए दीवार" कहते हैं।

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ط اَللّٰھُمَّ

! عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** ऐ । पर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

اِیۡمَانًا بِکَ وَتَصۡدِیۡقًا بِکِتَابِکَ وَوَفَآءً

तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरी किताब की तस्दीक़ करते हुए और तुझ से किये हुए अ़ह्द

بِعَھۡدِکَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّۃِ نَبِیِّکَ وَحَبِیۡبِکَ

को पूरा करते हुए और तेरे नबी और तेरे ह़बीब मुह़म्मद صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की

مُحَمَّدٍ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ط اَللّٰھُمَّ

सुन्नत की पैरवी करते हुए (मैं त़वाफ़ शुरूअ़ कर चुका हूं) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُکَ الۡعَفۡوَ وَالۡعَافِیَۃَ وَالۡمُعَافَاۃَ الدَّآئِمَۃَ

मैं तुझ से (गुनाहों से) मुआ़फ़ी का और (बलाओं से) आ़फ़िय्यत का और दाइमी ह़िफ़ाज़त का,

فِی الدِّیۡنِ وَالدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَۃِ وَالۡفَوۡزَ

दीनो दुन्या और आख़िरत में और ह़ुसूले जन्नत में काम्याबी

بِالۡجَنَّۃِ وَالنَّجَاۃَ مِنَ النَّارِ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

और जहन्नम से नजात पाने का सुवाल करता हूं।

रुक्ने यमानी पहुंचने तक येह दुआ़ पूरी कर लीजिये, अब अगर भीड़ की वजह से अपनी या दूसरों की ईज़ा का अन्देशा

न हो तो रुक्ने यमानी को दोनों हाथों से या सीधे हाथ से तबर्रुकन छूएं, सिर्फ़ बाएं (उलटे) हाथ से न छूएं। मौक़अ़ मिले तो **रुक्ने यमानी** को बोसा भी दीजिये, अगर चूमने या छूने का मौक़अ़ न मिले तो यहां हाथों से इशारा कर के चूमना नहीं। (**रुक्ने यमानी** पर आज कल लोग काफ़ी ख़ुश्बू लगा देते हैं लिहाज़ा एह़राम वाले छूने और चूमने में एह़तियात़ फ़रमाएं)

अब आप का'बए मुशर्रफ़ा के तीन[3] कोनों का त़वाफ़ पूरा कर के चौथे कोने **रुक्ने अस्वद** की त़रफ़ बढ़ रहे हैं, **रुक्ने यमानी** और रुक्ने अस्वद की दरमियानी दीवार को "**मुस्तजाब**" कहते हैं, **यहां दुआ़ पर आमीन कहने के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं।** आप जो चाहें अपनी ज़बान में अपने लिये और तमाम मुसल्मानों के लिये दुआ़ मांगिये या सब की निय्यत से और मुझ गुनहगार **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ की भी निय्यत शामिल कर के एक मर्तबा **दुरूद शरीफ़** पढ़ लीजिये, नीज़ येह क़ुरआनी दुआ़ भी पढ़ लीजिये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

ऐ लीजिये ! आप **ह़-जरे अस्वद** के क़रीब आ पहुंचे, यहां आप का एक चक्कर पूरा हुवा। लोग यहां एक दूसरे की देखा देखी दूर ही दूर से हाथ लहराते हुए गुज़र रहे होते हैं ऐसा

करना हरगिज़ सुन्नत नहीं, आप ह़स्बे साबिक़ या'नी पहले की त़रह़ रू ब क़िब्ला **ह़-जरे अस्वद** की त़रफ़ मुंह कर लीजिये। अब निय्यत करने की ज़रूरत नहीं कि वोह तो इब्तिदाअन हो चुकी, अब **दूसरा[2] चक्कर** शुरूअ़ करने के लिये पहले ही की त़रह़ दोनों[2] हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ط

पढ़ कर इस्तिलाम कीजिये। या'नी मौक़अ़ हो तो ह़-जरे अस्वद को बोसा दीजिये वरना उसी त़रह़ हाथ से इशारा कर के उसे चूम लीजिये पहले ही की त़रह़ का'बा शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के थोड़ा सा सीधे हाथ की जानिब सरक्ये। जब ह़-जरे अस्वद सामने न रहे तो फ़ौरन उसी त़रह़ **का'बए मुशर्रफ़ा** को बाएं (left) हाथ की त़रफ़ लिये त़वाफ़ में मश्ग़ूल हो जाइये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

दूसरे चक्कर की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا الْبَيْتَ بَيْتُكَ وَالْحَرَمَ حَرَمُكَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक येह घर तेरा घर है और येह ह़रम तेरा ह़रम है

وَالْاَمْنَ اَمْنُكَ وَالْعَبْدَ عَبْدُكَ وَاَنَا عَبْدُكَ

और (यहां का) अम्नो अमान तेरा ही दिया हुवा है और हर बन्दा तेरा ही बन्दा है और मैं भी तेरा ही बन्दा हूं

وَابْنُ عَبْدِكَ وَهٰذَا مَقَامُ الْعَآئِذِ بِكَ مِنَ

और तेरे ही बन्दे का बेटा हूं और येह मक़ाम जहन्नम से तेरी पनाह मांगने वाले का है,

النَّارِ ط فَحَرِّمْ لُحُوْمَنَا وَبَشَرَتَنَا عَلَى النَّارِ ط

तो हमारे गोश्त और जिस्म को दोज़ख़ पर ह़राम फ़रमा दे,

اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيْنَا الْاِيْمَانَ وَزَيِّنْهُ فِيْ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे लिये ईमान को मह़बूब बना दे

قُلُوْبِنَا وَكَرِّهْ اِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ

और हमारे दिलों में इस की चाह पैदा कर दे और हमारे लिये कुफ़्र और बदकारी

وَالْعِصْيَانَ وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ

और ना फ़रमानी को ना पसन्द बना दे और हमें हिदायत पाने वालों में शामिल कर ले, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

قِنِیْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ ط اَللّٰهُمَّ

जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा ज़िन्दा कर के उठाए मुझे अपने अ़ज़ाब से बचा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اُرْزُقْنِی الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

मुझे बे ह़िसाब जन्नत अ़त़ा फ़रमा ।

रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले पहले येह दुआ़ ख़त्म कर दीजिये। अब मौक़अ़ मिले तो पहले की त़रह़ बोसा ले कर या फिर उसी त़रह़ छू कर "**ह़-जरे अस्वद**" की त़रफ़ बढ़िये, दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ए क़ुरआनी पढ़िये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

ऐ लीजिये ! आप फिर ह़-जरे अस्वद के क़रीब आ पहुंचे। अब आप का "दूसरा चक्कर" भी पूरा हो गया, फिर ह़स्बे साबिक़ दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَکْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ ط

पढ़ कर ह़-जरे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और पहले ही की त़रह़ **तीसरा चक्कर** शुरूअ़ कीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

तीसरे चक्कर की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الشَّکِّ وَالشِّرْکِ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं शक और शिर्क

وَالنِّفَاقِ وَالشِّقَاقِ وَسُوْٓءِ الْاَخْلَاقِ وَسُوْٓءِ

और निफ़ाक़ और ह़क़ की मुख़ा–लफ़त से और बुरे अख़्लाक़ और बुरे

الْمُنْظَرِ وَالْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَھْلِ وَالْوَلَدِ ط

ह़ाल से और अहलो इ़याल और माल में बुरे अन्जाम से तेरी पनाह चाहता हूं।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُکَ رِضَاکَ وَالْجَنَّۃَ وَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी रिज़ा और जन्नत मांगता हूं और

اَعُوْذُبِکَ مِنْ سَخَطِکَ وَالنَّارِ ط اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ

तेरे ग़ज़ब और जहन्नम से पनाह चाहता हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَۃِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ

मैं क़ब्र की आज़्माइश और ज़िन्दगी और

فِتْنَۃِ الْمَحْیَا وَالْمَمَاتِ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

मौत के फ़ितने से तेरी पनाह मांगता हूं।

रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले येह दुआ़ ख़त्म कर दीजिये और पहले की त़रह़ अ़मल करते हुए **ह़-जरे अस्वद** की त़रफ़ बढ़ते हुए दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ए क़ुरआनी पढ़िये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

ऐ लीजिये ! आप फिर ह़-जरे अस्वद के क़रीब आ पहुंचे, आप का "तीसरा चक्कर" भी मुकम्मल हो गया, फिर पहले की त़रह़ दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ط

पढ़ कर ह़-जरे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और पहले ही की त़रह़ **चौथा[4] चक्कर** शुरूअ़ कीजिये, अब रमल न कीजिये कि रमल सिर्फ़ तीन[3] इब्तिदाई फेरों में करना था। अब आप को ह़स्बे मा'मूल दरमियाना चाल के साथ बक़िय्या फेरे मुकम्मल करने हैं। दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

चौथे चक्कर की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا عُمْرَةً مَّبْرُوْرَةً وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे उ़म्रे को मबरूर और मेरी कोशिश को काम्याब

وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا وَّعَمَلًا صَالِحًا مَّقْبُوْلًا وَّ

और गुनाहों की मग़्फ़िरत का ज़रीआ़ और मक़्बूल नेक अ़मल और

تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ؕ يَا عَالِمَ مَا فِي الصُّدُوْرِ

बे नुक़्सान तिजारत बना दे । ऐ सीनों के ह़ाल जानने वाले !

اَخْرِجْنِيْ يَا اَللّٰهُ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे (गुनाह की) तारीकियों से (अ़-मले सालेह़ की) रोशनी की त़रफ़ निकाल दे ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी रह़मत (के ह़ासिल होने) के ज़रीओं

وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ

और तेरी मग़्फ़िरत के अस्बाब का और तमाम

اِثْمٍ وَّالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالْفَوْزَ

गुनाहों से बचते रहने और हर नेकी की तौफ़ीक़ का और

بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ ؕ اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِيْ

जन्नत में जाने और **जहन्नम** से नजात पाने का सुवाल करता हूं। और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने दिये

بِمَا رَزَقْتَنِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْهِ وَاخْلُفْ عَلٰى

हुए रिज़्क़ में क़नाअ़त अ़त़ा फ़रमा और इस में मेरे लिये ब-र-कत भी दे और

كُلِّ غَائِبَةٍ لِّيْ بِخَيْرٍ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

हर नुक़्सान का अपने करम से मुझे ने'मल बदल अ़ता फ़रमा।

रुक्ने यमानी तक येह दुआ़ ख़त्म कर के फिर पहले की त़रह़ अ़मल करते हुए **ह़-जरे अस्वद** की त़रफ़ बढ़िये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह क़ुरआनी दुआ़ पढ़िये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

ऐ लीजिये ! आप फिर **ह़-जरे अस्वद** पर आ पहुंचे। ह़स्बे साबिक़ दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ط

पढ़ कर **इस्तिलाम** कीजिये और **पांचवां चक्कर** शुरूअ़ कीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

पांचवें चक्कर की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِىْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे उस दिन अपने अ़र्श के साए में जगह दे जिस दिन

ظِلَّ اِلَّاظِلُّ عَرْشِكَ وَلَابَاقِيَ اِلَّا وَجْهُكَ

तेरे अ़र्श के साए के सिवा कोई साया न होगा और तेरी ज़ाते पाक के सिवा कोई बाक़ी न रहेगा

وَاسْقِنِيْ مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

और मुझे अपने नबी **मुहम्मद** **मुस्तफ़ा**

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ شَرْبَةً

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ौज़ (कौसर) से

هَنِيْئَةً مَّرِيْئَةً لَّانَظْمَأُ بَعْدَهَا اَبَدًا ؕ اَللّٰهُمَّ

ऐसा खुश गवार और खुश ज़ाएक़ा घूंट पिला कि इस के बा'द कभी मुझे प्यास न लगे, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَاسَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ

मैं तुझ से उन चीज़ों की भलाई मांगता हूं जिन्हें तेरे नबी

سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ

सय्यिदुना **मुहम्मद** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुझ से त़लब किया

وَسَلَّمَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ

और उन चीज़ों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं जिन से

مِنْهُ نَبِيُّكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ

तेरे नबी सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पनाह मांगी।

وَسَلَّمَ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعِيْمَهَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से जन्नत और इस की ने'मतों का

وَمَا يُقَرِّبُنِيْٓ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ اَوْ عَمَلٍ ط

और हर उस क़ौल या फ़े'ल या अ़मल (की तौफ़ीक़) का सुवाल करता हूं जो मुझे जन्नत से क़रीब कर दे

وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا يُقَرِّبُنِيْٓ اِلَيْهَا مِنْ

और मैं दोज़ख़ और हर उस क़ौल या फ़े'ल या अ़मल से तेरी पनाह चाहता हूं जो मुझे जहन्नम से क़रीब

قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ اَوْ عَمَلٍ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

कर दे

रुक्ने यमानी तक येह दुआ़ ख़त्म कर के पहले की त़रह़ ह़-जरे अस्वद की त़रफ़ बढ़िये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह क़ुरआनी दुआ़ पढ़िये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

फिर **ह़-जरे अस्वद** पर आ कर दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰه ﷺ

पढ़ कर इस्तिलाम कीजिये और अब **छटा चक्कर** शुरूअ़ कीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

छटे चक्कर की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنَّ لَكَ عَلَيَّ حُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक मुझ पर तेरे बहुत से हुक़ूक़ हैं उन मुआ़–मलात में

بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ وَحُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا بَيْنِيْ

जो मेरे और तेरे दरमियान हैं और बहुत से हुक़ूक़ हैं उन मुआ़–मलात में जो मेरे और तेरी

وَبَيْنَ خَلْقِكَ اَللّٰهُمَّ مَا كَانَ لَكَ مِنْهَا

मख़्लूक़ के दरमियान हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन में से जिन का तअ़ल्लुक़ तुझ से हो उन की (कोताही की)

فَاغْفِرْهُ لِيْ وَمَا كَانَ لِخَلْقِكَ فَتَحَمَّلْهُ عَنِّيْ

मुझे मुआ़फ़ी दे और जिन का तअ़ल्लुक़ तेरी मख़्लूक़ से (भी) हो उन की मुआ़फ़ी अपने ज़िम्मए करम पर ले ले।

وَاَغْنِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَبِطَاعَتِكَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे (रिज़्क़े) ह़लाल अ़ता फ़रमा कर ह़राम से बे परवाह कर दे और अपनी इता़अ़त की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा कर

عَنْ مَّعْصِيَتِكَ وَبِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ يَا

ना फ़रमानी से और अपने फ़ज़्ल से नवाज़ कर अपने इलावा दूसरों से मुस्तग़नी (या'नी बे परवा) कर दे,

وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ ط اَللّٰهُمَّ اِنَّ بَيْتَكَ عَظِيْمٌ وَّوَجْهَكَ

ऐ वसीअ़ मग़्फ़िरत वाले ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तेरा घर बड़ी अ़-ज़मत वाला है और तेरी ज़ात

كَرِيْمٌ وَّاَنْتَ يَا اَللّٰهُ حَلِيْمٌ كَرِيْمٌ عَظِيْمٌ

करीम है और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू हिल्म वाला, करम वाला, अ़-ज़मत वाला है

تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ ط (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

और तू मुआफ़ी को पसन्द करता है सो मेरी ख़ताओं को बख़्श दे ।

रुक्ने यमानी तक येह दुआ ख़त्म कर के फिर पहले की तरह अ़मल करते हुए **ह़-जरे अस्वद** की तरफ़ बढ़िये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह कुरआनी दुआ पढ़िये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।

फिर पहले की तरह दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسۡمِ اللّٰہِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوۡلِ اللّٰہ

पढ़ कर ह़-जरे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और **सातवां और आख़िरी चक्कर** शुरूअ़ कीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :

सातवें चक्कर की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُكَ اِیۡمَانًا کَامِلًا وَّیَقِیۡنًا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी रह़मत के वसीले से कामिल ईमान और सच्चा यक़ीन

صَادِقًا وَّ رِزۡقًا وَّاسِعًا وَّ قَلۡبًا خَاشِعًا وَّ

और कुशादा रिज़्क़ और आ़जिज़ी करने वाला दिल और

لِسَانًا ذَاکِرًا وَّرِزۡقًا حَلَالًا طَیِّبًا وَّتَوۡبَةً

ज़िक्र करने वाली ज़बान और ह़लाल और पाक रोज़ी और सच्ची तौबा

نَّصُوۡحًا وَّتَوۡبَةً قَبۡلَ الۡمَوۡتِ وَرَاحَةً عِنۡدَ الۡمَوۡتِ

और मौत से पहले की तौबा और मौत के वक़्त राह़त

وَمَغۡفِرَةً وَّ رَحۡمَةً بَعۡدَ الۡمَوۡتِ وَالۡعَفۡوَ عِنۡدَ

और मरने के बा'द मग़्फ़िरत और रह़मत और ह़िसाब के वक़्त मुआ़फ़ी

الْحِسَابِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

और जन्नत का हुसूल और जहन्नम से नजात मांगता हूं,

بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ ؕ رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا

ऐ इ़ज़्ज़त वाले ! ऐ बहुत बख़्शने वाले ! ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरे इ़ल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा

وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ؕ (दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

और मुझे नेकों में शामिल फ़रमा।

रुक्ने यमानी पर आ कर येह दुआ़ ख़त्म कर के पहले की त़रह़ अ़मल करते हुए दुरूद शरीफ़ पढ़ कर पढ़िये :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

ह़-जरे अस्वद पर पहुंच कर आप के सात फेरे मुकम्मल हो गए मगर फिर आठवीं बार पहले की त़रह़ दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ؕ

पढ़ कर **इस्तिलाम** कीजिये और **येह हमेशा याद रखिये कि जब भी त़वाफ़ करें उस में फेरे सात होते हैं और इस्तिलाम आठ ।**

मक़ामे इब्राहीम

अब सीधा कन्धा ढांप लीजिये और "मक़ामे इब्राहीम" पर आ कर पारह 1 **सू-रतुल ब-क़रह** की येह आयते मुक़द्दसा पढ़िये :

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ।

नमाज़े त़वाफ़ : **अब** मक़ामे इब्राहीम के क़रीब जगह मिले तो बेहतर वरना **मस्जिदे ह़राम** में जहां भी जगह मिले अगर वक़्ते मक्रूह न हो तो दो रक्अ़त **नमाज़े त़वाफ़** अदा कीजिये, पहली रक्अ़त में **सूरए फ़ातिह़ा** के बा'द قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी में قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ पढ़िये, येह नमाज़ **वाजिब** है और कोई मजबूरी न हो तो त़वाफ़ के बा'द फ़ौरन पढ़ना सुन्नत है । अक्सर लोग कन्धा खुला रख कर नमाज़ पढ़ते हैं येह **मक्रूह** है । **इज़्त़िबाअ़** या'नी कन्धा खुला रखना सिर्फ़ उस **त़वाफ़** के सातों फेरों में है जिस के बा'द सअ़्य होती है। अगर वक़्ते मक्रूह दाख़िल हो गया हो तो बा'द में पढ़ लीजिये और याद रखिये इस नमाज़ का पढ़ना लाज़िमी है ।

मक़ामे इब्राहीम पर दो रक्अ़त अदा कर के दुआ़ मांगिये, ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **फ़रमाता है :** ''जो येह दुआ़ करेगा मैं उस की ख़त़ा बख़्श दूंगा, ग़म दूर करूंगा, मोह़ताजी उस से निकाल लूंगा, हर ताजिर से बढ़ कर उस की तिजारत रखूंगा, दुन्या नाचार व मजबूर उस के पास आएगी अगर्चे वोह उसे न चाहे।'' (ابنِ عَساکِر ج۷ ص۴۳۱) वोह दुआ़ येह है :

मक़ामे इब्राहीम की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَانِیَتِیْ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरी सब छुपी और खुली बातें जानता है

فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِیْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِیْ

लिहाज़ा मेरी मा'ज़िरत क़बूल फ़रमा और तू मेरी ह़ाजत को जानता है लिहाज़ा मेरी ख़्वाहिश को

سُؤْلِیْ وَتَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ ط

पूरा कर और तू मेरे दिल का ह़ाल जानता है लिहाज़ा मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ اِیْمَانًا یُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَیَقِیْنًا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से मांगता हूं ऐसा ईमान जो मेरे दिल में समा जाए और ऐसा सच्चा यक़ीन

صَادِقًا حَتّٰٓی اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا یُصِیْبُنِیْٓ اِلَّا مَا کَتَبْتَ

कि मैं जान लूं कि जो कुछ तूने मेरी तक़्दीर में लिख दिया है वोही मुझे पहुंचेगा

لِیْ وَرِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِیْ یَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ ط

और तेरी त़रफ़ से अपनी क़िस्मत पर रिज़ा मन्दी, ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले।

"ख़लील" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ के चार म-दनी फूल

﴾1﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : "जो मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रक्अ़तें पढ़े, उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और क़ियामत के दिन अम्न वालों में मह़्शूर होगा।" (या'नी उठाया जाएगा) (الشفاء الجزء الثانی ص۹۳) ﴾2﴿ अक्सर लोग भीड़भाड़ में गिरते पड़ते भी ज़बर दस्ती "मक़ामे इब्राहीम" के पीछे ही नमाज़ पढ़ते हैं, बा'ज़ ह़ज़रात मस्तूरात को नमाज़ पढ़ाने के लिये हाथों का ह़ल्क़ा बना कर रास्ता घेर लेते हैं उन्हें इस त़रह़ करने के बजाए भीड़ के मौक़अ़ पर "नमाज़े त़वाफ़" मक़ामे इब्राहीम से दूर पढ़नी चाहिये कि त़वाफ़ करने वालों को भी तक्लीफ़ न हो और ख़ुद को भी धक्के न लगें ﴾3﴿ **मक़ामे इब्राहीम** के बा'द इस नमाज़ के लिये सब से अफ़्ज़ल **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के अन्दर पढ़ना है फिर **ह़त़ीम** में **मीज़ाबे रह़मत** के नीचे इस के बा'द **ह़त़ीम** में किसी

और जगह फिर का'बए मुअ़ज़्ज़मा से क़रीब तर जगह में फिर मस्जिदुल ह़राम में किसी जगह फिर **ह़-रमे मक्का** के अन्दर जहां भी हो। (لُبَابُ الْمَنَاسِك ص ١٠٦) **﴾4﴿** सुन्नत येह है कि वक़्ते कराहत न हो तो त़वाफ़ के बा'द फ़ौरन नमाज़ पढ़े, बीच में फ़ासिला न हो और अगर न पढ़ी तो उ़म्र भर में जब पढ़ेगा, अदा ही है क़ज़ा नहीं मगर बुरा किया कि सुन्नत फ़ौत हुई। (اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّطص ١٠٥)

अब मुल्तज़म पर आइये......! : नमाज़े त़वाफ़ व दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर (**मुल्तज़म** की ह़ाज़िरी मुस्तह़ब है) **मुल्तज़म** से लिपट जाइये। दरवाज़ए का'बा और ह़-जरे अस्वद के दरमियानी ह़िस्से को **मुल्तज़म** कहते हैं, इस में दरवाज़ए का'बा शामिल नहीं। **मुल्तज़म** से कभी सीना लगाइये तो कभी पेट, इस पर कभी दायां रुख़्सार तो कभी बायां रुख़्सार और दोनों हाथ सर से ऊंचे कर के दीवारे मुक़द्दस पर फैलाइये या सीधा हाथ दरवाज़ए का'बा की त़रफ़ और उलटा हाथ **ह़-जरे अस्वद** की त़रफ़ फैलाइये। ख़ूब आंसू बहाइये और निहायत ही आ़जिज़ी के साथ **गिड़गिड़ा** कर अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से अपने लिये और तमाम उम्मत के लिये अपनी ज़बान में **दुआ़** मांगिये कि **मक़ामे क़बूल** है। यहां की एक दुआ़ येह है :

يَاوَاجِدُ يَامَاجِدُ لَا تُزِلْ عَنِّيْ نِعْمَةً اَنْعَمْتَهَا عَلَيَّ ط

ऐ क़ुदरत वाले ! ऐ बुज़ुर्ग ! तूने मुझे जो ने'मत दी, उस को मुझ से ज़ाइल न कर।

ह़दीस में फ़रमाया : "जब मैं चाहता हूं जिब्रील को देखता हूं कि मुल्तज़म से लिपटे हुए येह दुआ़ कर रहे हैं।" (ابن عساکر ج٥١ص١٦٤)

और हो सके तो दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह **दुआ़** भी पढ़िये :

मक़ामे मुल्तज़म पर पढ़ने की दुआ

اَللّٰھُمَّ یَا رَبَّ الْبَیْتِ الْعَتِیْقِ اَعْتِقْ رِقَابَنَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ इस क़दीम घर के मालिक ! हमारी गरदनों को और हमारे

وَرِقَابَ اٰبَآئِنَا وَاُمَّھَاتِنَا وَاِخْوَانِنَا وَاَوْلَادِنَا مِنَ

(मुसल्मान) बाप दादों और माओं (बहनों) और भाइयों और औलाद की गरदनों को

النَّارِ یَا ذَا الْجُوْدِ وَالْکَرَمِ وَالْفَضْلِ وَالْمَنِّ وَالْعَطَآءِ

दोज़ख़ से आज़ाद कर दे, ऐ बख़्शिश और करम और फ़ज़्ल और एहसान

وَالْاِحْسَانِ ط اَللّٰھُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِی الْاُمُوْرِ

और अता वाले ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तमाम मुआ-मलात में हमारा अन्जाम

کُلِّھَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْیِ الدُّنْیَا وَعَذَابِ

बख़ैर फ़रमा और हमें दुन्या की रुस्वाई और आख़िरत के अज़ाब से महफ़ूज़ रख ।

الْاٰخِرَۃِ ط اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ عَبْدُکَ وَابْنُ عَبْدِکَ وَاقِفٌ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरा बन्दा हूं और बन्दा ज़ादा हूं, तेरे (मुक़द्दस घर के) दरवाज़े के

تَحْتَ بَابِكَ مُلْتَزِمٌ بِاَعْتَابِكَ مُتَذَلِّلٌ

नीचे खड़ा हूं, तेरे दरवाज़े की चौखटों से लिपटा हूं, तेरे सामने आ़जिज़ी का इज़्हार कर रहा हूं

بَيْنَ يَدَيْكَ اَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَاَخْشٰى عَذَابَكَ

और तेरी रह़मत का त़लब गार हूं और तेरे दोज़ख़ के अ़ज़ाब से डर रहा हूं

مِنَ النَّارِ يَا قَدِيْمَ الْاِحْسَانِ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْـئَلُكَ

ऐ हमेशा के मोह़सिन ! (अब भी एह़सान फ़रमा) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि

اَنْ تَرْفَعَ ذِكْرِیْ وَتَضَعَ وِزْرِیْ وَتُصْلِحَ

मेरे ज़िक्र को बुलन्दी अ़त़ा फ़रमा और मेरे गुनाहों का बोझ हलका कर और मेरे कामों को

اَمْرِیْ وَتُطَهِّرَ قَلْبِیْ وَتُنَوِّرَ لِیْ فِیْ قَبْرِیْ

दुरुस्त फ़रमा और मेरे दिल को पाक कर और मेरे लिये क़ब्र में रोशनी फ़रमा

وَتَغْفِرَ لِیْ ذَنْبِیْ وَاَسْـئَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰى

और मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा और मैं तुझ से जन्नत के ऊंचे द-रजों की भीक मांगता

مِنَ الْجَنَّةِ ط اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

हूं । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلہٖ وسلَّم

एक अहम मस्अला : मुल्तज़म के पास नमाज़े त़वाफ़ के बा'द आना उस त़वाफ़ में है जिस के बा'द सअ़्य है और जिस के बा'द सअ़्य न हो म-सलन त़वाफ़े नफ़्ल या **त़वाफ़ुज़्ज़ियारह** (जब कि ह़ज की सअ़्य से पहले फ़ारिग़ हो चुके हों) उस में नमाज़ से पहले **मुल्तज़म** से लिपटिये, फिर **मक़ामे इब्राहीम** के पास जा कर **दो रक्अ़त** नमाज़ अदा कीजिये । (اَلْمَسْلَکُ الْمُتَقَسِّط ص١٣٨)

अब ज़मज़म पर आइये ! : अब बाबुल का'बा के सामने वाली सीध में दूर रखे हुए **आबे ज़मज़म शरीफ़** के कूलरों पर तशरीफ़ लाइये और (याद रहे ! मस्जिद में आबे ज़मज़म पीते वक़्त ए'तिकाफ़ की निय्यत होना ज़रूरी है) क़िब्ला रू खड़े खड़े तीन सांस में ख़ूब पेट भर कर पियें, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : हमारे और मुनाफ़िक़ीन के दरमियान फ़र्क़ येह है कि वोह ज़मज़म पेट भर कर नहीं पीते । (ابن ماجہ ج٣ ص٤٨٩ حدیث ٣٠٦١) हर बार **बिस्मिल्लाह** से शुरूअ़ कीजिये और पीने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कहिये हर बार **का'बए मुशर्रफ़ा** की त़रफ़ निगाह उठा कर देख लीजिये, बाक़ी पानी जिस्म पर डालिये या मुंह, सर और बदन पर उस से **मस्ह़** कर लीजिये मगर येह एह़तियात़ रखिये कि कोई क़त़रा ज़मीन पर न गिरे । पीते वक़्त दुआ़ कीजिये कि क़बूल है ।

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴾1﴿ येह (आबे ज़मज़म) बा ब-र-कत है और भूके के लिये खाना है और मरीज़

के लिये शिफ़ा है। (ابوداود طیالسی ص ٦١ حدیث ٤٥٧) ﴾2﴿ ज़मज़म जिस मुराद से पिया जाए उसी के लिये है। (اِبنِ ماجه ج ٣ ص ٤٩٠ حدیث٣٠٦٢)

यह ज़मज़म उस लिये है जिस लिये इस को पिये कोई
इसी ज़मज़म में जन्नत है, इसी ज़मज़म में कौसर है

(ज़ौक़े ना'त)

आबे ज़मज़म पी कर येह दुआ पढ़िये

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّ رِزْقًا وَّاسِعًا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से इल्मे नाफ़ेअ़ और कुशादा रिज़्क़

وَّشِفَآءً مِّنْ كُلِّ دَآءٍ ط

और हर बीमारी से सिह़्ह़त याबी का सुवाल करता हूं।

आबे ज़मज़म पीते वक़्त दुआ मांगने का त़रीक़ा :

शारेह़े मुस्लिम शरीफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : पस उस शख़्स के लिये **मुस्तह़ब** है जो मग़्फ़िरत या मरज़ वग़ैरा से शिफ़ा के लिये आबे ज़मज़म पीना चाहता है कि क़िब्ला रू हो कर

फिर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط पढ़े फिर कहे : ''ऐ **अल्लाह** मुझे येह ह़दीस पहुंची है कि तेरे रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''आबे ज़मज़म उस मक़्सद के लिये है कि जिस के लिये इसे पिया जाए ।'' (مسند امام احمد ج ٥ ص ١٣٦ حدیث ١٨٥٥) (फिर यूं दुआ़एं मांगे म–सलन) ऐ **अल्लाह !** मैं इसे पीता हूं ताकि तू मुझे बख़्श दे या ऐ **अल्लाह !** मैं इसे पीता हूं इस के ज़रीए अपने मरज़ से शिफ़ा चाहते हुए, ऐ **अल्लाह !** पस तू मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमा दे'' और मिस्ल इस के (या'नी ह़स्बे ज़रूरत इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ दुआ़एं करे)

(الایضاح فی مناسک الحج للنووی ص ٤٠١)

ज़ियादा ठन्डा न पियें : बहुत ठन्डा पानी इस्ति'माल न फ़रमाएं कहीं आप की इ़बादत में रुकावट के अस्बाब न पैदा हो जाएं ! नफ़्स की ख़्वाहिश को दबाते हुए ऐसे कूलर से आबे ज़मज़म नोश फ़रमाएं जिस पर लिखा हो : زَمۡ زَمۡ غَیۡرُ مُبَرَّد (या'नी ग़ैर ठन्डा ज़मज़म) ।

नज़र तेज़ होती है : आबे ज़मज़म देखने से नज़र तेज़ होती और गुनाह दूर होते हैं, तीन[3] चुल्लू सर पर डालने से ज़िल्लतो रुस्वाई से ह़िफ़ाज़त होती है ।

(البحر العمیق فی المناسک ج ٥ ص ٢٥٦٩-٢٥٧٣)

तू हर साल ह़ज पर बुला या इलाही

वहां आबे ज़मज़म पिला या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सफ़ा व मर्वह की सअ़्य[1] **: अगर** कोई मजबूरी या थकन वग़ैरा न हो तो अभी वरना आराम कर के **सफ़ा व मर्वह** की **सअ़्य** के लिये तय्यार हो जाइये, याद रहे कि **सअ़्य** में **इज़्तिबाअ़** या'नी कन्धा खुला रखना नहीं है। अब **सअ़्य** के लिये **ह़-जरे अस्वद** का पहले ही की त़रह़ दोनों[2] हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ़ :

بِسْمِ اللہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَاللہُ اَکْبَرُ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللہِ ط

पढ़ कर **इस्तिलाम** कीजिये। और न हो सके तो उस की त़रफ़ मुंह कर के اَللہُ اَکْبَرُ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ और दुरूद पढ़ते हुए फ़ौरन **बाबुस्सफ़ा** पर आइये ! **''कोहे सफ़ा''** चूंकि **''मस्जिदे ह़राम''** से बाहर वाक़ेअ़ है और हमेशा मस्जिद से बाहर निकलते वक़्त उलटा पाउं निकालना **सुन्नत** है, लिहाज़ा यहां भी पहले उलटा पाउं निकालिये और ह़स्बे मा'मूल दुरूद शरीफ़ पढ़ कर मस्जिद से बाहर आने की येह दुआ़ पढ़िये :

مدینہ

1 : तहख़ाने (BASEMENT) में सअ़्य कीजिये।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ وَرَحْمَتِکَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल और तेरी रह़मत का सुवाल करता हूं।

अब **दुरूदो सलाम** पढ़ते हुए **सफ़ा** पर इतना चढ़िये कि **का 'बए मुअ़ज़्ज़मा** नज़र आ जाए और येह बात यहां मा'मूली सा चढ़ने पर ह़ासिल हो जाती है, अ़वामुन्नास की त़रह़ ज़ियादा ऊपर तक न चढ़िये अब येह पढ़िये :

اَبْدَءُ بِمَا بَدَأَ اللّٰہُ تَعَالٰی بِہٖ ﴿اِنَّ الصَّفَا وَ

मैं उस से शुरूअ़ करता हूं जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहले ज़िक्र किया । ﴾**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक सफ़ा और

الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰہِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَیْتَ

मर्वह **अल्लाह** के निशानों से हैं तो जो इस घर का ह़ज

اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْہِ اَنْ یَّطَّوَّفَ بِہِمَا ؕ

या उ़म्रह करे, इस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे

وَمَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰہَ شَاکِرٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۵۸﴾

और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है। ﴾ (پ۲،البقرۃ:۱۵۸)

सफ़ा पर अ़वाम के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ : काफ़ी लोग **का'बा शरीफ़** की त़रफ़ हथेलियां करते हैं, बा'ज़ हाथ लहरा रहे होते हैं तो बा'ज़ तीन[3] बार कानों तक हाथ उठा कर छोड़ देते हैं, आप ऐसा न करें बल्कि ह़स्बे मा'मूल दुआ़ की त़रह़ हाथ कन्धों तक उठा कर **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** की त़रफ़ मुंह किये उतनी देर तक दुआ़ मांगिये जितनी देर में **सू-रतुल ब-क़रह** की **25** आयतों की तिलावत की जाए, ख़ूब गिड़गिड़ा कर और हो सके तो रो रो कर दुआ़ मांगिये कि येह **क़बूलिय्यत का मक़ाम** है। अपने लिये और तमाम जिन्नो इन्स मुस्लिमीन की ख़ैर व भलाई के लिये और एह़साने अ़ज़ीम होगा कि मुझ गुनहगारों के सरदार **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत होने के लिये भी दुआ़ मांगिये। नीज़ **दुरूद शरीफ़** पढ़ कर येह दुआ़ पढ़िये :[1]

---

1 : रम्ये जमरात, वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात वग़ैरा के लिये जिस त़रह़ निय्यत शर्त़ नहीं इसी त़रह़ **सअ़्य** में भी शर्त़ नहीं बिग़ैर निय्यत के भी अगर किसी ने सअ़्य की तो हो जाएगी मगर सअ़्य में निय्यत कर लेना मुस्तह़ब है। निय्यत नहीं होगी तो सवाब नहीं मिलेगा।

कोहे सफ़ा की दुआ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط لَآ اِلٰهَ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा

اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। और ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا هَدٰنَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَآ اَوْلَانَا

कि उस ने हम को हिदायत की, ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये कि उस ने हम को दिया,

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَآ اَلْهَمَنَا ط اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ

ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये कि उस ने हम को इल्हाम किया, ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जिस ने

هَدٰنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰنَا

हम को इस की हिदायत की और अगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हिदायत न करता तो हम हिदायत न पाते।

اللّٰهُ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं, जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये

الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ

मुल्क है और उसी के लिये ह़म्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ख़ुद ज़िन्दा

لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

मरता नहीं, उसी के हाथ में ख़ैर है और वोह हर शै पर

قَدِيْرٌ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ صَدَقَ وَعْدَهٗ

क़ादिर है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो अकेला है, उस ने अपना वा'दा सच्चा किया

وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَاَعَزَّ جُنْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ

और अपने बन्दे की मदद की और अपने लश्कर को ग़ालिब किया और काफ़िरों की जमाअ़तों को तन्हा उस ने शिकस्त दी।

وَحْدَهٗ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं हम उसी की इ़बादत करते हैं,

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ ط

उसी के लिये दीन को ख़ालिस करते हुए अगर्चे काफ़िर बुरा मानें।

﴿فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ

﴿ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की पाकी है शाम व

تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ

सुब्ह़ और उसी के लिये ह़म्द है आस्मानों

وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿۱۸﴾

और ज़मीन में और तीसरे पहर को और ज़ोहर के वक़्त,

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ

वोह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को

الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ

ज़िन्दा से निकालता है और ज़मीन को उस के मरने के बा'द

مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۹﴾ اَللّٰهُمَّ

ज़िन्दा करता है और इसी त़रह़ तुम निकाले जाओगे इलाही !

كَمَا هَدَيْتَنِيْ لِلْاِسْلَامِ اَسْأَلُكَ اَنْ لَّا

तूने जिस त़रह़ मुझे इस्लाम की त़रफ़ हिदायत की, तुझ से सुवाल करता हूं कि

تَنْزِعَهُ مِنِّيْ حَتّٰى تَوَفَّانِيْ وَاَنَا مُسْلِمٌ ط

इसे मुझ से जुदा न करना यहां तक कि मुझे इस्लाम पर मौत दे,

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये पाकी है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये ह़म्द है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं

وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) सब से बड़ा है, और गुनाह से फिरना और नेकी की त़ाक़त नहीं मगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की मदद से

الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ط اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ عَلٰى سُنَّةِ

जो बरतर व बुज़ुर्ग है । इलाही ! तू मुझ को अपने

نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर ज़िन्दा रख

وَتَوَفَّنِيْ عَلٰى مِلَّتِهٖ وَاَعِذْنِيْ مِنْ مُّضِلَّاتِ

और इन की मिल्लत पर वफ़ात दे और फ़ितनों की गुमराहियों

الْفِتَنِ ط اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ يُّحِبُّكَ

से बचा, इलाही ! तू मुझ को उन लोगों में कर जो तुझ से मह़ब्बत रखते हैं

وَيُحِبُّ رَسُوْلَكَ وَاَنْبِيَآئَكَ وَمَلٰٓئِكَتَكَ

और तेरे रसूल व अम्बिया व मलाएका और नेक बन्दों से

وَعِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ يَسِّرْلِيَ

महब्बत रखते हैं । इलाही ! मेरे लिये आसानी मुयस्सर कर

الْيُسْرٰى وَجَنِّبْنِي الْعُسْرٰى اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ

और मुझे सख़्ती से बचा, इलाही ! अपने **रसूल मुहम्मद**

عَلٰى سُنَّةِ رَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ

صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर मुझ को ज़िन्दा रख

تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّ

और मुसल्मान मार और

اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ

नेकों के साथ मिला और जन्नतुन्नईम

وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ وَاغْفِرْلِيْ خَطِيْٓئَتِيْ

का वारिस कर और क़ियामत के दिन मेरी ख़ता

يَوْمَ الدِّيْنِ ط اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ اِيْمَانًا كَامِلًا

बख़्श दे । इलाही ! तुझ से ईमाने कामिल

وَّ قَلْبًا خَاشِعًا وَّ نَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا

और क़ल्बे ख़ाशेअ़ का हम सुवाल करते हैं और हम तुझ से इल्मे नाफ़ेअ़

وَّ يَقِيْنًا صَادِقًا وَّ دِيْنًا قَيِّمًا وَّ نَسْئَلُكَ

और यक़ीने सादिक़ और दीने मुस्तक़ीम का सुवाल करते हैं और हर

الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ مِنْ كُلِّ بَلِيَّةٍ وَّ نَسْئَلُكَ

बला से अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं और

تَمَامَ الْعَافِيَةِ وَ نَسْئَلُكَ دَوَامَ الْعَافِيَةِ

पूरी आ़फ़िय्यत और आ़फ़िय्यत की हमेशगी

وَ نَسْئَلُكَ الشُّكْرَ عَلَى الْعَافِيَةِ وَ نَسْئَلُكَ

और आ़फ़िय्यत पर शुक्र का सुवाल करते हैं और आदमियों

الْغِنٰى عَنِ النَّاسِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَ سَلِّمْ

से बे नियाज़ी का सुवाल करते हैं। इलाही ! तू दुरूदो सलाम

وَ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ

व ब-र-कत नाज़िल कर हमारे सरदार **मुहम्मद** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

وَصَحْبِهٖ عَدَدَ خَلْقِكَ وَرِضَا نَفْسِكَ

और इन की आल व अस्हाब पर ब क़दरे शुमार तेरी मख़्लूक़ और तेरी रिज़ा

وَزِنَةَ عَرْشِكَ وَمِدَادَ كَلِمَاتِكَ كُلَّمَا

और वज़्न तेरे अर्श के और ब क़दरे दराज़ी

ذَكَرَكَ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِكَ

तेरे कलिमात के जब तक ज़िक्र करने वाले तेरा ज़िक्र करते रहें और जब तक ग़ाफ़िल तेरे

الْغَافِلُوْنَ ط اٰمين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلى الله عليه وسلم

ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहें। اٰمين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

दुआ ख़त्म होने के बा'द हाथ छोड़ दीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर **सअ्य** की निय्यत अपने दिल में कर लीजिये मगर ज़बान से भी कह लेना बेहतर है। मा'ना ज़ेहन में रखते हुए इस त़रह़ निय्यत कीजिये :

सअ्य की निय्यत

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اُرِيْدُ السَّعْيَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी ख़ुशनूदी की ख़ातिर **सफ़ा और मर्वह** के दरमियान सअ्य के

سَبْعَةَ اَشْوَاطٍ لِّوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ فَيَسِّرْهُ

सात फेरे करने का इरादा कर रहा हूं तो इसे मेरे लिये आसान फ़रमा दे

لِيْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّيْ ط

और इसे मेरी त़रफ़ से क़बूल फ़रमा ।

सफ़ा/मर्वह से उतरने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اسْتَعْمِلْنِيْ بِسُنَّةِ نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे अपने प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत का ताबेअ़ बना दे

عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِيْ عَلٰى مِلَّتِهٖ وَاَعِذْنِيْ مِنْ

और मुझे उन के दीन पर मौत नसीब फ़रमा और मुझे पनाह दे

مُضِلَّاتِ الْفِتَنِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ط

फ़ितनों की गुमराहियों से अपनी रह़मत के साथ, ऐ सब से ज़ियादा रह़्म करने वाले ।

सफ़ा से अब ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल दरमियाना चाल चलते हुए जानिबे मर्वह चलिये (आज कल तो यहां **संगे मरमर** बिछा हुवा है और एर कूलर भी लगे हैं । एक सअ़्य वोह भी थी जो

सय्यि-दतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने की थी, ज़रा अपने ज़ेह्न में वोह दिल हिला देने वाला मन्ज़र ताज़ा कीजिये, जब यहां बे आबो गियाह मैदान था और नन्हे मुन्ने **इस्माईल** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام शिद्दते प्यास से बिलक रहे थे और ह़ज़रते **सय्यि-दतुना हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا तलाशे आब (पानी) में बेताब चिल-चिलाती धूप के अन्दर इन संगलाख़ रास्तों में फिर रही थीं) जूं ही **पहला सब्ज़ मील** आए मर्द दौड़ना शुरूअ़ कर दें। (मगर मुहज़्ज़ब त़रीक़े पर न कि बे तह़ाशा) और सुवार सुवारी तेज़ कर दें, हां अगर भीड़ ज़ियादा हो तो थोड़ा रुक जाइये जब कि भीड़ कम होने की उम्मीद हो। दौड़ने में येह याद रखिये कि ख़ुद को या किसी दूसरे को ईज़ा न पहुंचे कि यहां दौड़ना **सुन्नत** है जब कि किसी मुसल्मान को क़स्दन ईज़ा देना **ह़राम**। इस्लामी बहनें न दौड़ें। अब इस्लामी भाई दौड़ते हुए और इस्लामी बहनें चलते हुए येह दुआ़ पढ़ें :

सब्ज़ मीलों के दरमियान पढ़ने की दुआ़

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मुआ़फ़ फ़रमा और मुझ पर रह़्म कर और मेरी ख़त़ाएं जो कि यक़ीनन तेरे इ़ल्म में हैं उन से दर गुज़र फ़रमा, बेशक तू

تَعْلَمُ مَا لَا نَعْلَمُ ط اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ

जानता है हमें उस का इ़ल्म नहीं। बेशक तू इ़ज़्ज़त व इकराम वाला है

وَاهْدِنِیْ لِلَّتِیْ هِیَ اَقْوَمُ ط اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا عُمْرَةً

और मुझे सिराते़ मुस्तक़ीम पे क़ाइम रख, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे उ़म्रे को

مَّبْرُوْرَةً وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا ط

मबरूर और मेरी सअ्य को मश्कूर (पसन्दीदा) फ़रमा और मेरे गुनाहों को बख़्श दे।

जब **दूसरा सब्ज़ मील** आए तो आहिस्ता हो जाइये और दरमियाना चाल से जानिबे मर्वह बढ़े चलिये । **ऐ लीजिये ! मर्वह शरीफ़** आ गया, अ़वामुन्नास दूर ऊपर तक चढ़े हुए हैं । आप उन की नक़्ल मत कीजिये यहां पहली सीढ़ी पर चढ़ने बल्कि उस के क़रीब ज़मीन पर खड़े होने से भी **मर्वह** पर चढ़ना हो गया, यहां अगर्चे इ़मारात बन जाने के सबब **का'बा शरीफ़** नज़र नहीं आता मगर **का'बए मुशर्रफ़ा** की त़रफ़ मुंह कर के **सफ़ा** की त़रह़ उतनी ही देर तक दुआ़ मांगिये । अब निय्यत करने की ज़रूरत नहीं कि वोह तो पहले हो चुकी येह **एक फेरा** हुवा ।

अब ह़स्बे साबिक़ **दुआ़** पढ़ते हुए **मर्वह** से **जानिबे सफ़ा** चलिये और ह़स्बे मा'मूल **मीलैने अख़्ज़रैन** (या'नी सब्ज़ मीलों) के दरमियान **मर्द** दौड़ते हुए और **इस्लामी बहनें** चलते हुए वोही दुआ़ पढ़ें, अब **सफ़ा** पर पहुंच कर **दो फेरे** पूरे हुए । इसी त़रह़ **सफ़ा** और **मर्वह** के दरमियान चलते, दौड़ते **सातवां**

फेरा मर्वह पर ख़त्म होगा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप की **सअ़्य** मुकम्मल हुई ।

दौराने सअ़्य एक ज़रूरी एह़तियात़ : बसा अवक़ात लोग मस्आ़ में नमाज़ पढ़ रहे होते हैं । दौराने त़वाफ़ तो नमाज़ी के आगे से गुज़रना जाइज़ है मगर दौराने सअ़्य ना जाइज़ । ऐसे मौक़अ़ पर रुक कर नमाज़ी के सलाम फेरने का इन्तिज़ार कर लीजिये । हां किसी गुज़रने वाले को आड़ बना कर गुज़र सकते हैं ।

नमाज़े सअ़्य मुस्तह़ब है : अब हो सके तो मस्जिदे ह़राम में दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल (अगर मक्रूह वक़्त न हो तो) अदा कर लीजिये कि मुस्तह़ब है । हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सअ़्य के बा'द मत़ाफ़ के कनारे **ह़-जरे अस्वद** की सीध में दो नफ़्ल अदा फ़रमाए हैं ।

(مُسنَد اِمام احمد ج۱۰ ص ۳۵۴ حدیث۲۷۳۱۳، رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۵۸۹)

ह़ल्क़ या तक़्सीर : अब मर्द **ह़ल्क़** करें या'नी सर मुंडवा दें या तक़्सीर करें या'नी बाल कतरवाएं । मगर ह़ल्क़ करवाना बेहतर है ।

तक़्सीर की ता'रीफ़ : तक़्सीर या'नी कम अज़ कम चौथाई (1/4) सर के बाल उंगली के पोरे बराबर कटवाना । इस में येह एह़तियात़ रखिये कि एक पोरे से ज़ियादा कटें ताकि सर के बीच

में जो छोटे छोटे बाल होते हैं वोह भी एक पोरे के बराबर कट जाएं। बा'ज़ लोग क़ैंची से दो तीन जगह के चन्द बाल काट लिया करते हैं, **ह़-नफ़िय्यों** के लिये येह त़रीक़ा ग़लत़ है और इस त़रह़ **एह़राम** की पाबन्दियां भी ख़त्म न होंगी।

इस्लामी बहनों की तक़्सीर : इस्लामी बहनों को सर मुंडाना ह़राम है वोह सिर्फ़ तक़्सीर करवाएं। इस का आसान त़रीक़ा येह है कि अपनी चुटिया के सिरे को उंगली के गिर्द लपेट कर उतना ह़िस्सा काट लें, लेकिन येह एह़तियात़ लाज़िमी है कि कम अज़ कम **चौथाई (1/4) सर** के बाल एक पोरे के बराबर कट जाएं।

आप को मुबारक हो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आप उ़म्रे से फ़ारिग़ हो गए।**

शरफ़ मुझ को उ़म्रे का मौला दिया है

करम मुझ गुनहगार पर येह बड़ा है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चप्पलों के बारे में ज़रूरी मस्अला : मस्जिदे ह़राम व **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक दरवाज़ों के बाहर बे शुमार लोग जूते चप्पल उतार देते हैं फिर वापसी में जो भी जूता पसन्द आया पहन कर चलते बनते हैं! इस त़रह़ के जूते या चप्पल बिला इजाज़ते शर-ई जितनी बार इस्ति'माल करेंगे उतनी ता'दाद में गुनाह होता रहेगा म-सलन बिला इजाज़ते शर-ई एक बार के उठाए हुए जूते 100 बार पहने तो 100 मर्तबा

पहनने का गुनाह हुवा। इन जूतों के अह़काम "**लुक़्त़ा**" (या'नी किसी की गिरी पड़ी चीज़) के हैं कि **मालिक** मिलने की उम्मीद ही ख़त्म हो जाए तो जिस को येह "**लुक़्त़ा**" मिला अगर येह फ़क़ीर है तो ख़ुद रख सकता है वरना किसी फ़क़ीर को दे दे।

जिस ने दूसरों के जूते ना जाइज़ इस्ति'माल कर लिये अब क्या करे ? : मज़्कूरा अन्दाज़ पर दुन्या में जिस ने जहां से भी इस त़रह़ की ह़-र-कत की वोह गुनहगार है। अपने लिये "**लुक़्त़ा**" या'नी गिरी पड़ी चीज़ उठा ले जाने वाले पर फ़र्ज़ है कि तौबा भी करे और इस त़रह़ जितने भी जूते चप्पल या चीज़ें ली हैं, अगर इन के अस्ल मालिकों या वोह न रहे हों तो उन के वारिसों तक पहुंचाना मुम्किन न हो तो वोह सारी चीज़ें या अगर वोह अश्या बाक़ी नहीं रहीं तो उन की क़ीमत किसी मिस्कीन को दे दे। या उन की क़ीमत मस्जिद व मद्रसा वग़ैरा में दे दे। (लुक़्ते के तफ़्सीली मसाइल के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द 2 **सफ़ह़ा** 471 ता 484 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

आह ! जो बो चुका हूं, वक़्ते दिरौ[1]

होगा ह़सरत का सामना या रब !

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

1 : या'नी फ़स्ल काटते वक़्त

इस्लामी बहनों के लिये म-दनी फूल : औ़रतें नमाज़ फ़रोद गाह (या'नी क़ियाम गाह) ही में पढ़ें। नमाज़ों के लिये जो मस्जिदैने करीमैन में ह़ाज़िर होती हैं जहालत है कि मक़्सूद सवाब है और ख़ुद प्यारे सरकार, म-दनी ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औ़रत को मेरी मस्जिद (या'नी मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) में नमाज़ पढ़ने से ज़ियादा सवाब घर में पढ़ना है।" (مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۱۰ص۳۱۰حدیث۲۷۱۵۸)

त़वाफ़ में सात बातें ह़राम हैं

त़वाफ़ अगर्चे नफ़्ल हो, उस में येह सात बातें **ह़राम** हैं : ﴿1﴾ बे वुज़ू त़वाफ़ करना ﴿2﴾ बिग़ैर मजबूरी डोली में या किसी की गोद में या किसी के कन्धों वग़ैरा पर **त़वाफ़** करना ﴿3﴾ बिला उ़ज़्र बैठ कर सरक्ना या घुटनों पर चलना ﴿4﴾ का'बे को सीधे हाथ पर ले कर उलटा त़वाफ़ करना ﴿5﴾ त़वाफ़ में "ह़त़ीम" के अन्दर हो कर गुज़रना ﴿6﴾ सात फेरों से कम करना ﴿7﴾ जो उ़ज़्व सत्र में दाखि़ल है उस का चौथाई (1/4) हि़स्सा खुला होना, म-सलन रान या आज़ाद औ़रत का कान या कलाई। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1112) इस्लामी बहनें ख़ूब एह़तियात़ करें, दौराने त़वाफ़ ख़ुसूसन **ह़-जरे** अस्वद का इस्तिलाम करते वक़्त काफ़ी ख़वातीन की चौथाई कलाई तो क्या बा'ज़ अवक़ात पूरी कलाई खुल जाती है!

(त़वाफ़ के इ़लावा भी ग़ैर मह़रम के सामने सर के बाल या कान या कलाई खोलना ह़राम व गुनाह है। पर्दे के तफ़्सीली अह़काम मा'लूम करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

त़वाफ़ के ग्यारह मक्रूहात

﴾1﴿ फ़ुज़ूल बात करना ﴾2﴿ ज़िक्रो दुआ़ या तिलावत या ना'त व मुनाजात या कोई कलाम बुलन्द आवाज़ से करना ﴾3﴿ ह़म्दो सलात व मन्क़बत के सिवा कोई शे'र पढ़ना ﴾4﴿ नापाक कपड़ों में **त़वाफ़** करना (मुस्ता'मल चप्पल या जूते साथ लिये **त़वाफ़** न करें एह़तियात़ इसी में है) ﴾5﴿ रमल या ﴾6﴿ इज़्त़िबाअ़ या ﴾7﴿ बोसए संगे अस्वद जहां जहां इन का हुक्म है तर्क करना ﴾8﴿ **त़वाफ़** के फेरों में ज़ियादा फ़ासिला देना। हां ज़रूरत हो तो इस्तिन्जा के लिये जा सकते हैं, वुज़ू कर के बाक़ी पूरा कर लीजिये ﴾9﴿ एक त़वाफ़ के बा'द जब तक उस की दो रक्अ़तें न पढ़ लें दूसरा त़वाफ़ शुरूअ़ कर देना। हां अगर मक्रूह वक़्त हो तो ह़रज नहीं। म-सलन सुब्ह़े सादिक़ से ले कर सूरज बुलन्द होने तक या बा'दे नमाज़े अ़स्र से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक कि इस में कई त़वाफ़ बिग़ैर "नमाज़े त़वाफ़" जाइज़ हैं अलबत्ता मक्रूह वक़्त गुज़र जाने के बा'द हर त़वाफ़ के लिये दो दो रक्अ़त अदा करनी होंगी ﴾10﴿ **त़वाफ़** में कुछ खाना ﴾11﴿ पेशाब या रीह़

वग़ैरा की शिद्दत होते हुए **त़वाफ़** करना ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1113, اَلْمَسْلَکُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص١٦٥)

त़वाफ़ व सअ़्य में येह सात काम जाइज़ हैं :

﴾1﴿ सलाम करना ﴾2﴿ जवाब देना ﴾3﴿ ज़रूरत के वक़्त बात करना ﴾4﴿ पानी पीना (सअ़्य में खा भी सकते हैं) ﴾5﴿ ह़म्दो ना'त या मन्क़बत के अश्आ़र आहिस्ता आहिस्ता पढ़ना ﴾6﴿ दौराने त़वाफ़ नमाज़ी के आगे से गुज़रना **जाइज़** है कि **त़वाफ़** भी नमाज़ ही की त़रह़ है मगर **सअ़्य** के दौरान गुज़रना जाइज़ नहीं ﴾7﴿ फ़तवा पूछना या फ़तवा देना ।

(ऐज़न, स. 1114, اَلْمَسْلَکُ الْمُتَقَسِّط ص١٦٢)

सअ़्य के 10 मक्रूहात : ﴾1﴿ बिग़ैर ज़रूरत इस के फेरों में ज़ियादा फ़ासिला (वक़्फ़ा, दूरी) देना । हां क़ज़ाए ह़ाजत या तज्दीदे वुज़ू के लिये जा सकते हैं (सअ़्य में वुज़ू ज़रूरी नहीं, मुस्तह़ब है) ﴾2﴿ ख़रीद व ﴾3﴿ फ़रोख़्त ﴾4﴿ फ़ुज़ूल कलाम ﴾5﴿ "परेशान नज़री" या'नी इधर उधर फ़ुज़ूल देखना सअ़्य में भी मक्रूह है और त़वाफ़ में और ज़ियादा मक्रूह ﴾6﴿ सफ़ा, या ﴾7﴿ मर्वह पर न चढ़ना (मा'मूली सा चढ़िये ऊपर तक नहीं) ﴾8﴿ बिग़ैर मजबूरी मर्द का "मस्आ़" में न दौड़ना ﴾9﴿ त़वाफ़ के बा'द बहुत ताख़ीर से **सअ़्य** करना ﴾10﴿ सत्रे औ़रत न होना ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1115)

सअ्य के चार मु-तफ़र्रिक़ म-दनी फूल : ﴾1﴿ सअ्य में पैदल चलना **वाजिब** है जब कि उ़ज़्र न हो (बिला उ़ज़्र सुवारी पर या घिसट कर की तो **दम** वाजिब होगा) (لُبابُ الْمَناسِك ص ۱۷۸) ﴾2﴿ सअ्य के लिये **त़हारत** शर्त़ नहीं हैज़ व निफ़ास वाली भी कर सकती है (عالمگیری ج۱ص۲۴۷) ﴾3﴿ जिस्म व लिबास पाक हों और बा वुज़ू भी हों येह मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1110) ﴾4﴿ सअ्य शुरूअ़ करते वक़्त पहले **सफ़ा** की दुआ़ पढ़िये फिर **सअ्य की निय्यत** कीजिये। सअ्य के **मु-तअ़द्दिद** अफ़्आ़ल हैं, जैसा कि ह़-जरे अस्वद का इस्तिलाम, सफ़ा पर चढ़ना, दुआ़ मांगना वग़ैरा इन सब पर **निय्यतें** कर ले तो अच्छा है, कम अज़ कम दिल में येह निय्यत होना भी काफ़ी है हुसूले सवाब के लिये **अस्ल सअ्य** से पहले के अफ़्आ़ल कर रहा हूं।

इस्लामी बहनों के लिये ख़ास ताकीद : इस्लामी बहनें यहां भी और हर जगह मर्दों से अलग थलग रहें। अक्सर नादान औ़रतें "ह़-जरे अस्वद" और **रुक्ने यमानी** को चूमने के लिये या **का'बतुल्लाह** शरीफ़ के क़रीब जाने के लिये बे धड़क मर्दों में जा घुसती हैं। **तौबा ! तौबा !** येह सख़्त बेबाकी है। इस्लामी बहनों के लिये ठीक दोपहर के वक़्त म-सलन दिन के 10 बजे त़वाफ़ करना मुनासिब है कि उस वक़्त भीड़ कम होती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदीने की ह़ाज़िरी

ह़सन ह़ज कर लिया का'बे से आंखों ने ज़िया पाई
चलो देखें वोह बस्ती जिस का रस्ता दिल के अन्दर है

ज़ौक़ बढ़ाने का त़रीक़ा : मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا का **मुक़द्दस** सफ़र आप को मुबारक हो ! रास्ते भर **दुरूदो सलाम** की कसरत कीजिये और **ना'तिया अश्आ़र** पढ़ते रहिये या हो सके तो टेप रेकोर्डर पर खु़श इल्ह़ान ना'त ख़्वानों के केसिट सुनते रहिये कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ तरक़्क़िये ज़ौक़ के अस्बाब होंगे। **मदीनए पाक** की अ़-ज़-मतो रिफ़्अ़त का तसव्वुर बांधते रहिये, इस के फ़ज़ाइल पर ग़ौर करते रहिये।[1] इस से भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का शौक़ मज़ीद बढ़ेगा।

मदीना कितनी देर में आएगा ! : मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا का फ़ासिला तक़रीबन 425 मिलो मीटर है जिसे आ़म दिनों में बस

---

1 : दौराने क़ियामे ह़-रमैने शरीफ़ैन फ़ज़ाइले मक्का व मदीना पर मब्नी कुतुब का मुत़ा-लआ़ तरक़्क़िये ज़ौक़ का बेहतरीन ज़रीआ़ है नीज़ इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बढ़ाने के लिये आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ना'तिया दीवान "ह़दाइक़े बख़्शिश" और उस्ताज़े ज़मन मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान علیہ رَحمۃُ اللّٰہِ ذُوالْمِنَن का कलाम "ज़ौक़े ना'त" का ख़ूब मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

तक़्रीबन 5 घन्टे में तै़ कर लेती है मगर **ह़ज** के दिनों में बा'ज़ मस्लह़तों की बिना पर रफ़्तार कम रखी जाती और पहुंचने में बस तक़्रीबन 8 ता 10 घन्टे ले लेती है। ''मर्कज़े इस्तिक़्बाले हुज्जाज'' पर बस रुकती है, यहां पासपोर्ट का इन्दिराज होता है और पासपोर्ट रख कर एक कार्ड जारी किया जाता है जिसे ह़ाजी ने संभाल कर रखना होता है, यहां की कारवाई में बसा अवक़ात कई घन्टे भी लग जाते हैं, सब्र का फल मीठा है। अ़न्क़रीब आप اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मीठे मदीने के गली कूचों के जल्वे लूटेंगे, जल्द ही आप **गुम्बदे ख़ज़रा** के दीदार से अपनी आंखें ठन्डी करेंगे। जूं ही दूर से **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मीनारे नूरबार पुर वक़ार पर निगाह पड़ेगी, सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद नज़र आएगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के क़ल्ब में हलचल मच जाएगी और आंखों से बे इख़्तियार आंसू छलक पड़ेंगे।

साइम कमाले ज़ब्त़ की कोशिश तो की मगर
पलकों का ह़ल्क़ा तोड़ कर आंसू निकल गए

हवाए मदीना से आप के मशामे दिमाग़ **मुअ़त्त़र** हो रहे होंगे और आप अपनी रूह़ में ता-ज़गी मह़सूस कर रहे होंगे, हो सके तो नंगे पाउं रोते हुए **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की फ़ज़ाओं में दाख़िल हों।

जूते उतार लो चलो बा होश बा अदब
देखो मदीने का ह़सीं गुलज़ार आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नंगे पाउं रहने की क़ुरआनी दलील : और यहां नंगे पाउं रहना कोई ख़िलाफ़े शर-अ़ फ़े'ल भी नहीं बल्कि **मुक़द्दस सर ज़मीन** का सरासर अदब है । चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से हम कलामी का शरफ़ ह़ासिल किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿۱۲﴾ (پ۱۶طٰہٰ:۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो अपने जूते उतार डाल, बेशक तू पाक जंगल तुवा में है ।

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! जब **तूरे सीना** की मुक़द्दस वादी में सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام को ख़ुद **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** जूते उतार लेने का हुक्म फ़रमाए तो **मदीना** तो फिर **मदीना** है, यहां अगर नंगे पाउं रहा जाए तो क्यूं सआ़दत की बात न होगी ! करोड़ों मालिकिय्यों के पेश्वा और मश्हूर आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **मदीनए पाक** زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की गलियों में नंगे पैर चला करते थे । (الطبقاتُ الکُبریٰ لِلشَّعرانی الجزء الاول ص ۷٦) आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में कभी घोड़े पर सुवार न होते, फ़रमाते हैं : मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या

आती है कि उस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों तले रौंदूं जिस में उस के प्यारे महबूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मौजूद हैं । (या'नी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का रौज़ए अन्वर है)

(اِحیاءُ العلوم ج۱ ص ۴۸)

ऐ ख़ाके मदीना ! तू ही बता मैं कैसे पाउं रख्खूं यहां
तू ख़ाके पा सरकार की है आंखों से लगाई जाती है

हाज़िरी की तय्यारी : हाज़िरिये **रौज़ए रसूल** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले मकान वग़ैरा का बन्दो बस्त कर लीजिये, हाजत हो तो खा पी लीजिये, अल ग़रज़ हर वोह बात जो **ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ** में **मानेअ** हो उस से फ़ारिग़ हो लीजिये । अब ताज़ा **वुज़ू** कीजिये इस में **मिस्वाक** ज़रूर हो बल्कि बेहतर येह है कि ग़ुस्ल कर लीजिये, धुले हुए कपड़े बल्कि हो सके तो नया सफ़ेद लिबास, नया इमामा शरीफ़ वग़ैरा ज़ैबे तन कीजिये, सुरमा और ख़ुश्बू लगा लीजिये और मुश्क अफ़्ज़ल है, अब रोते हुए **दरबार** की त़रफ़ बढ़िये । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1223 माख़ूज़न)

ऐ लीजिये ! सब्ज़ गुम्बद आ गया : ऐ लीजिये ! वोह **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** जिसे आप ने तस्वीरों में देखा था, ख़यालों में चूमा था अब सचमुच आप की आंखों के सामने है ।

अश्कों के मोती अब निछावर ज़ाइरो करो वोह सब्ज़ गुम्बद मम्बए अन्वार आ गया

अब सर झुकाए बा अदब पढ़ते हुए दुरूद

रोते हुए आगे बढ़ो दरबार आ गया

(वसाइले बख़्शिश, स. 473)

हां ! हां ! येह वोही **सब्ज़ गुम्बद** है जिस के दीदार के लिये आ़शिक़ाने रसूल के दिल बे क़रार रहते और आंखें अश्कबार हो जाया करती हैं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **रौज़ए रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़ज़ीम जगह दुन्या के किसी मक़ाम में तो कुजा **जन्नत** में भी नहीं है ।

फ़िरदौस की बुलन्दी भी छू सके न इस को

ख़ुल्दे बरीं से ऊंचा मीठे नबी का रौज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 298)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ किताब "वसाइले बख़्शिश" के **सफ़ह़ा** 298 के ह़ाशिये में है : रौज़ा के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : बाग़ । शे'र में रौज़ा से मुराद वोह ह़िस्सए ज़मीन है जिस पर रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का जिस्मे मुअ़ज़्ज़म तशरीफ़ फ़रमा है । इस की फ़ज़ीलत बयान करते हुए फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मह़बूबे दावर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अन्वर से ज़मीन का जो ह़िस्सा लगा हुवा है । वोह का'बा शरीफ़ से बल्कि अ़र्शो कुर्सी से भी अफ़्ज़ल है । **(دُرِّمُختار ج٤ ص ٦٢)**

हो सके तो बाबुल बक़ीअ़ से ह़ाज़िर हों : अब सरापा अ-दबो होश बने, आंसू बहाते या रोना न आए तो कम अज़ कम रोने जैसी सूरत बनाए **बाबे बक़ीअ़**[1] पर ह़ाज़िर हों। "**اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه**" अ़र्ज़ कर के ज़रा ठहर जाइये। गोया सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के **शाही दरबार** में ह़ाज़िरी की इजाज़त मांग रहे हैं। अब **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم** कह कर अपना सीधा क़दम **मस्जिद शरीफ़** में रखिये और हमातन अदब हो कर दाख़िले **मस्जिदे न-बवी** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हों **इस वक़्त जो ता 'ज़ीम व अदब फ़र्ज़ है** वोह हर आ़शिक़े रसूल का दिल जानता है। हाथ, पाउं, आंख, कान, ज़बान, दिल सब ख़याले ग़ैर से पाक कीजिये और रोते हुए आगे बढ़िये, न इर्द गिर्द नज़रें घुमाइये, न ही मस्जिद के नक़्शो निगार देखिये, बस एक ही तड़प, एक ही लगन और एक ही ख़याल हो कि भागा हुवा मुजरिम अपने आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पेश होने के लिये चला है।

مدینہ

1 : येह मस्जिदे न-बवी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जानिबे मशरिक़ वाक़ेअ़ है। उ़मूमन दरबान बाबे **बक़ीअ़** से ह़ाज़िरी के लिये नहीं जाने देते लिहाज़ा लोग बाबुस्सलाम ही से ह़ाज़िर होते हैं इस त़रह़ ह़ाज़िरी की इब्तिदा सरे अक़्दस से होगी और येह ख़िलाफ़े अदब है क्यूं कि बुज़ुर्गों की ख़िदमत में क़दमों की त़रफ़ से आना ही अदब है। अगर बाबे **बक़ीअ़** से ह़ाज़िरी न हो सके तो बाबुस्सलाम से भी ह़रज नहीं। अगर भीड़ वग़ैरा न हो तो कोशिश कीजिये कि बाबे **बक़ीअ़** से ह़ाज़िरी हो जाए।

चला हूं एक मुजरिम की त़रह़ मैं जानिबे आक़ा

नज़र शरमिन्दा शरमिन्दा, बदन लरज़ीदा लरज़ीदा

नमाज़े शुक्राना : अब अगर मक्रूह वक़्त न हो और ग़-ल-बए शौक़ मोहलत दे तो दो दो रक्अ़त **तहिय्यतुल मस्जिद** व शुक्रानए बारगाहे अक़्दस अदा कीजिये, पहली रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ के बा'द قُلْ يَاۤيُّهَا الْكٰفِرُوْن और दूसरी में अल ह़म्द शरीफ़ के बा'द قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ पढ़िये।

सुनह्‌री जालियों के रू बरू : अब अ-दबो शौक़ में डूबे, गरदन झुकाए, आंखें नीची किये, रोने वाली सूरत बनाए बल्कि खुद को बज़ोर रोने पर लाते, आंसू बहाते, थर-थराते, कप-कपाते, गुनाहों की नदामत से पसीना पसीना होते, सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम की उम्मीद रखते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़-दमैने शरीफ़ैन[1] की त़रफ़ से सुनह्‌री जालियों के रू बरू मुवा-जहा शरीफ़ में (या'नी चेह्‌रए मुबारक के सामने) ह़ाज़िर हों कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मज़ारे पुर अन्वार में रू ब क़िब्ला जल्वा अफ़रोज़ हैं, मुबारक

مدینہ

1 : बाबुल बक़ीअ़ से ह़ाज़िरी मिली तो पहले क़-दमैने शरीफ़ैन आएंगे और बाबुस्सलाम से आए तो पहले सरे अक़्दस आएगा।

क़दमों की त़रफ़ से ह़ाज़िर होंगे तो सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे बेकस पनाह बराहे रास्त आप की त़रफ़ होगी और येह बात आप के लिये दोनों जहां में काफ़ी है। وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1224)

मुवा-जहा शरीफ़ पर ह़ाज़िरी[1] : अब सरापा अदब बने ज़ेरे क़िन्दील उन चांदी की कीलों के सामने जो सुनहरी जालियों के दरवाज़ए मुबा-रका में ऊपर की त़रफ़ जानिबे मशरिक़ लगी हुई हैं, क़िब्ले को पीठ किये कम अज़ कम चार हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) दूर नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए पुर अन्वार की त़रफ़ रुख़ कर के खड़े हों कि "फ़तावा आ़लमगीरी" वग़ैरा में येही अदब लिखा है कि **يَقِفُ كَمَا يَقِفُ فِى الصَّلٰوة** या'नी "सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में इस त़रह़ खड़ा हो जिस त़रह़ नमाज़ में खड़ा होता है।" यक़ीन मानिये ! सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार में सच्ची ह़क़ीक़ी दुन्यावी जिस्मानी ह़यात से उसी त़रह़ ज़िन्दा हैं जिस त़रह़ वफ़ात शरीफ़ से पहले थे और आप को भी देख रहे हैं बल्कि आप के दिल

1 : लोग उ़मूमन बड़े सूराख़ को "मुवा-जहा शरीफ़" समझते हैं बल्कि अक्सर उर्दू किताबों में भी येही लिखा है मगर रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ मुवा-जहा शरीफ़ की निशान देही की गई है।

में जो ख़यालात आ रहे हैं उन पर भी मुत्त़लअ़ (या'नी बा ख़बर) हैं। ख़बरदार ! जाली मुबारक को बोसा देने या हाथ लगाने से बचिये कि येह ख़िलाफ़े अदब है, हमारे हाथ इस क़ाबिल ही नहीं की जाली मुबारक को छू सकें, लिहाज़ा चार[4] हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) दूर रहिये, येह उन की रह़मत क्या कम है कि आप को अपने मुवा-ज-हए अक़्दस के क़रीब बुलाया ! सरकारे नामदार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे करम अगर्चे हर जगह आप की त़रफ़ थी, अब ख़ुसूसिय्यत और इस द-र-जए क़ुर्ब के साथ आप की त़रफ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1224, 1225)

दीदार के क़ाबिल तो कहां मेरी नज़र है
येह तेरी इ़नायत है जो रुख़ तेरा इधर है

बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में सलाम अ़र्ज़ कीजिये : अब अदब और शौक़ के साथ ग़मगीन और दर्द भरी आवाज़ में मगर आवाज़ इतनी बुलन्द और सख़्त न हो कि सारे आ'माल ही **ज़ाएअ़** हो जाएं, न बिल्कुल ही पस्त (या'नी धीमी) कि येह भी **सुन्नत** के ख़िलाफ़ है, मो'तदिल (या'नी दरमियानी) आवाज़ में इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللہِ

तरजमा : ऐ नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ

और ब-र-कतें। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर सलाम।

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا خَیْرَ خَلْقِ اللہِ اَلسَّلَامُ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तमाम मख़्लूक़ से बेहतर आप पर सलाम।

عَلَیْکَ یَا شَفِیْعَ الْمُذْنِبِیْنَ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ

ऐ गुनहगारों की शफ़ाअ़त करने वाले आप पर सलाम, आप पर,

وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ وَاُمَّتِکَ اَجْمَعِیْنَ

आप की आल व अस्हा़ब पर और आप की तमाम उम्मत पर सलाम।

जहां तक ज़बान साथ दे, दिल जम्ई हो मुख़्तलिफ़ अल्क़ाब के साथ सलाम अ़र्ज़ करते रहिये, अगर अल्क़ाब याद न हों तो اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ की तकरार करते (या'नी येही बार बार पढ़ते) रहिये। जिन जिन लोगों ने आप को सलाम के लिये कहा है उन का भी सलाम अ़र्ज़ कीजिये, जो जो आ़शिक़ाने रसूल येह तह़रीर पढ़ें वोह मुझ **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ का सलाम अ़र्ज़ कर दें तो मुझ गुनहगारों के सरदार पर **एह़साने अ़ज़ीम** होगा। यहां ख़ूब **दुआ़एं** मांगिये और बार बार इस त़रह़ **शफ़ाअ़त की भीक त़लब** कीजिये :

اَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَا رَسُوْلَ الله صلّى الله تعالٰى عليه واٰلہٖ وسلّم

या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप से शफ़ाअ़त का सुवाल करता हूं।

सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ **की ख़िदमत में सलाम :**

फिर मशरिक़ की जानिब (अपने सीधे हाथ की त़रफ़) आधे गज़ के क़रीब हट कर (क़रीबी छोटे सूराख़ की त़रफ़) ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के चेह्‌रए अन्वर के सामने दस्त बस्ता (या'नी उसी त़रह़ हाथ बांध कर) खड़े हो कर उन को सलाम पेश कीजिये, बेहतर येह है कि इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللهِ ط

ऐ **ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह** ! आप पर सलाम,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَزِيْرَ رَسُوْلِ اللهِ ط

ऐ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वज़ीर आप पर सलाम,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُوْلِ

ऐ ग़ारे सौर में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ !

اللّٰہِ فِی الْغَارِ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط

आप पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें ।

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में सलाम :

फिर इतना ही मज़ीद जानिबे मशरिक़ (अपने सीधे हाथ की त़रफ़) थोड़ा सा सरक कर (आख़िरी सूराख़ के सामने) ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के रू बरू अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ ط اَلسَّلَامُ

ऐ **अमीरुल मुअमिनीन** ! आप पर सलाम,

عَلَیْکَ یَا مُتَمِّمَ الْاَرْبَعِیْنَ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ

ऐ चालीस का अ़दद पूरा करने वाले ! आप पर सलाम,

یَا عِزَّ الْاِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط

ऐ इस्लाम व मुस्लिमीन की इ़ज़्ज़त ! आप पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें ।

दोबारा एक साथ शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़िदमतों में सलाम : फिर बालिश्त भर जानिबे मग़रिब या'नी अपने उलटे हाथ की त़रफ़ सरक्ये और दोनों छोटे सूराख़ों के बीच में

खड़े हो कर एक साथ सय्यिदैना सिद्दीके़ अक्बर व फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنہُما की ख़िदमतों में इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمَا یَا خَلِیْفَتَیْ رَسُوْلِ اللہِ ط اَلسَّلَامُ

ऐ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के **ख़ु-लफ़ा** ! आप दोनों पर सलाम,

عَلَیْکُمَا یَا وَزِیْرَیْ رَسُوْلِ اللہِ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمَا

ऐ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वु-ज़रा ! आप दोनों पर सलाम, ऐ **रसूलुल्लाह**

یَا ضَجِیْعَیْ رَسُوْلِ اللہِ وَ رَحْمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط

صَلَّی اللہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू में आराम फ़रमाने वाले ! (अबू बक्र व ड़मर رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنہُما) आप दोनों पर सलाम हो

اَسْئَلُکُمَا الشَّفَاعَۃَ عِنْدَ رَسُوْلِ اللہِ صَلَّی

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें। आप दोनों साह़िबान से सुवाल करता हूं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلَیْکُمَا وَبَارَکَ وَسَلَّمَ ط

के ह़ुज़ूर मेरी सिफ़ारिश कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर और आप दोनों पर दुरूद व ब-र-कत और सलाम नाज़िल फ़रमाए।

येह दुआ़एं मांगिये : येह तमाम ह़ाज़िरियां क़बूलिय्यते दुआ़ के मक़ामात हैं, यहां दुन्या व आख़िरत की भलाइयां मांगिये। अपने वालिदैन, पीरो मुर्शिद, उस्ताद, औलाद, अहले ख़ानदान,

दोस्त व अहबाब और तमाम उम्मत के लिये दुआए मग़्फ़िरत कीजिये और शहन्शाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त की भीक मांगिये, ख़ुसूसन मुवा–जहा शरीफ़ में ना'तिया अश्आ़र अ़र्ज़ कीजिये, अगर नीचे दिया हुवा मक़्तअ़ यहां सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ की त़रफ़ से **12** बार अ़र्ज़ कर दें तो एह़साने अ़ज़ीम होगा :

पड़ोसी ख़ुल्द में अ़त्तार को अपना बना लीजे

जहां हैं इतने एह़सां और एह़सां या रसूलल्लाह

"मदीनतुल मुनव्वरह" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी के 12 म–दनी फूल

﴾1﴿ मिम्बरे अत़्हर के क़रीब दुआ मांगिये ﴾2﴿ जन्नत की क्यारी में (या'नी जो जगह मिम्बर व हुज्रए मुनव्वरह के दरमियान है, उसे ह़दीस में "जन्नत की क्यारी" फ़रमाया) आ कर दो रक्अ़त नफ़्ल ग़ैरे वक़्ते मक्रूह में पढ़ कर दुआ कीजिये ﴾3﴿ जब तक मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी नसीब हो, एक सांस बेकार न जाने दीजिये ﴾4﴿ ज़रूरिय्यात के सिवा अक्सर वक़्त **मस्जिदुन्–नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में बा त़हारत ह़ाज़िर रहिये, नमाज़ व तिलावत व ज़िक्रो दुरूद में वक़्त गुज़ारिये, दुन्या की बात तो किसी भी मस्जिद में न चाहिये न कि यहां ﴾5﴿ मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में **रोज़ा** नसीब हो ख़ुसूसन गरमी में तो क्या कहना कि इस पर वा'दए शफ़ाअ़त है ﴾6﴿ यहां **हर**

नेकी एक की पचास हज़ार लिखी जाती है, लिहाज़ा इबादत में ज़ियादा कोशिश कीजिये, खाने पीने की कमी ज़रूर कीजिये और जहां तक हो सके तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) कीजिये ख़ुसूसन यहां वालों पर ﴾7﴿ क़ुरआने मजीद का कम से कम एक ख़त्म यहां और एक ह़त़ीमे का'बए मुअ़ज़्ज़मा में कर लीजिये ﴾8﴿ रौज़ए अन्वर पर नज़र इबादत है जैसे का'बए मुअ़ज़्ज़मा या क़ुरआने मजीद का देखना तो अदब के साथ इस की कसरत कीजिये और दुरूदो सलाम अ़र्ज़ कीजिये ﴾9﴿ पन्जगाना या कम अज़ कम सुब्ह़, शाम मुवा-जहा शरीफ़ में अ़र्ज़े सलाम के लिये ह़ाज़िर हों ﴾10﴿ शहर में ख़्वाह शहर से बाहर जहां कहीं गुम्बदे मुबारक पर नज़र पड़े, फ़ौरन दस्त बस्ता उधर मुंह कर के सलातो सलाम अ़र्ज़ कीजिये, बे इस के हरगिज़ न गुज़रिये कि ख़िलाफ़े अदब है ﴾11﴿ ह़त्तल वस्अ़ कोशिश कीजिये कि **मस्जिदे अव्वल** या'नी ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में जितनी थी उस में नमाज़ पढ़िये और उस की मिक़्दार **100** हाथ तूल (लम्बाई) और 100 हाथ अ़र्ज़ (चौड़ाई) (या'नी तक़रीबन 50x50 गज़) है अगर्चे बा'द में कुछ इज़ाफ़ा हुवा है, उस (या'नी इज़ाफ़ा शुदा ह़िस्से) में नमाज़ पढ़ना भी **मस्जिदुन-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही में पढ़ना है ﴾12﴿ रौज़ए अन्वर का न त़वाफ़ कीजिये, न सज्दा, न इतना झुकना कि रुकूअ़ के बराबर हो । **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम उन की इत़ाअ़त में है ।

(माख़ूज़न बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 1227 ता 1228)

आ़लमे वज्द में रक़्सां मेरा पर पर होता

काश ! मैं गुम्बदे ख़ज़रा का कबूतर होता

जाली मुबारक के रू बरू पढ़ने का विर्द : जो कोई हु़ज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की **क़ब्रे मुअ़ज़्ज़म** के रू बरू खड़ा हो कर येह आयते शरीफ़ा **एक बार** पढ़े :

﴿اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ﴾

फिर **70 मर्तबा** येह अ़र्ज़ करे : صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّمَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ फ़िरिश्ता इस के जवाब में यूं कहता है : ऐ फुलां ! तुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सलाम हो। फिर फ़िरिश्ता उस के लिये दुआ़ करता है : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की कोई ह़ाजत ऐसी न रहे जिस में येह नाकाम हो। (اَلْمَوَاهِبُ اللَّدُنِّيَة ج۳ص۴۱۲)

दुआ़ के लिये जाली मुबारक को पीठ मत कीजिये : **जब** जब सुनह्‌री जालियों के रू बरू ह़ाज़िरी की सआ़दत मिले इधर उधर हरगिज़ न देखिये और ख़ास कर जाली शरीफ़ के अन्दर झांकना तो बहुत बड़ी जुरअत है। क़िब्ले की त़रफ़ पीठ किये कम अज़ कम चार[4] हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) जाली

मुबारक से दूर खड़े रहिये और मुवा-जहा शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ कर के सलाम अ़र्ज़ कीजिये, दुआ़ भी मुवा-जहा शरीफ़ ही की त़रफ़ रुख़ किये मांगिये। बा'ज़ लोग वहां दुआ़ मांगने के लिये का'बे की त़रफ़ मुंह करने को कहते हैं, उन की बातों में आ कर हरगिज़ हरगिज़ सुनहरी जालियों की त़रफ़ आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को या'नी **का'बे के का'बे** को पीठ मत कीजिये।

का'बे की अ़-ज़-मतों का मुन्किर नहीं हूं लेकिन
का'बे का भी है का'बा मीठे नबी का रौज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 298)

पचास हज़ार ए'तिकाफ़ का सवाब : जब जब आप **मस्जिदुन-बविय्यिशशरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दाख़िल हों तो **ए'तिकाफ़** की निय्यत करना न भूलिये, इस त़रह़ हर बार आप को "पचास हज़ार नफ़्ली ए'तिकाफ़" का सवाब मिलेगा और ज़िम्नन खाना, पीना, इफ़्त़ार करना वग़ैरा भी जाइज़ हो जाएगा। ए'तिकाफ़ की निय्यत इस त़रह़ कीजिये :

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف[1] **तरजमा :** मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

---

1 : बाबुस्सलाम और बाबुर्रह़मह से मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दाख़िल हों तो सामने वाले सुतून मुबारक पर ग़ौर से देखेंगे तो सुनहरी ह़ुरूफ़ से "نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف" उभरा हुवा नज़र आएगा जो कि आ़शिक़ाने रसूल की याद दिहानी के लिये है।

रोज़ाना पांच ह़ज का सवाब : खु़सूसन चालीस नमाज़ें बल्कि तमाम फ़र्ज़ नमाज़ें **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही में अदा कीजिये कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स वुज़ू कर के मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के इरादे से निकले येह उस के लिये एक ह़ज के बराबर है।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۴۹۹ حدیث۴۱۹۱)

सलाम ज़बानी ही अ़र्ज़ कीजिये : वहां जो भी **सलाम** अ़र्ज़ करना है, वोह ज़बानी याद कर लेना मुनासिब है, किताब से देख कर **सलाम** और **दुआ़** के सीगे़ वहां पढ़ना अ़जीब सा लगता है क्यूं कि सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जिस्मानी ह़यात के साथ **हु़जरए मुबा-रका** में **क़िब्ले** की त़रफ़ रुख़ किये तशरीफ़ फ़रमा हैं और हमारे दिलों तक के ख़त़रात (या'नी ख़यालात) से आगाह हैं। इस तसव्वुर के क़ाइम हो जाने के बा'द किताब से देख कर **सलाम** वगै़रा अ़र्ज़ करना ब ज़ाहिर भी ना मुनासिब मा'लूम होता है, म-सलन आप के पीर साह़िब आप के सामने मौजूद हों तो आप उन को किताब से पढ़ पढ़ कर सलाम अ़र्ज़ करेंगे या ज़बानी ही **"या ह़ज़रत** اَلسَّلامُ عَلَیْکُم**"** कहेंगे ? उम्मीद है आप मेरा मुद्दआ़ समझ गए होंगे। **याद रखिये !** बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में बने सजे अल्फ़ाज़ नहीं बल्कि दिल देखे जाते हैं।

बुढ़िया को दीदार हो गया : मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا 1405 सि.हि. की ह़ाज़िरी में **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْهُ को एक पीर भाई मर्ह़ूम ह़ाजी इस्माईल ने येह वाक़िआ़ सुनाया था : दो या तीन साल पहले तक़रीबन 85 सालह एक **ह़ज्जन** बी सुनहरी जालियों के रू बरू सलाम अ़र्ज़ करने ह़ाज़िर हुई और अपने टूटे फूटे अल्फ़ाज़ में सलातो सलाम अ़र्ज़ करना शुरूअ़ किया, नागाह एक ख़ा़तून पर नज़र पड़ी जो किताब से देख देख कर निहायत उ़म्दा अल्क़ाब के साथ सलातो सलाम अ़र्ज़ कर रही थी, येह देख कर बेचारी अनपढ़ **बुढ़िया** का दिल डूबने लगा, अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं तो पढ़ी लिखी हूं नहीं जो अच्छे अच्छे अल्फ़ाज़ के साथ सलाम अ़र्ज़ कर सकूं, मुझ अनपढ़ का सलाम आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को कहां पसन्द आएगा ! दिल भर आया, रो धो कर चुप हो रही। रात जब सोई तो सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी ! क्या देखती है कि सिरहाने उम्मत के वाली, सरकारे आ़ली صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं, लबहाए मुबा–रका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **"मायूस क्यूं होती हो ? हम ने तुम्हारा सलाम सब से पहले क़बूल फ़रमाया है।"**

तुम उस के मददगार हो तुम उस के त़रफ़ दार　　जो तुम को निकम्मे से निकम्मा नज़र आए
लगाते हैं उस को भी सीने से आक़ा　　जो होता नहीं मुंह लगाने के क़ाबिल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल इन्तिज़ार.....! अल इन्तिज़ार.....! : सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद और हुज्रए मक़्सूरा (या'नी वोह मुबारक कमरा जिस में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर है) पर नज़र जमाना इबादत और कारे सवाब है । ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त **मस्जिदुन्न-बविय्यिशशरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में गुज़ारने की कोशिश कीजिये । मस्जिद शरीफ़ में बैठे हुए दुरूदो सलाम पढ़ते हुए हुज्रए मुत़ह्हरा पर जितना हो सके निगाहे अ़क़ीदत जमाया कीजिये और इस ह़सीन तसव्वुर में डूब जाया कीजिये गोया अ़न्क़रीब हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हुज्रए मुनव्वरह से बाहर तशरीफ़ लाने वाले हैं । हिज्रो फ़िराक़ और इन्तिज़ारे आक़ाए नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में अपने आंसूओं को बहने दीजिये ।

क्या ख़बर आज ही दीदार का अरमां निकले
अपनी आंखों को अ़क़ीदत से बिछाए रखिये

एक मेमन ह़ाजी को दीदार हो गया : सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को 1400 सि.हि. की ह़ाज़िरी में मदीनए पाक زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में बाबुल मदीना कराची के एक नौ जवान ह़ाजी ने बताया कि मैं **मस्जिदुन्न-बविय्यिशशरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज्रए मक़्सूरा के पीछे पुश्ते अत़्हर की जानिब सब्ज़ जालियों के पीछे बैठा हुवा था कि ऐन

बेदारी के आ़लम में, मैं ने देखा कि अचानक **सब्ज़ सब्ज़ जालियों** की रुकावट हट गई और ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **हुज्रए पाक** से बाहर तशरीफ़ ले आए और मुझ से फ़रमाने लगे : **"मांग क्या मांगता है ?"** मैं नूर की तजल्लियों में इस क़दर गुम हो गया कि कुछ अ़र्ज़ करने की जसारत (या'नी हिम्मत) ही न रही, **आह !** मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जल्वा दिखा कर मुझे तड़पता छोड़ कर अपने हुज्रए मुत़ह्हरा में वापस तशरीफ़ ले गए।

शरबते दीद ने इक आग लगाई दिल में तपिशे दिल को बढ़ाया है बुझाने न दिया
अब कहां जाएगा नक़्शा तेरा मेरे दिल से तह में रख्खा है इसे दिल ने गुमाने न दिया

गलियों में न थूकिये ! : मक्के मदीने की गलियों में **थूका** न कीजिये, न ही नाक साफ़ कीजिये। जानते नहीं इन गलियों से हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم गुज़रे हैं।

ओ पाए नज़र होश में आ, कूए नबी है आंखों से भी चलना तो यहां बे अ-दबी है

जन्नतुल बक़ीअ़ : जन्नतुल बक़ीअ़ शरीफ़ नीज़ जन्नतुल मअ़्ला (मक्कए मुकर्रमा) दोनों मुक़द्दस क़ब्रिस्तानों के मक़्बरों और मज़ारों को शहीद कर दिया गया है। हज़ारहा सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن और बे शुमार अहले बैते अत़्हार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم

व औलियाए किबार व उश्शाक़े ज़ार رَحِمَهُمُ اللهُ الغَفَّار के मज़ारात के नुक़ूश तक मिटा दिये गए हैं । ह़ाज़िरी के लिये अन्दर दाख़िले की सूरत में आप का पाउं مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ किसी भी सह़ाबी या आ़शिक़े रसूल के मज़ार शरीफ़ पर पड़ सकता है ! शर-ई मस्अला येह है कि आ़म मुसल्मानों की क़ब्रों पर भी पाउं रखना ह़राम है । **"रद्दुल मुह़तार"** में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें मिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है । (رَدُّالْمُحتار ج١ص٦١٢) बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना **ना जाइज़ व गुनाह** है । (دُرِّمُختار ج ٣ص١٨٣) लिहाज़ा म-दनी इल्तिजा है कि बाहर ही से सलाम अ़र्ज़ कीजिये और वोह भी जन्नतुल बक़ीअ़ के सद्र दरवाज़े (MAIN ENTRANCE) पर नहीं बल्कि उस की चार दीवारी के बाहर उस सम्त खड़े हों जहां से क़िब्ले को आप की पीठ हो ताकि मदफ़ूनीने बक़ीअ़ के चेहरे आप की त़रफ़ रहें । अब इस त़रह़

अहले बक़ीअ़ को सलाम अ़र्ज़ कीजिये

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ فَاِنَّا

तरजमा : तुम पर सलाम हो ऐ मोमिनों की बस्ती में रहने वालो ! हम भी

اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ ط اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَهْلِ

اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ तुम से आ मिलने वाले हैं । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बक़ीए ग़रक़द वालों की

الْبَقِيْعِ الْغَرْقَدِ ط اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهُمْ ط

मग़्फ़िरत फ़रमा । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी मुआफ़ फ़रमा और इन्हें भी मुआफ़ फ़रमा ।

दिलों पर ख़न्जर फिर जाता : आह ! एक वक़्त वोह था कि जब हि़जाज़े मुक़द्दस में अहले सुन्नत की "ख़िदमत" का दौर था और उस वक़्त के ख़त़ीबो इमाम भी आशिक़ाने रसूल हुवा करते थे, जुमुआ के रोज़ दौराने ख़ुत़्बा जब ख़त़ीब साहि़ब मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में रौज़ए अन्वर की त़रफ़ हाथ से इशारा करते हुए اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى هٰذَا النَّبِى ط (या'नी इस नबिय्ये मोह़तरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम हो) कहते तो हज़ारों आशिक़ाने रसूल के दिलों पर ख़न्जर फिर जाता और वोह अज़ख़ुद रफ़्तगी के आलम में रोने लग जाया करते ।

अल वदाई ह़ाज़िरी : जब मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से रुख़्सत होने की जां सोज़ खड़ी आए रोते हुए और न हो सके तो रोने जैसा मुंह बनाए मुवा-जहा शरीफ़ में ह़ाज़िर हो कर रो रो कर सलाम अ़र्ज़ कीजिये और फिर सोज़ व रिक़्क़त के साथ

यूं अ़र्ज़ कीजिये :

اَلْوَدَاعُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اَلْوَدَاعُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط
اَلْوَدَاعُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اَلْفِرَاقُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط
اَلْفِرَاقُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط اَلْفِرَاقُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ط
اَلْفِرَاقُ یَاحَبِیْبَ اللّٰہِ ط اَلْفِرَاقُ یَانَبِیَّ اللّٰہِ ط
اَلْاَمَانُ یَاحَبِیْبَ اللّٰہِ ط لَاجَعَلَہُ اللّٰہُ تَعَالٰی
اٰخِرَ الْعَھْدِ مِنْکَ وَلَا مِنْ زِیَارَتِکَ وَلَا
مِنَ الْوُقُوْفِ بَیْنَ یَدَیْکَ اِلَّا مِنْ خَیْرٍ
وَّعَافِیَۃٍ وَّصِحَّۃٍ وَّسَلَامَۃٍ اِنْ عِشْتُ
اِنْ شَآءَ اللّٰہُ تَعَالٰی جِئْتُکَ وَاِنْ مِّتُّ فَاَوْدَعْتُ
عِنْدَکَ شَھَادَتِیْ وَاَمَانَتِیْ وَعَھْدِیْ وَمِیْثَاقِیْ
مِنْ یَّوْمِنَا ھٰذَا اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَۃِ وَھِیَ شَھَادَۃُ

اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْہَدُ
اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ ط ﴿سُبْحٰنَ رَبِّکَ
رَبِّ الْعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ ج وَسَلٰمٌ عَلَی
الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۸۱﴾ ج وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۸۲﴾ ع﴾
اٰمِیْن اٰمِیْن یَارَبَّ الْعٰلَمِیْن بِحَقِّ طٰہٰ وَیٰسٓ

अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

आह ! अब वक़्ते रुख़्सत है आया अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
सद्मए हिज्र कैसे सहूंगा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

बे क़रारी बढ़ी जा रही है हिज्र की अब घड़ी आ रही है
दिल हुवा जाता है पारा पारा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

किस त़रह़ शौक़ से मैं चला था दिल का गुन्चा ख़ुशी से खिला था
आह ! अब छूटता है मदीना अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

कूए जानां की रंगीं फ़ज़ाओ ! ऐ मुअ़त्त़र मुअ़म्बर हवाओ !
लो सलाम आख़िरी अब हमारा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
काश ! क़िस्मत मेरा साथ देती मौत भी या-वरी मेरी करती
जान क़दमों पे क़ुरबान करता अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
सोज़े उल्फ़त से जलता रहूं मैं इश्क़ में तेरे घुलता रहूं मैं
मुझ को दीवाना समझे ज़माना अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
मैं जहां भी रहूं मेरे आक़ा हो नज़र में मदीने का जल्वा
इल्तिजा मेरी मक़्बूल फ़रमा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
कुछ न हुस्ने अ़मल कर सका हूं नज़्र चन्द अश्क मैं कर रहा हूं
बस येही है मेरा कुल असासा अल वदाअ़ ताजदारे मदीना
आंख से अब हुवा ख़ून जारी रूह़ पर भी है अब रन्ज त़ारी
जल्द अ़त्त़ार को फिर बुलाना अल वदाअ़ ताजदारे मदीना

अब पहले की त़रह़ शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की पाक बारगाहों

में भी सलाम अ़र्ज़ कीजिये, ख़ूब रो रो कर दुआ़एं मांगिये बार बार ह़ाज़िरी का सुवाल कीजिये और मदीने में **ईमान** व आ़फ़िय्यत के साथ मौत और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न की भीक मांगिये । बा'दे फ़राग़त रोते हुए उलटे पाउं चलिये और बार बार दरबारे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ ह़सरत भरी नज़र से देखिये जिस त़रह़ कोई बच्चा अपनी मां की गोद से जुदा होने लगे तो बिलक बिलक कर रोता और उस की त़रफ़ उम्मीद भरी निगाहों से देखता है कि मां अब बुलाएगी, कि अब बुलाएगी और बुला कर शफ़्क़त से सीने से चिमटा लेगी । **ऐ काश !** रुख़्सत के वक़्त ऐसा हो जाए तो कैसी खु़श बख़्ती है, कि मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बुला कर अपने सीने से लगा लें और बे क़रार रूह़ क़दमों में क़ुरबान हो जाए ।

है तमन्नाए अ़त्त़ार या रब उन के क़दमों में यूं मौत आए
झूम कर जब गिरे मेरा लाशा थाम लें बढ़ के शाहे मदीना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ज़ियारतें

विलादत गाहे सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : ह़ज़रते अ़ल्लामा कुत़्बुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत गाह पर दुआ़ क़बूल होती है। (بلدالامین ص۲۰۱) यहां पहुंचने का आसान त़रीक़ा येह है कि आप **कोहे मर्वह** के किसी भी क़रीबी दरवाज़े से बाहर आ जाइये। सामने नमाज़ियों के लिये बहुत बड़ा इह़ात़ा बना हुवा है, इह़ात़े के उस पार येह मकाने आ़लीशान अपने जल्वे लुटा रहा है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दूर ही से नज़र आ जाएगा। ख़लीफ़ा हारून रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد की वालिदए मोह़-त-रमा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने यहां मस्जिद ता'मीर करवाई थी। आज कल इस मकाने अ़-ज़मत निशान की जगह लायब्रेरी क़ाइम है और उस पर येह बोर्ड लगा हुवा है : "مَكْتَبَةُ مَكَّةَ الْمُكَرَّمَة"

ज-बले अबू क़ुबैस : येह दुन्या का सब से पहला पहाड़ है, मस्जिदुल ह़राम के बाहर सफ़ा व मर्वह के क़रीब वाक़ेअ़ है। इस पहाड़ पर दुआ़ क़बूल होती है, अहले मक्का क़ह़त़ साली के मौक़अ़ पर इस पर आ कर दुआ़ मांगते थे। ह़दीसे पाक में है कि **ह़-जरे अस्वद** जन्नत से यहीं नाज़िल हुवा था (الترغیب والترہیب ج۲ص۱۲۵احدیث۲۰) इस पहाड़ को

''अल अमीन'' भी कहा गया है कि ''तूफ़ाने नूह़'' में ह़-जरे अस्वद इस पहाड़ पर ब ह़िफ़ाज़ते तमाम तशरीफ़ फ़रमा रहा, का'बए मुशर्रफ़ा की ता'मीर के मौक़अ़ पर इस पहाड़ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام को पुकार कर अ़र्ज़ की : ''ह़-जरे अस्वद इधर है ।'' (بلدالامین ص۲۰۴بتغیر قلیل) मन्कूल है : हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी पहाड़ पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर **चांद** के दो टुकड़े फ़रमाए थे । चूंकि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا पहाड़ों के दरमियान घिरा हुवा है चुनान्चे इस पर से चांद देखा जाता था पहली रात के चांद को हिलाल कहते हैं लिहाज़ा इस जगह पर बतौरे यादगार **मस्जिदे हिलाल** ता'मीर की गई । बा'ज़ लोग इसे मस्जिदे बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ कहते हैं । **وَاللّٰہُ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ۔ पहाड़ पर अब शाही मह़ल ता'मीर कर दिया गया है, और अब उस मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत नहीं हो सकती । 1409 सि.हि. के मौसिमे ह़ज में इस मह़ल के क़रीब बम के धमाके हुए थे और कई हुज्जाजे किराम ने जामे शहादत नोश किया था, इस लिये अब मह़ल के गिर्द सख़्त पहरा रहता है । मह़ल की ह़िफ़ाज़त के पेशे नज़र इसी पहाड़ की सुरंगों में बनाए हुए वुज़ूख़ाने भी ख़त्म कर दिये गए हैं । एक रिवायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इसी **ज-बले अबू क़ुबैस** पर वाक़ेअ़ **''ग़ारुल कन्ज़''** में मदफ़ून हैं

जब कि एक मुस्तनद रिवायत के मुत़ाबिक़ **मस्जिदे ख़ैफ़** में दफ़्न हैं जो कि **मिना** शरीफ़ में है।

وَاللّٰہُ تعالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم۔عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم۔

ख़दी-जतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا **का मकाने रह़मत निशान : मक्के** मदीने के सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब तक मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में रहे इसी मकाने आ़लीशान में सुकूनत पज़ीर रहे। सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इ़लावा तमाम औलाद ब शुमूल शहज़ादिये कौनैन बीबी **फ़ात़िमा** ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की यहीं विलादत हुई। सय्यिदुना **जिब्रईले** अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारहा इस मकाने आ़लीशान के अन्दर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी दी, **हुज़ूरे अकरम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से नुज़ूले वह़्य इसी में हुवा। **मस्जिदे ह़राम** के बा'द मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में इस से बढ़ कर अफ़्ज़ल कोई मक़ाम नहीं। मगर सद करोड़ बल्कि अरबों खरबों अफ़्सोस ! कि अब इस के निशान तक मिटा दिये गए हैं और लोगों के चलने के लिये यहां हमवार फ़र्श बना दिया गया है। **मर्वह** की पहाड़ी के क़रीब वाक़ेअ़ बाबुल मर्वह से निकल कर बाईं त़रफ़ (LEFT SIDE) ह़सरत भरी निगाहों से सिर्फ़ इस मकाने अ़र्श निशान की फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर लीजिये।

गा़रे ज-बले सौर : येह ग़ार मुबारक **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की दाईं जानिब मह़ल्लए मस्फ़ला की त़रफ़ कमो बेश चार4 किलो मीटर पर वाक़ेअ़ "ज-बले सौर" में है। येह वोह मुक़द्दस ग़ार है जिस का ज़िक्र क़ुरआने करीम में है, मक्के मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने यारे ग़ार व यारे मज़ार ह़ज़रते **सय्यिदुना सिद्दीक़े** अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ ब वक़्ते हिजरत यहां **तीन रात** क़ियाम पज़ीर रहे। जब दुश्मन तलाशते हुए **ग़ारे सौर** के मुंह पर आ पहुंचे तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ग़मज़दा हो गए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **!** दुश्मन इतने क़रीब आ चुके हैं कि अगर वोह अपने क़दमों की त़रफ़ नज़र डालेंगे तो हमें देख लेंगे, सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया : **لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا** **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ग़म न खा बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है। (پ۱۰،التوبہ:۴۰) इसी **ज-बले सौर** पर क़ाबील ने सय्यिदुना **हाबील** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को शहीद किया।

ग़ारे ह़िरा : ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ुहूरे रिसालत से पहले यहां ज़िक्रो फ़िक्र में मश्ग़ूल रहे हैं। येह क़िब्ला रुख़ वाक़ेअ़ है। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर पहली वह़्य इसी ग़ार में उतरी, जो कि वोह اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ से مَا لَمْ يَعْلَمْ तक पांच आयतें हैं। येह

ग़ार मुबारक मस्जिदुल ह़राम से जानिबे मशरिक़ तक़रीबन तीन मील पर वाके़अ़ "ज-बले ह़िरा" पर वाके़अ़, इस मुबारक पहाड़ को **ज-बले नूर** भी कहते हैं। "ग़ारे ह़िरा" ग़ारे सौर से अफ़्ज़ल है क्यूं कि ग़ारे सौर ने तीन[3] दिन तक सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम चूमे जब कि **ग़ारे ह़िरा** सुल्त़ाने दो सरा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा ब-र-कत से ज़ियादा अ़र्सा मुशर्रफ़ हुवा।

क़िस्मते सौरो ह़िरा की ह़िर्स है
चाहते हैं दिल में गहरा ग़ार हम

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

दारे अरक़म : दारे अरक़म कोहे सफ़ा के क़रीब वाके़अ़ था। जब कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार की त़रफ़ से ख़त़रात बढ़े तो सरवरे काएनात صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इसी में पोशीदा त़ौर पर तशरीफ़ फ़रमा रहे। इसी मकाने आ़लीशान में कई साहि़बान मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। **सय्यिदुश्शु-हदा** ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़-मरे फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इसी मकाने ब-र-कत निशान में दाख़िले इस्लाम हुए। इसी में येह आयते मुबा-रका يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ۠ (۶۴) नाज़िल हुई। ख़लीफ़ा हारून रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد की वालिदए मोह़-त-रमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا ने इस जगह पर **मस्जिद** बनवाई। बा'द के कई

खु–लफ़ा अपने अपने दौर में इस की तज़्ईन में ह़िस्सा लेते रहे। अब येह तौसीअ़ में शामिल कर लिया गया है और कोई अ़लामत नहीं मिलती।

मह़ल्लए मस्फ़ला : येह मह़ल्ला बड़ा तारीख़ी है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام यहीं रहा करते थे, ह़ज़राते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ व ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم भी इसी मह़ल्लए मुबा–रका में क़ियाम पज़ीर थे। येह मह़ल्ला ख़ानए का'बा के ह़िस्सए दीवार "मुस्तजार" की जानिब वाक़ेअ़ है।

जन्नतुल मअ़ला : जन्नतुल बक़ीअ़ के बा'द **जन्नतुल मअ़ला** दुन्या का सब से अफ़्ज़ल क़ब्रिस्तान है। यहां **उम्मुल मुअमिनीन ख़दी–जतुल कुब्रा**, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और कई सह़ाबा व ताबिईन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن और औलिया व सालिह़ीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن के मज़ाराते मुक़द्दसा हैं। अब इन के कुब्बे (या'नी गुम्बद) वग़ैरा शहीद कर दिये गए हैं, मज़ारात मिस्मार कर के उन पर रास्ते निकाले गए हैं। लिहाज़ा बाहर रह कर दूर ही से इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ الدِّیَارِ مِنَ

सलाम हो आप पर ऐ क़ब्रों में रहने वालो !

اَلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰہُ

मोमिनो और मुसल्मानो ! और हम भी اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

بِکُمْ لَاحِقُوْنَ ط نَسْئَلُ اللّٰہَ لَنَا وَلَکُمُ الْعَافِیَۃَ ط

आप से मिलने वाले हैं। हम **अलाह** عَزَّوَجَلَّ के पास आप की और अपनी आ़फ़िय्यत के त़ालिब हैं।

अपने लिये अपने वालिदैन और तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत के लिये दुआ़ मांगिये और बिल ख़ुसूस **अहले जन्नतुल मअ़्ला** के लिये ईसाले सवाब कीजिये। इस क़ब्रिस्तान में दुआ़ क़बूल होती है।

मस्जिदे जिन्न : येह मस्जिद जन्नतुल मअ़्ला के क़रीब वाक़ेअ़ है। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से नमाज़े फ़ज्र में कु़रआने पाक की तिलावत सुन कर यहां **जिन्नात** मुसल्मान हुए थे।

मस्जिदुर्रायह : येह मस्जिदे जिन्न के क़रीब ही सीधे हाथ की त़रफ़ है। "**रायह**" अ़-रबी में झन्डे को कहते हैं। येह वोह तारीख़ी मक़ाम है जहां **फ़त्हे मक्का** के मौक़अ़ पर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना झन्डा शरीफ़ नस्ब फ़रमाया था।

मस्जिदे ख़ैफ़ : येह मिना शरीफ़ में वाक़ेअ़ है। ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर हमारे प्यारे प्यारे **आक़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां नमाज़ अदा फ़रमाई है। रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **صَلّٰی فِیْ مَسْجِدِ الْخَیْفِ سَبْعُوْنَ نَبِیًّا** मस्जिदे ख़ैफ़ में 70 अम्बिया (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने नमाज़ अदा फ़रमाई । (مُعجَم اَوسط ج٤ص١١٧حدیث٥٤٠٧) और फ़रमाया : **فِی الْمَسْجِدِ الْخَیْفِ قَبْرُ سَبْعِیْنَ نَبِیًّا** मस्जिदे ख़ैफ़ में 70 अम्बिया (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की क़ब्रें हैं। (مُعجَم کبیر ج١٢ ص٣١٦حدیث ١٣٥٢٥) अब इस मस्जिद शरीफ़ की काफ़ी तौसीअ़ हो चुकी है। ज़ाइरीने किराम को चाहिये कि बसद अ़क़ीदतो एह़तिराम इस मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत करें, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमतों में इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करें : **اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَااَنْبِیَاءَ اللّٰہِ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ** फिर ईसाले सवाब कर के दुआ़ मांगें।

मस्जिदे जिइर्राना : मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا से जानिबे त़ाइफ़ तक़रीबन 26 किलो मीटर पर वाक़ेअ़ है। आप भी यहां से उ़म्रे का एह़राम बांधिये कि फ़त्ह़े मक्का के बा'द त़ाइफ़ शरीफ़ फ़त्ह़ कर के वापसी पर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां से **उ़म्रे** का एह़राम ज़ैबे

तन फ़रमाया था। यूसुफ़ बिन माहक عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق फ़रमाते हैं : मक़ामे जिइर्राना से 300 अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उ़म्रे का एह़राम बांधा है, सरकारे नामदार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिइर्राना पर अपना अ़सा मुबारक गाड़ा जिस से पानी का चश्मा उबला जो निहायत ठन्डा और मीठा था। (بلدالامین ص۲۲۱، اخبار مکہ، جزء۵ ص ۶۲، ۶۹) मश्हूर है उस जगह पर कूंआं है। सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़ाइफ़ से वापसी पर यहां क़ियाम किया और यहीं माले ग़नीमत भी तक़्सीम फ़रमाया। आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने 28 शव्वालुल मुकर्रम को यहां से उ़म्रे का एह़राम बांधा था। (بلدالامین ص۲۲۰، ۲۲۱) इस जगह की निस्बत कुरैश की एक औ़रत की त़रफ़ है जिस का लक़ब जिइर्राना था। (ایضاً ص۱۳۷) अ़वाम इस मक़ाम को "बड़ा उ़म्रह" बोलते हैं। येह निहायत ही पुरसोज़ मक़ाम है, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی "अख़्बारुल अख़्यार" में नक़्ल करते हैं कि मेरे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने मुझे ताकीद फ़रमाई है कि मौक़अ़ मिलने पर **जिइर्राना** से ज़रूर उ़म्रे का एह़राम बांधना कि येह ऐसा **मु-तबर्रक** मक़ाम है कि मैं ने यहां एक रात के मुख़्तसर से ह़िस्से के अन्दर सो से ज़ाइद बार मदीने के ताजदार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़्वाब में दीदार किया है۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ ह़ज़रते सय्यिदुना

शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का मा'मूल था कि उ़म्रे का एह़राम बांधने के लिये रोज़ा रख कर पैदल **जिइर्राना** जाया करते थे। (مُلَخَّص از اخبار الاخیار ص۲۷۸)

मज़ारे मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **: मदीना** रोड पर ''नवारिया'' के क़रीब वाक़ेअ़ है। ता दमे तह़रीर यहां की ह़ाज़िरी का एक त़रीक़ा येह है कि आप बस 2 A या 13 में सुवार हो जाइये, येह बस मदीना रोड पर तन्ई़म या'नी मस्जिदे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से गुज़रती हुई आगे बढ़ती है, मस्जिदुल ह़राम से तक़्रीबन 17 किलो मीटर पर इस का आख़िरी स्टोप ''नवारिया'' है, यहां उतर जाइये और पलट कर रोड के उसी कनारे पर मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ चलना शुरूअ़ कीजिये, दस या पन्दरह मिनट चलने के बा'द एक पोलीस चेक पोस्ट (नुक्तए तफ़्तीश) है फिर मौक़िफ़े हुज्जाज बना हुवा है इस से थोड़ा आगे रोड की उसी जानिब एक चार दीवारी नज़र आएगी, यहीं उम्मुल मुअमिनीन **ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार है। येह मज़ारे मुबारक सड़क के बीच में है। लोगों का कहना है कि सड़क की ता'मीर के लिये इस मज़ार शरीफ़ को शहीद करने की कोशिश की गई तो ट्रेक्टर (TRACTOR) उलट जाता था, नाचार यहां चार दीवारी बना दी गई। हमारी प्यारी प्यारी अम्मीजान सय्यि-दतुना मैमूना

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की **करामत** मरह़बा !

अहले इस्लाम की मा-दराने शफ़ीक़

बानुवाने त़हारत पे लाखों सलाम

"या नबी ! चश्मे करम" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से मस्जिदुल ह़राम में नमाज़े मुस्त़फ़ा के 11 मक़ामात

《1》 **बैतुल्लाह** शरीफ़ के अन्दर 《2》 मक़ामे इब्राहीम के पीछे 《3》 **मत़ाफ़** के कनारे पर **ह़-जरे अस्वद** की सीध में 《4》 ह़त़ीम और **बाबुल का'बा** के दरमियान **रुक्ने इराक़ी** के क़रीब 《5》 मक़ामे हुफ़रह पर जो बाबुल का'बा और ह़त़ीम के दरमियान दीवारे का'बा की जड़ में है । इस मक़ाम को ''मक़ामे इमामते जिब्राईल'' भी कहते हैं। शहन्शाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी मक़ाम पर सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیۡہِ السَّلَام को पांच नमाज़ों में इमामत का शरफ़ बख़्शा । इसी मुबारक मक़ाम पर सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ''ता'मीरे का'बा'' के वक़्त मिट्टी का गारा बनाया था 《6》 **बाबुल का'बा** की त़रफ़ रुख़ कर के । (दरवाज़ए का'बा की सीध में नमाज़ अदा करना तमाम अत़राफ़ की सीध से अफ़्ज़ल है[1]) 《7》 मीज़ाबे रह़मत की त़रफ़ रुख़

مدینہ

1 : कहा जाता है : पाक व हिन्द दरवाज़ए का'बा ही की सम्त वाक़ेअ़ हैं ।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحۡسَانِہٖ ط وَاللّٰہُ تعالٰی اَعۡلَمُ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

कर के। (कहा जाता है कि मज़ारे ज़ियाबार में सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए पुर अन्वार इसी जानिब है) 《8》 तमाम ह़त़ीम में ख़ुसूसन **मीज़ाबे रह़मत** के नीचे 《9》 **रुक्ने अस्वद** और **रुक्ने यमानी** के दरमियान 《10》 **रुक्ने शामी** के क़रीब इस त़रह़ कि "बाबे उ़म्रह" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पुश्ते अक्दस के पीछे होता। ख़्वाह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم "ह़त़ीम" के अन्दर हो कर नमाज़ अदा फ़रमाते या बाहर 《11》 ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नमाज़ पढ़ने के मक़ाम पर जो कि **रुक्ने यमानी** के दाईं या बाईं त़रफ़ है और ज़ाहिर तर येह है कि मुसल्लाए आदम "**मुस्तजार**" पर है।

(किताबुल ह़ज, स. 274)

मदीनए मुनव्वरह की ज़ियारतें

रौ–ज़तुल जन्नह : ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज्रए मुबा–रका (जिस में सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ारे पुर अन्वार है) और मिम्बरे नूरबार (जहां आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया करते थे) का दरमियानी ह़िस्सा जिस का तूल (या'नी लम्बाई) 22 मीटर और

अ़र्ज़ (चौड़ाई) 15 मीटर है **रौ-ज़तुल जन्नह** या'नी ''जन्नत की क्यारी'' है। चुनान्चे हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **مَا بَیْنَ بَیْتِیْ وَمِنْبَرِیْ رَوْضَۃٌ مِّنْ رِیَاضِ الْجَنَّۃِ ـ** या'नी मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। (بُخاری ج۱ ص ۴۰۲ حدیث ۱۱۹۵) आ़म बोलचाल में लोग इसे ''**रियाज़ुल जन्नह**'' कहते हैं मगर अस्ल लफ़्ज़ ''**रौ-ज़तुल जन्नह**'' है।

येह प्यारी प्यारी क्यारी तेरे ख़ाना बाग़ की
सर्द इस की आबो ताब से आतश सक़र है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मस्जिदे क़ुबा : मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से तक़रीबन तीन किलो मीटर जुनूब मग़रिब की त़रफ़ ''क़ुबा'' नामी एक क़दीमी गाउं है जहां येह **मु-तबर्रक** मस्जिद बनी हुई है, क़ुरआने करीम और अह़ादीसे सह़ीह़ा में इस के फ़ज़ाइल निहायत एहतिमाम से बयान फ़रमाए गए हैं। आ़शिक़ाने रसूल **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से दरमियानी चाल चल कर पैदल तक़रीबन 40 मिनट में मस्जिदे क़ुबा पहुंच सकते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में है :

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर हफ़्ते कभी पैदल तो कभी सुवारी पर **मस्जिदे क़ुबा** तशरीफ़ ले जाते थे।

(بُخاری ج ۱ ص۴۰۲ حدیث۱۱۹۳)

उ़म्रे का सवाब : दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** ﴾1﴿ मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ना **उ़म्रे** के बराबर है **(ترمذی ج۱ ص۳۴۸ حدیث۳۲۴)** ﴾2﴿ जिस शख़्स ने अपने घर में वुज़ू किया फिर मस्जिदे क़ुबा में जा कर नमाज़ पढ़ी तो उसे **उ़म्रे** का सवाब मिलेगा। **(ابنِ ماجه ج۲ ص۱۷۵ حدیث۱۴۱۲)**

मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ग़ज़्वए उहुद (3 सि.हि.) में शहीद हुए थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार उहुद शरीफ़ के क़रीब वाक़ेअ़ है। साथ ही ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन **जह़ूश** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मज़ारात भी हैं। नीज़ ग़ज़्वए उहुद में 70 सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने जामे शहादत नोश किया था उन में से बेश्तर शु-हदाए उहुद भी साथ ही बनी हुई चार दीवारी में हैं।

शु–हदाए उहुद عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان **को सलाम करने की फ़ज़ीलत : सय्यिदुना** शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی नक़्ल करते हैं : जो शख़्स इन शु–हदाए उहुद से गुज़रे और इन को सलाम करे येह क़ियामत तक उस पर सलाम भेजते रहते हैं । शु–हदाए उहुद عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان और बिल ख़ुसूस मज़ारे सय्यिदुश्शु–हदा सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से बारहा **जवाबे सलाम** की आवाज़ सुनी गई है ।

(جذبُ الْقلوب ص۱۷۷)

सय्यिदुना ह़म्ज़ा की ख़िदमत में सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا سَیِّدَنَا حَمۡزَۃُ ؕ اَلسَّلَامُ

तरजमा : सलाम हो आप पर ऐ सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ । सलाम

عَلَیۡکَ یَا عَمَّ رَسُوۡلِ اللّٰہِ ؕ اَلسَّلَامُ عَلَیۡکَ

हो आप पर ऐ मोह़तरम चचा **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के, सलाम हो

یَا عَمَّ نَبِیِّ اللّٰہِ ؕ اَلسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا عَمَّ

आप पर ऐ अ़म्मे बुज़ुर्ग–वार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के, सलाम हो आप पर ऐ चचा

حَبِیْبِ اللّٰہِ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا عَمَّ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के, सलाम हो आप पर ऐ चचा

الْمُصْطَفٰی ط اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدَ الشُّھَدَآءِ

मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के, सलाम हो आप ऐ सरदार शहीदों के

وَیَا اَسَدَ اللّٰہِ وَاَسَدَ رَسُوْلِہٖ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ

और ऐ शेर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के और शेर उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के। सलाम

یَا سَیِّدَنَا عَبْدَ اللّٰہِ بْنَ جَحْشٍ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ

हो आप पर ऐ सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन **जह़्श** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ, सलाम हो आप पर

یَا مُصْعَبَ بْنَ عُمَیْرٍ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ یَا

ऐ मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ । सलाम हो ऐ

شُھَدَآءَ اُحُدٍ کَآفَّۃً عَآمَّۃً وَّرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط

शु-हदाए उह़ुद आप सभी पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें।

शु-हदाए उहुद عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को मज्मूई सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ یَا شُہَدَآءُ یَا سُعَدَآءُ

तरजमा : सलाम हो आप पर ऐ शहीदो ! ऐ नेक बख़्तो !

یَا نُجَبَآءُ یَا نُقَبَآءُ یَآ اَھۡلَ الصِّدۡقِ وَالۡوَفَآءِ ط

ऐ शरीफ़ो ! ऐ सरदारो ! ऐ मुजस्समे सिद्क़ो वफ़ा !

اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ یَا مُجَاھِدِیۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللہِ

सलाम हो आप पर ऐ मुजाहिदो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद का हक़ अदा करने वालो !

حَقَّ جِھَادِہٖ ط ﴿سَلٰمٌ عَلَیۡکُمۡ بِمَا صَبَرۡتُمۡ فَنِعۡمَ

﴿**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही

عُقۡبَی الدَّارِ ﴿۲۴﴾ ط﴾ اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ یَا شُہَدَآءَ

ख़ूब मिला﴾ सलाम हो ऐ शु-हदाए

اُحُدٍ کَآفَّۃً عَآمَّۃً وَّ رَحۡمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط

उहुद आप सभी पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें नाज़िल हों।

ज़ियारतों पर ह़ाज़िरी के दो त़रीक़े : मीठे मीठे मक्के मदीने के ज़ाइरो ! ज़ियारतों और इन के पतों को ब ख़ौफ़े त़वालते **रफ़ीकुल मो'तमिरीन** दर्ज नहीं किया, शाइक़ीन आ़शिक़ाने रसूल, ज़ियारात और ईमान अफ़रोज़ हि़कायात की मा'लूमात के लिये तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब, **"आ़शिक़ाने रसूल की हि़कायतें मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें"** का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और अपने ईमान को गर्माएं । अलबत्ता किताब पढ़ कर हर शख़्स ज़ियारात के मक़ामात पर पहुंच जाए येह दुश्वार है । ज़ियारत की दो सूरतें हैं : एक तो येह कि **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाहर सुब्ह़ गाड़ियों वाले : **ज़ियारह ! ज़ियारह !** की सदाएं लगाते रहते हैं, आप उन की गाड़ियों में सुवार हो जाइये । येह आप को मसाजिदे ख़म्सा, मस्जिदे क़ुबा और मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ले जाएंगे । दूसरी येह कि **मक्के मदीने** की मज़ीद ज़ियारतों के लिये आप को ऐसे आदमी तलाश करने होंगे जो उजरत ले कर ज़ियारतें करवाते हों ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जराइम और इन के कफ़्फ़ारे

सुवाल व जवाब के मुत़ा-लए से क़ब्ल चन्द ज़रूरी **इस्ति़लाह़ात** वग़ैरा ज़ेह्न नशीन कर लीजिये।

दम वग़ैरा की ता 'रीफ़ :

﴾1﴿ **दम** या'नी एक बकरा। (इस में नर, मादा, दुम्बा, भेड़, नीज़ गाय या ऊंट का सातवां हि़स्सा सब शामिल हैं)

﴾2﴿ **ब-दना** या'नी ऊंट या गाय। (इस में बैल, भेंस वग़ैरा शामिल हैं)

गाय बकरा वग़ैरा येह तमाम जानवर उन ही शराइत़ के हों जो क़ुरबानी में हैं।

﴾3﴿ **स-दक़ा** या'नी स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार। आज कल के ह़िसाब से स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार 2 किलो में से 80 ग्राम कम गन्दुम या उस का आटा या उस की रक़म या उस के दुगने जव या खजूर या उस की रक़म है।

दम वग़ैरा में रिआयत : अगर बीमारी, सख़्त सर्दी, सख़्त गरमी, फोड़े और ज़ख़्म या जूओं की शदीद तक्लीफ़ की वजह से कोई जुर्म हुवा तो उसे "जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी" कहते हैं। अगर कोई

''जुर्मे गै़र इख़्तियारी'' सादिर हुवा जिस पर दम वाजिब होता है तो इस सूरत में इख़्तियार है कि चाहे तो **दम** दे दे और अगर चाहे तो **दम** के बदले **छ मिस्कीनों को स-दक़ा** दे दे। अगर एक ही मिस्कीन को छ स-दक़े दे दिये तो एक ही शुमार होगा। लिहाज़ा येह ज़रूरी है कि अलग अलग छ मिस्कीनों को दे। **दूसरी रिआयत** येह है कि अगर चाहे तो दम के बदले छ मसाकीन को दोनों वक़्त पेट भर कर खाना खिला दे। **तीसरी रिआयत** येह है कि अगर स-दक़ा वगै़रा नहीं देना चाहता तो तीन रोज़े रख ले ''दम'' अदा हो गया। अगर कोई ऐसा जुर्मे गै़र इख़्तियारी किया जिस पर स-दक़ा वाजिब होता है तो इख़्तियार है कि स-दक़े के बजाए **एक रोज़ा** रख ले।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1162)

दम, स-दक़े और रोज़े के ज़रूरी मसाइल : अगर कफ़्फ़ारे के रोज़े रखें तो येह शर्त़ है कि रात से या'नी सुब्हे़ सादिक़ से पहले पहले येह निय्यत कर लें कि येह फ़ुलां कफ़्फ़ारे का रोज़ा है। इन ''रोज़ों'' के लिये न एह़राम शर्त़ है न ही इन का पै दर पै होना। स-दक़े और रोज़े की अदाएगी अपने वत़न में भी कर सकते हैं, अलबत्ता **स-दक़ा** और खाना अगर ह़रम के मसाकीन को पेश कर दिया जाए तो येह अफ़्ज़ल है। **दम** और **ब-दना** के जानवर का ह़रम में ज़ब्ह़ होना शर्त़ है। शुक्राने की क़ुरबानी का गोश्त

आप ख़ुद भी खाइये, मालदार को भी खिलाइये और मसाकीन को भी पेश कीजिये, मगर कफ़्फ़ारे या'नी "दम" और "ब-दने" वग़ैरा का गोश्त सिर्फ़ मोह़ताजों का ह़क़ है, न ख़ुद खा सकते हैं न ग़नी को खिला सकते हैं। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1162, 1163)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरिये : बा'ज़ नादान जान बूझ कर "जुर्म" करते हैं और कफ़्फ़ारा भी नहीं देते। यहां **दो गुनाह** हुए, एक तो जान बूझ कर जुर्म करने का और दूसरा कफ़्फ़ारा न देने का। ऐसों को कफ़्फ़ारा भी देना होगा और तौबा भी वाजिब होगी। **हां** मजबूरन जुर्म करना पड़ा या बे ख़याली में हो गया तो कफ़्फ़ारा काफ़ी है गुनाह नहीं हुवा इस लिये तौबा भी वाजिब नहीं और येह भी याद रखिये कि जुर्म चाहे याद से हो या भूले से, इस का जुर्म होना जानता हो या न जानता हो, ख़ुशी से हो या मजबूरन, सोते में हो या जागते में, बेहोशी में हो या होश में, अपनी मरज़ी से किया हो या दूसरे के ज़रीए़ करवाया हो हर सूरत में **कफ़्फ़ारा** लाज़िमी है, अगर नहीं देगा तो गुनहगार होगा। जब ख़र्च सर पर आता है तो बा'ज़ लोग येह भी कह दिया करते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमाएगा !" और फिर वोह दम वग़ैरा नहीं देते। ऐसों को सोचना चाहिये कि कफ़्फ़ारात शरीअ़त ही ने वाजिब किये हैं और जान बूझ कर टालम टोल करना शरीअ़त ही की ख़िलाफ़ वर्ज़ी है जो कि सख़्त तरीन जुर्म है। बा'ज़ माल

के मतवाले नादान हुज्जाज, उ़-लमाए किराम से यहां तक पूछते सुनाई देते हैं कि **सिर्फ़ गुनाह है ना ! दम तो वाजिब नहीं ?** (مَعَاذَاللّٰه) सद करोड़ अफ़्सोस ! चन्द सिक्के बचाने ही की फ़िक्र है, गुनाह के सबब होने वाले सख़्त अ़ज़ाब के इस्तिह़्क़ाक़ की कोई परवाह नहीं, **गुनाह** को हलका जानना बहुत सख़्त बात बल्कि बा'ज़ सूरतों में **कुफ़्र** है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ म-दनी फ़िक्र नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

त़वाफ़ के बारे में मु-तफ़र्रिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : भीड़ के सबब या बे ख़याली में किसी **त़वाफ़** के दौरान थोड़ी देर के लिये अगर सीना या पीठ का'बे की त़रफ़ हो जाए तो क्या करें ?

जवाब : **त़वाफ़** में सीना या पीठ किये जितना फ़ासिला तै़ किया हो उतने फ़ासिले का इआ़दा (या'नी दोबारा करना) वाजिब है और अफ़्ज़ल येह है कि वोह फेरा ही नए सिरे से कर लिया जाए।

इस्तिलामे ह़जर में हाथ कहां तक उठाएं ?

सुवाल : त़वाफ़ में ह़-जरे अस्वद के सामने हाथ कन्धों तक उठाना सुन्नत है या नमाज़ी की त़रह़ कानों तक ?

जवाब : इस में उ़-लमा के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। ''फ़तावा ह़ज व उ़म्रह'' में जुदा जुदा अक़्वाल नक़्ल करते हुए लिखा है : कानों तक हाथ उठाना मर्द के लिये है क्यूं कि

वोह नमाज़ के लिये भी कानों तक हाथ उठाता है और औरत कन्धों तक हाथ उठाएगी इस लिये कि वोह नमाज़ के लिये यहीं तक हाथ उठाती है।

(फ़तावा हज व उम्रह, हिस्सए अव्वल, स. 127)

सुवाल : नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर त़वाफ़ करना कैसा ?

जवाब : मुस्तह़ब नहीं है, बचना मुनासिब है।

त़वाफ़ में फेरों की गिनती याद न रही तो ?

सुवाल : अगर दौराने त़वाफ़ फेरों की गिनती भूल गए या ता'दाद के बारे में शक वाक़ेअ़ हुवा इस परेशानी का क्या ह़ल है ?

जवाब : अगर येह त़वाफ़ फ़र्ज़ (म-सलन उ़म्रे का त़वाफ़ या त़वाफ़े ज़ियारत) या वाजिब (म-सलन त़वाफ़े वदाअ़) है तो नए सिरे से शुरूअ़ कीजिये, अगर किसी एक आ़दिल शख़्स ने बता दिया कि इतने फेरे हुए तो उस के क़ौल पर अ़मल कर लेना बेहतर है और दो आ़दिल ने बताया तो उन के कहने पर ज़रूर अ़मल करे। और अगर येह त़वाफ़े फ़र्ज़ या वाजिब नहीं म-सलन त़वाफ़े क़ुदूम (कि क़ारिन व मुफ़्रिद के लिये सुन्नते मुअक्कदा है) या कोई नफ़्ली त़वाफ़ है तो ऐसे मौक़अ़ पर गुमाने ग़ालिब पर अ़मल कीजिये। (رَدُّالْمُحتار ج ٣ ص ٥٨٢)

दौराने त़वाफ़ वुज़ू टूट जाए तो क्या करे ?

सुवाल : अगर तीसरे फेरे में वुज़ू टूट गया और नया वुज़ू करने

चले गए तो अब वापस आ कर किस त़रह़ त़वाफ़ शुरूअ़ करें ?

जवाब : चाहें तो सातों फेरे नए सिरे से शुरूअ़ करें और येह भी इख़्तियार है कि जहां से छोड़ा वहीं से शुरूअ़ करें। **चार** से कम का येही हुक्म है। हां चार या ज़ियादा फेरे कर लिये थे तो अब नए सिरे से नहीं कर सकते जहां से छोड़ा था वहीं से करना होगा। ''ह़-जरे अस्वद'' से भी शुरूअ़ करने की ज़रूरत नहीं।

(دُرِّمُختارو رَدُّالمُحتارج۳ص۵۸۲)

क़त़रे के मरीज़ के त़वाफ़ का अहम मस्अला

सुवाल : अगर कोई क़त़रे वग़ैरा की बीमारी की वजह से ''मा'ज़ूरे शर-ई'' हो, त़वाफ़ के लिये उस का वुज़ू कब तक कारआमद रहता है ?

जवाब : जब तक उस नमाज़ का वक़्त बाक़ी रहता है। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मा'ज़ूर त़वाफ़ कर रहा है चार फेरों के बा'द वक़्ते नमाज़ जाता रहा तो अब इसे हुक्म है कि वुज़ू कर के त़वाफ़ करे क्यूं कि वक़्ते नमाज़ ख़ारिज होने से मा'ज़ूर का वुज़ू जाता रहता है और बिग़ैर वुज़ू त़वाफ़ ह़राम अब वुज़ू करने के बा'द जो बाक़ी है पूरा करे और चार फेरों से पहले वक़्त ख़त्म हो गया जब भी वुज़ू कर के बाक़ी को पूरा करे और इस सूरत में अफ़्ज़ल येह है कि सिरे से करे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1101, اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط ص ١٦٧) सिर्फ़ क़त़रे आ जाने से कोई मा'ज़ूरे शर-ई नहीं हो जाता, इस में काफ़ी तफ़्सील है इस की मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**नमाज़ के अह़काम**" **सफ़ह़ा** 43 ता 46 का मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

औ़रत ने बारी के दिनों में नफ़्ली त़वाफ़ कर लिया तो ?

सुवाल : औ़रत ने बारी के दिनों में नफ़्ली त़वाफ़ कर लिया, क्या हुक्म है ?

जवाब : गुनहगार भी हुई और **दम** भी वाजिब हुवा । चुनान्चे अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی फ़रमाते हैं : नफ़्ली त़वाफ़ अगर जनाबत की (या'नी बे ग़ुस्ली) ह़ालत में (या औ़रत ने बारी के दिनों में) किया तो **दम** वाजिब है और बे वुज़ू किया तो स-दक़ा । (رَدُّالْمُحتار ج٣ ص٦٦١) अगर बे ग़ुस्ले ने पाकी ह़ासिल करने के और बे वुज़ू ने वुज़ू करने के बा'द त़वाफ़ का इआ़दा कर लिया तो कफ़्फ़ारा साक़ित़ हो जाएगा। मगर क़स्दन ऐसा किया हो तो तौबा करनी होगी क्यूं कि बारी के दिनों में नीज़ बे वुज़ू त़वाफ़ करना गुनाह है।

सुवाल : **त़वाफ़** में आठवें फेरे को सातवां गुमान किया अब याद आ गया कि येह तो आठवां फेरा है अब क्या करे ?

जवाब : इसी पर त़वाफ़ ख़त्म कर दीजिये। अगर जान बूझ कर आठवां फेरा शुरूअ़ किया तो येह एक जदीद (या'नी नया) त़वाफ़ शुरूअ़ हो गया अब इस के भी सात फेरे पूरे कीजिये। (ایضاً ص۵۸۱)

सुवाल : उ़म्रे के त़वाफ़ का एक फेरा छूट गया तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : उ़म्रे का त़वाफ़ फ़र्ज़ है। इस का अगर एक फेरा भी छूट गया तो **दम** वाजिब है, अगर बिल्कुल त़वाफ़ न किया या अक्सर (या'नी चार फेरे) तर्क किये तो कफ़्फ़ारा नहीं बल्कि इन का अदा करना लाज़िम है।

(لُبابُ الْمَناسِك ص۳۰۳)

सुवाल : क़ारिन या मुफ़्रिद ने त़वाफ़े क़ुदूम तर्क किया तो क्या सज़ा है ?

जवाब : उस पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं लेकिन **सुन्नते मुअक्कदा** का तारिक हुवा और बुरा किया ?

(لُبابُ الْمَناسِك والْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط ص۳۰۲)

मस्जिदुल ह़राम की पहली या दूसरी मन्ज़िल से त़वाफ़ का मस्अला

सुवाल : मस्जिदुल ह़राम की छतों से त़वाफ़ कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : अगर मस्जिदे ह़राम की छत से का'बए मुक़द्दसा का त़वाफ़ हो तो फ़र्ज़ त़वाफ़ अदा हो जाएगा जब कि दरमियान में दीवार वग़ैरा ह़ाजिब (आड़, पर्दा) न हो। लेकिन अगर

नीचे मत़ाफ़ में गुन्जाइश है तो छत से त़वाफ़ मक्रूह है इस लिये कि इस सूरत में बिला ज़रूरत मस्जिद की छत पर चढ़ना और चलना पाया जाता है जो मक्रूह है। साथ ही इस ह़ालत में त़वाफ़, का'बे से क़रीब तर होने के बजाए बहुत दूर हो रहा है और बिला वजह अपने को सख़्त मशक़्क़त और तकान में डालना भी होता है, जब कि क़रीब तर मक़ाम से त़वाफ़ करना अफ़्ज़ल है और बिला वजह अपने को मशक़्क़त में डालना मन्अ़। हां अगर नीचे गुन्जाइश न हो या गुन्जाइश होने तक इन्तिज़ार से कोई मानेअ़ (या'नी रुकावट) हो तो छत से त़वाफ़ बिला कराहत जाइज़ है। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم۔

(माहनामा अशरफ़िय्या, जून 2005 ई. ग्यारहवां फ़िक़्ही सेमीनार, स. 14)

दौराने त़वाफ़ बुलन्द आवाज़ से मुनाजात पढ़ना कैसा ?

सुवाल : दौराने त़वाफ़ बुलन्द आवाज़ से दुआ, मुनाजात या ना'त शरीफ़ वग़ैरा पढ़ना कैसा ?

जवाब : इतनी ऊंची आवाज़ से पढ़ना जिस से दीगर त़वाफ़ करने वालों या नमाज़ियों को तश्वीश या'नी परेशानी हो मक्रूहे तह़रीमी, ना जाइज़ व गुनाह है। अलबत्ता किसी को ईज़ा न हो इस त़रह़ गुन-गुनाने या'नी धीमी आवाज़ से पढ़ने में ह़रज नहीं। यहां वोह साह़िबान ग़ौर फ़रमाएं जिन के **मोबाइल फ़ोन्ज़** से दौराने त़वाफ़ ट्यून्ज़ बजती रहतीं और इबादत गुज़ारों को परेशान करती रहती हैं इन सब

को चाहिये कि तौबा करें। याद रखिये ! येह अह़काम सिर्फ़ ''मस्जिदुल ह़राम'' के लिये ही नहीं **तमाम मसाजिद** बल्कि तमाम मक़ामात के लिये हैं और म्यूज़ीकल ट्यून मस्जिद के इलावा भी **ना जाइज़** है।

इज़्तिबाअ़ और रमल के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर सअ़्य से क़ब्ल किये जाने वाले त़वाफ़ के पहले फेरे में रमल करना भूल गए तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : रमल सिर्फ़ इब्तिदाई तीन फेरों में सुन्नत है, सातों में करना मक्रूह, लिहाज़ा अगर पहले में न किया तो दूसरे और तीसरे में कर लीजिये और अगर इब्तिदाई दो फेरों में रह गया तो सिर्फ़ तीसरे में कर लीजिये और अगर शुरूअ़ के तीनों फेरों में न किया तो अब बक़िय्या चार फेरों में नहीं कर सकते। (دُرِّمُختارو رَدُّالمُحتارج۳ص۵۸۳)

सुवाल : जिस त़वाफ़ में इज़्तिबाअ़ और रमल करना था उस में न किया तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : कोई कफ़्फ़ारा नहीं। अलबत्ता अ़ज़ीम सुन्नत से मह़रूमी ज़रूर है।

सुवाल : अगर कोई सातों फेरों में **रमल** कर ले तो ?

जवाब : मक्रूहे तन्ज़ीही है। (رَدُّالمُحتار ج۳ص۵۸٤) मगर कोई जुर्माना वग़ैरा नहीं।

बोसो कनार के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : एह़राम की ह़ालत में बीवी को हाथ लगाना कैसा ?

जवाब : बीवी को बिला शह्वत हाथ लगाना जाइज़ है मगर शह्वत के साथ हाथ में हाथ डालना या बदन को छूना **ह़राम** है। अगर शह्वत की ह़ालत में बोसो कनार किया या जिस्म को छुवा तो **दम** वाजिब हो जाएगा। येह अफ़्आ़ल औ़रत के साथ हों या अम्रद के साथ दोनों का एक ही हुक्म है। (دُرِّمُختار و رَدُّالمُحتار ج ۳ ص ٦٦٧) अगर मोह़रिमा को भी मर्द के इन अफ़्आ़ल से लज़्ज़त आए तो उसे भी **दम** देना पड़ेगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1173)

सुवाल : अगर तसव्वुर जम जाए या शर्मगाह पर नज़र पड़ जाए और इन्ज़ाल हो (या'नी मनी निकल) जाए तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : इस सूरत में कोई कफ़्फ़ारा नहीं। (عالمگیری ج۱ص۲٤٤) रहा ह़राम कर्दा औ़रत या अम्रद से बद निगाही करना या क़स्दन उन का "गन्दा" तसव्वुर बांधना येह एह़राम के इ़लावा भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। नीज़ इस त़रह़ के गन्दे वस्वसे भी आएं तो مَعَاذَاللہ लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के बजाए फ़ौरन तवज्जोह हटाए। इसी त़रह़ औ़रतों के लिये भी येही अह़काम हैं।

सुवाल : अगर एह़तिलाम हो जाए तो ?

जवाब : कोई कफ़्फ़ारा नहीं। (عالمگیری ج۱ص۲٤٤)

सुवाल : अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई मोह़रिम मुश्त ज़नी (हेंड प्रेक्टिस) का मुर-तकिब हुवा तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : अगर इन्ज़ाल हो गया (या'नी मनी निकल गई) तो दम वाजिब है वरना मक्रूह। (ایضاً) येह फ़े'ल, ख़्वाह एह़राम हो या न हो बहर ह़ाल ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो मुश्त ज़नी (या'नी हेंड प्रेक्टिस Hand practic) करते हैं अगर वोह बिग़ैर तौबा किये मर गए तो बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में उठेंगे कि उन की हथेलियां गाभन (या'नी ह़ामिला) होंगी जिस से लोगों के मज्मए कसीर में उन की रुस्वाई होगी।

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 244)

एह़राम में अम्रद से मुसा-फ़ह़ा किया और......?

सुवाल : अगर अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से मुसा-फ़ह़ा किया और शह्वत आ गई तो क्या सज़ा है ?

जवाब : **दम** वाजिब हो गया। इस में अम्रद[1] और ग़ैरे अम्रद की कोई क़ैद नहीं, अगर दोनों को शह्वत हुई और दूसरा भी **मोह़रिम** है तो वोह भी **दम** दे।

1 : वोह लड़का या मर्द जिस को देखने या छूने से शह्वत आती हो एह़राम हो या न हो उस से दूर रहना लाज़िमी है। अगर मुसा-फ़ह़ा करने या उसे छूने या उस के साथ गुफ़्त-गू करने से शह्वत भड़क्ती हो तो अब उस के साथ येह अफ़्आ़ल करने जाइज़ नहीं। इस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत्बूआ़ रिसाला, ''क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां'' (45 सफ़ह़ात) पढ़िये।

मियां बीवी का हाथ में हाथ डाल कर चलना

सुवाल : एह्‌राम में मियां बीवी के एक दूसरे का हाथ पकड़ कर त़वाफ़ या सअ्‌य करने में अगर शह्‌वत आ गई तो ?

जवाब : जिस को शह्‌वत आई उस पर **दम** वाजिब है अगर दोनों को आ गई तो दोनों पर है। अगर एह्‌राम वाले मर्दों ने एक दूसरे का हाथ पकड़ा हो जब भी येही हुक्म है।

नाख़ुन तराश्ने के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : मस्अला मा'लूम नहीं था और दोनों हाथों और दोनों पाउं के नाख़ुन काट लिये अब क्या होगा ? अगर कफ़्फ़ारा हो तो वोह भी बता दीजिये।

जवाब : जानना या न जानना यहां उ़ज़्र नहीं होता, ख़्वाह भूल कर **जुर्म** करें या जान बूझ कर, अपनी मरज़ी से करें या कोई ज़बर दस्ती करवाए **कफ़्फ़ारा** हर सूरत में देना होगा। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक हाथ एक पाउं के पांचों नाख़ुन कतरे या बीसों एक साथ तो एक दम है और अगर किसी हाथ या पाउं के पूरे पांच न कतरे तो हर नाख़ुन पर एक स-दक़ा, यहां तक कि अगर चारों हाथ पाउं के चार चार कतरे तो सोला स-दक़े दे मगर येह कि स-दक़ों की क़ीमत एक दम के बराबर हो जाए तो कुछ कम कर ले या दम दे

और अगर एक हाथ या पाउं के पांचों एक जल्से में और दूसरे के पांचों दूसरे जल्से में कतरे तो दो दम लाज़िम हैं और चारों हाथ पाउं के चार जल्सों में तो चार दम।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1172, عالمگیری ج۱ص۲٤٤)

सुवाल : नाख़ुन अगर दांत से कतर डाले तो क्या सज़ा है ?

जवाब : ख़्वाह ब्लेड से काटें या चाकू से, नाख़ुन तराश (या'नी नेल **कटर**) से तराशें या **दांतों** से कतरें सब का एक ही हुक्म है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1172)

सुवाल : मोह़रिम किसी दूसरे के नाख़ुन काट सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं काट सकता, इस के वोही अह़काम हैं जो दूसरों के बाल दूर करने के हैं।

(اَلْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط لِلقاری ص۳۳۲)

बाल दूर करने के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर ! مَعَاذَاللّٰه किसी मोह़रिम ने अपनी दाढ़ी मुंडवा दी तो क्या सज़ा है ?

जवाब : दाढ़ी मुंडवाना या **ख़श्ख़शी** करवा देना वैसे भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और एह़राम की ह़ालत में सख़्त ह़राम। अलबत्ता एह़राम की ह़ालत में सर के बाल भी नहीं काट सकते। बहर ह़ाल दौराने एह़राम के हुक्म के मु-तअ़ल्लिक़ **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : सर या दाढ़ी के चहारुम बाल या ज़ियादा

किसी त़रह़ दूर किये तो **दम** है और चहारुम से कम में **स-दक़ा** और अगर चंदला है या दाढ़ी में कम बाल हैं, तो अगर चौथाई (1/4) की मिक्दार हैं तो कुल में दम वरना स-दक़ा। चन्द जगह से थोड़े थोड़े बाल लिये तो सब का मज्मूआ़ अगर चहारुम को पहुंचता है तो दम है वरना स-दक़ा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1170, رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص ۶۵۹)

सुवाल : औ़रत अपने बाल ले सकती है या नहीं ?

जवाब : **नहीं।** औ़रत अगर पूरे सर या चौथाई (1/4) सर के बाल एक पोरे के बराबर कतर ले तो **दम** दे और कम में **स-दक़ा।** (لُبابُ الْمَناسِك ص ۳۲۷)

सुवाल : मोह़रिम ने गरदन या बग़ल या मूए ज़ेरे नाफ़ ले लिये तो क्या हुक्म है ?

जवाब : पूरी गरदन या पूरी एक बग़ल में दम है और कम में स-दक़ा अगर्चे निस्फ़ या ज़ियादा हो। येही हुक्म ज़ेरे नाफ़ का है। दोनों बग़लें पूरी मुंडाए जब भी एक ही दम है। (बहारे शरीअ़त, स. 1170, دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتارج۳ص۶۵۹)

सुवाल : सर, दाढ़ी, बग़लें वग़ैरा सब एक ही मजलिस में मुंडवा दिये तो कितने कफ़्फ़ारे होंगे ?

जवाब : ख़्वाह सर से ले कर पाउं तक सारे बदन के बाल एक ही मजलिस में मुंडवाएं तो एक ही कफ़्फ़ारा है। अगर अलग अलग आ'ज़ा के अलग अलग मजलिस में मुंडवाएंगे तो उतने ही कफ़्फ़ारे होंगे। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتارج ۳ ص ۶۵۹ ـ ۶۶۱)

सुवाल : अगर वुज़ू करने में बाल झड़ते हों तो क्या इस पर भी कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : क्यूं नहीं ! वुज़ू करने में, खुजाने में या कंघा करने में अगर दो या तीन बाल गिरे तो हर बाल के बदले में एक एक मुठ्ठी अनाज या एक एक टुकड़ा रोटी या एक छुवारा ख़ैरात करें और तीन से ज़ियादा गिरे तो **स-दक़ा** देना होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1171)

सुवाल : अगर खाना पकाने में चूल्हे की गरमी से कुछ बाल जल गए तो ?

जवाब : स-दक़ा देना होगा। (ऐज़न)

सुवाल : मूंछ साफ़ करवा दी, क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : मूंछ अगर्चे पूरी मुंडवाएं या कतरवाएं **स-दक़ा** है। (ऐज़न)

सुवाल : अगर सीने के बाल मुंडवा दिये तो क्या करे ?

जवाब : सर, दाढ़ी, गरदन, बग़ल और मूए ज़ेरे नाफ़ के इलावा बाक़ी आ'ज़ा के बाल मुंडवाने में सिर्फ़ **स-दक़ा** है। (ऐज़न)

सुवाल : बाल झड़ने की बीमारी हो और ख़ुद बख़ुद बाल झड़ते हों तो इस पर कोई रिआ़यत ?

जवाब : अगर बिग़ैर हाथ लगाए बाल गिर जाएं या बीमारी से तमाम बाल भी झड़ जाएं तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं। (ऐज़न)

सुवाल : मोह़रिम ने दूसरे मोह़रिम का सर मूंडा तो क्या सज़ा है ?

जवाब : अगर एह़राम खोलने का वक़्त आ गया है। तो अब दोनों एक दूसरे के बाल मूंड सकते हैं। और अगर वक़्त नहीं आया तो इस पर कफ़्फ़ारे की सूरत मुख़्तलिफ़ है। अगर मोह़रिम ने मोह़रिम का सर मूंडा तो जिस का सर मूंडा गया उस पर तो कफ़्फ़ारा है ही, मूंडने वाले पर भी स-दक़ा है और अगर मोह़रिम ने ग़ैरे मोह़रिम का सर मूंडा या मूंछें लीं या नाख़ुन तराशे तो मसाकीन को कुछ ख़ैरात कर दे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1142, 1171)

सुवाल : ग़ैरे मोह़रिम, मोह़रिम का सर मूंड सकता है या नहीं ?

जवाब : वक़्त से पहले नहीं मूंड सकता, अगर मूंडेगा तो मोह़रिम पर तो कफ़्फ़ारा है ही, ग़ैरे मोह़रिम को भी **स-दक़ा** देना होगा। (ऐज़न, 1171)

सुवाल : अगर बाल सफ़ा पाउडर या CREAM से बाल साफ़ किये तो क्या मस्अला है ?

जवाब : बहारे शरीअ़त में है : मूंडना, कतरना, मोचने से लेना या किसी चीज़ से बाल उड़ाना, सब का एक हुक्म है। (ऐज़न)

ख़ुश्बू के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : **एह़राम** की ह़ालत में इत्र की शीशी हाथ में ली और हाथ में **ख़ुश्बू** लग गई तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : अगर लोग देख कर कहें कि येह बहुत सी **ख़ुश्बू** लग गई है अगर्चे उ़ज़्व के थोड़े से हि़स्से में लगी हो तो **दम** वाजिब है वरना मा'मूली सी ख़ुश्बू भी लग गई तो **स-दक़ा** है ।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1163)

सुवाल : सर में ख़ुश्बूदार तेल डाल लिया तो क्या करे ?

जवाब : अगर कोई बड़ा उ़ज़्व म-सलन रान, मुंह, पिंडली या सर सारे का सारा ख़ुश्बू से आलूदा हो जाए ख़्वाह ख़ुश्बूदार तेल के ज़रीए़ हो या इ़त्र से, **दम** वाजिब हो जाएगा । (ऐज़न)

सुवाल : बिछोने या एह़राम के कपड़े पर ख़ुश्बू लग गई या किसी ने लगा दी तो ?

जवाब : ख़ुश्बू की मिक़्दार देखी जाएगी, ज़ियादा है तो दम और कम है तो स-दक़ा ।

सुवाल : जो कमरा (ROOM) रिहाइश के लिये मिला उस में कारपेट, बिछोना, तक्या, चादर वग़ैरा ख़ुश्बूदार हों तो क्या करे ?

जवाब : मोह़रिम इन चीज़ों के इस्ति'माल से बचे । अगर एह़तियात़ न की और इन से ख़ुश्बू छूट कर बदन या एह़राम पर लग गई तो ज़ियादा होने की सूरत में दम और कम में स-दक़ा वाजिब होगा । और अगर न लगे तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं मगर इस सूरत

में बचना बेहतर है। मोह़रिम को चाहिये मकान वाले से मु-तबादिल इन्तिज़ाम का कहे, येह भी हो सकता है कि फ़र्श और बिछोने वग़ैरा पर कोई बे ख़ुश्बू चादर बिछा ले, तक्ये का ग़िलाफ़ (cover) तब्दील कर ले या उसे किसी बे ख़ुश्बू चादर में लपेट ले।

सुवाल : जो ख़ुश्बू निय्यते एह़राम से पहले बदन पर लगाई थी क्या निय्यते एह़राम के बा'द उस **ख़ुश्बू** को ज़ाइल (दूर) करना ज़रूरी है ?

जवाब : नहीं, **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : एह़राम से पहले बदन पर ख़ुश्बू लगाई थी, एह़राम के बा'द फैल कर और आ'ज़ा को लगी तो कफ़्फ़ारा नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1163)

सुवाल : एह़राम की निय्यत से पहले गले में जो बेग था उस में या बेल्ट की जेब में इत्र की शीशी थी, निय्यत के बा'द याद आने पर उसे निकालना ज़रूरी है या रहने दें ? अगर इसी शीशी की ख़ुश्बू हाथ में लग गई तब भी कफ़्फ़ारा होगा ?

जवाब : एह़राम की निय्यत के बा'द वोह इत्र की शीशी बेग या बेल्ट से निकालना ज़रूरी नहीं और बा'द में उस शीशी की ख़ुश्बू हाथ वग़ैरा पर लग गई तो कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा, क्यूं कि येह वोह ख़ुश्बू नहीं जो एह़राम की निय्यत से पहले कपड़े या बदन पर लगाई गई हो।

सुवाल : गले में निय्यत से पहले जो बेग पहना वोह ख़ुश्बूदार था, नीज़ उस के अन्दर ख़ुश्बूदार रुमाल या ख़ुश्बू वाली त़वाफ़ की तस्बीह़ वग़ैरा भी मौजूद, इन का मोह़रिम इस्ति'माल कर सकता है या नहीं ?

जवाब : इन चीज़ों की ख़ुश्बू क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) सूंघना मक्रूह है और इस एह़तियात़ के साथ इस्ति'माल की इजाज़त है कि अगर उस की तरी बाक़ी है तो उतर कर एह़राम और बदन को न लगे लेकिन ज़ाहिर है कि तस्बीह़ में ऐसी एह़तियात़ करना निहायत मुश्किल है बल्कि रुमाल में भी बचना मुश्किल है। लिहाज़ा इन के इस्ति'माल से बचने में ही आ़फ़िय्यत है।

सुवाल : अगर दो तीन ज़ाइद ख़ुश्बूदार चादरें निय्यत से क़ब्ल गोद में रख ले या ओढ़ ले अब एह़राम की निय्यत करे। निय्यत के बा'द ज़ाइद चादरें हटा दे, उसी एह़राम की ह़ालत में अब उन चादरों का इस्ति'माल करना कैसा ?

जवाब : अगर तरी बाक़ी है तो उन को इस्ति'माल की इजाज़त नहीं और अगर तरी ख़त्म हो चुकी है सिर्फ़ ख़ुश्बू बाक़ी है तो इस्ति'माल की इजाज़त है मगर मक्रूहे (तन्ज़ीही) है। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं **:** अगर एह़राम से पहले बसाया (या'नी ख़ुश्बूदार किया) था और एह़राम में पहना तो मक्रूह है मगर कफ़्फ़ारा नहीं।

(ऐज़न, स. 1165)

सुवाल : एह़तिलाम हो गया या किसी वजह से एह़राम की एक या दोनों चादरें नापाक हो गईं अब दूसरी चादरें मौजूद तो हैं मगर उन में पहले की ख़ुश्बू लगी हुई है, उन्हें पहन सकते हैं या नहीं ?

जवाब : अगर ख़ुश्बू की तरी या जिर्म (या'नी ऐन, जिस्म) अभी तक बाक़ी है तो उन चादरों को पहनने से कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा। और अगर जिर्म ख़त्म हो चुका है सिर्फ़ ख़ुश्बू बाक़ी है तो फिर मोह़रिम वोह चादरें इस्ति'माल कर सकता है। हां बिला उ़ज़्र ऐसी चादरें इस्ति'माल करना मकरूहे तन्ज़ीही है। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिस कपड़े पर ख़ुश्बू का जिर्म (या'नी ऐन, जिस्म) बाक़ी हो उसे एह़राम में पहना, ना जाइज़ है। (عالمگیری ج۱ص۲۲۲) बहारे शरीअ़त में है : "अगर एह़राम से पहले बसाया था और एह़राम में पहना तो मकरूह है मगर कफ़्फ़ारा नहीं।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1165)

सुवाल : एह़राम की ह़ालत में ह़-जरे अस्वद का बोसा लेने या रुक्ने यमानी को छूने या मुल्तज़म से लिपटने में अगर ख़ुश्बू लग गई तो क्या करें ?

जवाब : अगर बहुत सी लग गई तो दम और थोड़ी सी लगी तो स-दक़ा। (ऐज़न, स. 1164) (जहां जहां ख़ुश्बू लग जाने का मस्अला है वहां कम है या ज़ियादा इस का फ़ैसला दूसरों से करवाना है। चूंकि ज़ियादा ख़ुश्बू लग जाने पर दम

है लिहाज़ा हो सकता है अपना नफ़्स ज़ियादा ख़ुश्बू को भी थोड़ी ही कहे)

सुवाल : मोह़रिम जान बूझ कर **ख़ुश्बूदार फूल** सूंघ सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं । मोह़रिम का बिल क़स्द (या'नी जान बूझ कर) ख़ुश्बू या ख़ुश्बूदार चीज़ सूंघना मक्रूहे तन्ज़ीही है, मगर कफ़्फ़ारा नहीं । (ऐज़न, 1163)

सुवाल : बे पकाई इलायची या चांदी के वरक़ वाले इलायची के दाने खाना कैसा ?

जवाब : ह़राम है । अगर ख़ालिस ख़ुश्बू, जैसे मुश्क, ज़ा'फ़रान, लोंग, इलायची, दारचीनी, इतनी खाई कि मुंह के अक्सर ह़िस्से में लग गई तो **दम** वाजिब हो गया और कम में **स-दक़ा ।** (ऐज़न, 1164)

सुवाल : ख़ुश्बूदार ज़र्दा, बिरयानी और क़ोरमा, ख़ुश्बू वाली सौंफ़, छालिया, क्रीम वाले बिस्किट, टॉफ़ियां वग़ैरा खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : जो ख़ुश्बू खाने में पका ली गई हो, चाहे अब भी उस से ख़ुश्बू आ रही हो, उसे खाने में मुज़ा-यक़ा नहीं । इसी त़रह़ ख़ुश्बू पकाते वक़्त तो नहीं डाली थी ऊपर डाल दी थी मगर अब उस की महक उड़ गई उस का खाना भी जाइज़ है, अगर बिग़ैर पकाई हुई ख़ुश्बू खाने या मा'जून वग़ैरा दवा में मिला दी गई तो अब उस के अज्ज़ा ग़िज़ा

या दवा वग़ैरा बे ख़ुश्बू अश्या के अज्ज़ा से ज़ियादा हैं तो वोह ख़ालिस ख़ुश्बू के हुक्म में है और कफ़्फ़ारा है कि मुंह के अक्सर हिस्से में ख़ुश्बू लग गई तो **दम** और कम में लगी तो **स-दक़ा** और अगर अनाज वग़ैरा की मिक़्दार ज़ियादा है और ख़ालिस ख़ुश्बू कम तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं, हां ख़ालिस ख़ुश्बू की महक आती हो तो मक्रूहे तन्ज़ीही है।

सुवाल : ख़ुश्बूदार शरबत, फ़्रूट ज्यूस, ठन्डी बोतलें वग़ैरा पीना कैसा है ?

जवाब : अगर ख़ालिस ख़ुश्बू जैसे सन्दल वग़ैरा का शरबत है तो वोह शरबत तो पका कर ही बनाया जाता है, लिहाज़ा मुत़्लक़न पीने की इजाज़त है और अगर उस के अन्दर ख़ुश्बू पैदा करने के लिये कोई एसेन्स (Essense) डाला जाता है तो मेरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ उस के डालने का त़रीक़ा येह है कि पकाए जाने वाले शरबत में उस के ठन्डा होने के बा'द डाला जाता है और यक़ीनन येह क़लील मिक़्दार में होता है तो इस का हुक्म येह है कि अगर उसे तीन बार या ज़ियादा पिया तो **दम** है वरना **स-दक़ा**। बहारे शरीअ़त में है : "पीने की चीज़ में अगर ख़ुश्बू मिलाई अगर ख़ुश्बू ग़ालिब है (तो दम है) या ख़ुश्बू कम है मगर उसे तीन बार या ज़ियादा पिया तो दम है वरना स-दक़ा।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1165)

सुवाल : मोह़रिम नारियल का तेल सर वग़ैरा में लगा सकता है या नहीं ?

जवाब : कोई ह़रज नहीं, अलबत्ता **तिल** और **ज़ैतून** का तेल ख़ुश्बू के हुक्म में है। अगर्चे इन में ख़ुश्बू न हो येह जिस्म पर नहीं लगा सकते। हां, इन के खाने, नाक में चढ़ाने, ज़ख़्म पर लगाने और कान में टपकाने में कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं। (ऐज़न, 1166)

सुवाल : एह़राम की ह़ालत में आंखों में **ख़ुश्बूदार** सुरमा लगाना कैसा है ?

जवाब : ह़राम है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ख़ुश्बूदार सुरमा एक या दो बार लगाया तो **स-दक़ा** दे, इस से ज़ियादा में **दम** और जिस सुरमे में ख़ुश्बू न हो उस के इस्ति'माल में ह़रज नहीं, जब कि ब ज़रूरत हो और बिला ज़रूरत मक्रूह (व ख़िलाफ़े औला)। (ऐज़न, 1164)

सुवाल : ख़ुश्बू लगा ली और **कफ़्फ़ारा** भी दे दिया तो अब लगी रहने दें या क्या करें ?

जवाब : ख़ुश्बू लगाना जब जुर्म क़रार पाया तो बदन या कपड़े से दूर करना **वाजिब** है और **कफ़्फ़ारा** देने के बा'द अगर ज़ाइल (या'नी दूर) न किया तो फिर दम वग़ैरा **वाजिब** होगा। (ऐज़न, 1166)

एह़राम में ख़ुश्बूदार साबुन का इस्ति'माल

सुवाल : ह़िजाज़े मुक़द्दस के होटलों में ख़ुश्बूदार साबुन, मुअ़त्त़र

शेम्पू और ख़ुश्बू वाले पाउडर हाथ धोने के लिये रखे जाते हैं और एह़राम वाले बिला तकल्लुफ़ इन को इस्ति'माल करते हैं, त़य्यारे में और एरपोर्ट पर भी एह़राम वालों को येही मिलता है, कपड़े और बरतन धोने का पाउडर भी ह़िजाज़े मुक़द्दस में ख़ुश्बूदार ही होता है। इन चीज़ों के बारे में हुक्मे शर-ई क्या है ?

जवाब : एह़राम वाले इन चीज़ों को इस्ति'माल करें तो कोई कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं आएगा। (अलबत्ता ख़ुश्बू की निय्यत से इन चीज़ों का इस्ति'माल मकरूह है।)

(माख़ूज़ अज़ : एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन)[1]

मोह़रिम और गुलाब के फूलों के गजरे

सुवाल : **एह़राम** की निय्यत कर लेने के बा'द एरपोर्ट वग़ैरा पर गुलाब के फूलों का गजरा पहना जा सकता है या नहीं ?

जवाब : एह़राम की निय्यत के बा'द गुलाब का हार न पहना जाए, क्यूं कि गुलाब का फूल ख़ुद ऐन (ख़ालिस) ख़ुश्बू है और इस की महक बदन और लिबास में बस भी जाती है। चुनान्चे अगर इस की महक लिबास में बस गई और कसीर (या'नी ज़ियादा)

1 : दा'वते इस्लामी की मजलिस "तह़क़ीक़ाते शरइय्या" ने उम्मत की रहनुमाई के लिये इत्तिफ़ाक़े राय से येह **फ़तवा** मुरत्तब फ़रमाया, मज़ीद तीन मुक़्तदर उ़-लमाए अहले सुन्नत (1) मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान अ़ल्लामा अ़ब्दुल क़य्यूम हज़ारवी (2) श-रफ़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़कीम शरफ़ क़ादिरी और (3) फ़ैज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़ैज़ अह़मद उवैसी (رحمھم اللہ تعالٰی) की तस्दीक़ ह़ासिल की और मक-त-बतुल मदीना ने बनाम "एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन" येह रिसाला शाएअ़ किया। तफ़्सीलात के शाइक़ीन इसे ह़ासिल करें या दा'वते इस्लामी की वेबसाइट : www.dawateislami.net पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं।

है और चार पहर या'नी बारह घन्टे तक उस कपड़े को पहने रहा तो **दम** है वरना स-दक़ा और अगर ख़ुश्बू थोड़ी है और कपड़े में एक बालिश्त या इस से कम (हिस्से) में लगी है और चार पहर तक इसे पहने रहा तो "**स-दक़ा**" और इस से कम पहना तो एक मुठ्ठी गन्दुम देना **वाजिब** है। और अगर ख़ुश्बू क़लील (या'नी थोड़ी) है, लेकिन बालिश्त से ज़ियादा हिस्से में है, तो कसीर (या'नी ज़ियादा) का ही हुक्म है या'नी चार पहर में "दम" और कम में "स-दक़ा" और अगर येह हार पहनने के बा वुजूद कोई महक कपड़ों में न बसी तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं। (एहराम और ख़ुश्बूदार साबुन, स. 35 ता 36)

सुवाल : किसी से मुसा-फ़हा किया और उस के हाथ से मोहरिम के हाथ में ख़ुश्बू लग गई तो ?

जवाब : अगर ख़ुश्बू का ऐन लगा तो "कफ़्फ़ारा" होगा और अगर ऐन न लगा बल्कि हाथ में सिर्फ़ महक आई, तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं कि इस मोहरिम ने ख़ुश्बू के ऐन से नफ़अ़ न उठाया, हां इस को चाहिये कि हाथ को धो कर उस महक को ज़ाइल कर दे। (ऐज़न, स. 35)

सुवाल : ख़ुश्बूदार शेम्पू से सर या दाढ़ी धो सकते हैं या नहीं ?

जवाब : रिसाला "एहराम और ख़ुश्बूदार साबुन" **सफ़हा** 25 ता 28 से बा'ज़ इक्तिबासात मुला-हज़ा हों **: शेम्पू** अगर सर या दाढ़ी में इस्ति'माल किया जाए, तो ख़ुश्बू की

मुमा-न-अ़त की इ़ल्लत (या'नी वजह) पर ग़ौर के नतीजे में इस की मुमा-न-अ़त का हुक्म ही समझ में आता है, बल्कि कफ़्फ़ारा भी होना चाहिये, जैसा कि **ख़ित़्मी** (ख़ुश्बूदार बूटी) से सर और दाढ़ी धोने का हुक्म है कि येह बालों को नर्म करता है और जूएं मारता है और मोह़रिम के लिये येह ना जाइज़ है। "दुर्रे मुख़्तार" में है : सर और दाढ़ी को ख़ित़्मी से धोना (ह़राम है) क्यूं कि येह ख़ुश्बू है या जूओं को मारता है। (دُرِّمختار ج۳ص۵۷۰) साह़िबैन (या'नी इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا) के नज़्दीक चूंकि येह ख़ुश्बू नहीं, लिहाज़ा यहां "जिनायते क़ासिरा" (ना मुकम्मल जुर्म) का सुबूत होगा और इस का मूजब "स-दक़ा" है। **शेम्पू** से सर धोने की सूरत में भी ब ज़ाहिर "जिनायते क़ासिरा" (या'नी ना मुकम्मल जुर्म) का वुजूद ही समझ में आता है कि इस में भी आग का अ़मल होता है। लिहाज़ा ख़ुश्बू का हुक्म तो साक़ित़ हो गया लेकिन बालों को नर्म करने और जूएं मारने की इ़ल्लत (या'नी सबब) मौजूद है, लिहाज़ा "स-दक़ा" वाजिब होना चाहिये। येह अम्र भी क़ाबिले तवज्जोह है कि अगर किसी के सर पर बाल और चेहरे पर दाढ़ी न हो, तो क्या अब भी हुक्म साबिक़ ही लगाया जाएगा......? ब ज़ाहिर इस सूरत में कफ़्फ़ारे का हुक्म नहीं होना चाहिये, क्यूं कि हुक्मे मुमा-न-अ़त की इ़ल्लत (सबब) बालों का नर्म और

जूओं का हलाक होना था, और मज़्कूरा सूरत में येह इ़ल्लत मफ़्क़ूद (या'नी सबब ग़ैर मौजूद) है और इन्तिक़ाए इ़ल्लत (या'नी सबब का न होना) इन्तिक़ाए मा'लूल को **मुस्तल्ज़िम** (लाज़िम करने वाली) है लेकिन इस से अगर मैल छूटे तो येह मक्रूह है कि मोह़रिम को मैल छुड़ाना मक्रूह है। और हाथ धोने में इस की ह़ैसिय्यत साबुन की सी है क्यूं कि येह माएअ़ (या'नी लिक्विड, liquid) ह़ालत में साबुन ही है और इस में भी आग का अ़मल किया जाता है।

सुवाल : मस्जिदे करीमैन के फ़र्श की धुलाई में जो ख़ुश्बूदार मह़्लूल (SOLUTION) इस्ति'माल किया जाता है, उस में लाखों मुह़रिमीन के पाउं सनते (या'नी आलूदा) होते रहते हैं क्या हुक्म है ?

जवाब : कोई कफ़्फ़ारा नहीं कि येह ख़ुश्बू नहीं। और बिलफ़र्ज़ येह मह़्लूल ख़ालिस ख़ुश्बू भी होता, तो भी कफ़्फ़ारा वाजिब न होता, क्यूं कि ज़ाहिर येह है कि येह मह़्लूल पहले पानी में मिलाया जाता है और पानी इस मह़्लूल से ज़ाइद और येह मह़्लूल मग़्लूब (कम) होता है और अगर माएअ़ (या'नी लिक्विड, liquid) ख़ुश्बू को किसी माएअ़ में मिलाया जाए और माएअ़ ग़ालिब हो, तो कोई जज़ा नहीं होती। कुतुबे फ़िक़्ह में जो मश्रूबात का हुक्म उ़मूमन तह़रीर है इस से मुराद ठोस ख़ुश्बू का माएअ़ में मिलाया जाना है। अ़ल्लामा हुसैन बिन मुह़म्मद अ़ब्दुल ग़नी मक्की عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی ''इर्शादुस्सारी''

सफ़ह़ा 316 में फ़रमाते हैं : और इसी से मा'लूम होता है कि गीली शकर (या'नी मीठा शरबत) और इस की मिस्ल, गुलाब के पानी के साथ मिलाया जाए, तो अगर अ़-रक़े गुलाब मग़्लूब हो, जैसा कि आ़दतन ऐसा ही आ़म तौ़र पर होता है, तो इस में कोई कफ़्फ़ारा नहीं और ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने इसी की मिस्ल "त़राबुलुसी" से नक़्ल किया और इसे बर क़रार रखा और इस की ताईद की और इस की अस्ल "मुह़ीत़" में है। (ऐज़न, स. 28 ता 29)

सुवाल : मोह़रिम ने अगर टूथ पेस्ट इस्ति'माल कर ली तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : टूथ पेस्ट में अगर आग का अ़मल होता है, जैसा कि येही मु-तबादिर (या'नी ज़ाहिर) है, जब तो हुक्मे कफ़्फ़ारा नहीं, जैसा कि मा क़ब्ल तफ़्सील से गुज़र चुका। (ऐज़न, स. 33) अलबत्ता अगर मुंह की बदबू दूर करने और खु़श्बू ह़ासिल करने की निय्यत हो तो मक्रूह है। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "तम्बाकू के क़िवाम में खु़श्बू डाल कर पकाई गई हो, जब तो इस का खाना मुत़्लक़न जाइज़ है अगर्चे खु़श्बू देती हो, हां खु़श्बू ही के क़स्द से इसे इख़्तियार करना कराहत से ख़ाली नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 716)

सिले हुए कपड़े वग़ैरा के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : **मोह़रिम** ने अगर भूल कर सिला हुवा लिबास पहन लिया और दस मिनट के बा'द याद आते ही उतार दिया तो कोई **कफ़्फ़ारा** वग़ैरा है या नहीं ?

जवाब : है, अगर्चे एक लम्ह़े के लिये पहना हो । जान बूझ कर पहना हो या भूले से, "**स-दक़ा**" वाजिब हो गया और अगर चार पहर[1] या इस से ज़ियादा चाहे लगातार कई दिन तक पहने रहा "**दम**" वाजिब होगा ।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 757)

सुवाल : अगर टोपी या इमामा पहना या **एह़राम** ही की चादर मोह़रिम ने सर या मुंह पर ओढ़ ली या एह़राम की निय्यत करते वक़्त मर्द सिले हुए कपड़े या टोपी उतारना भूल गया या भीड़ में दूसरे की चादर से मोह़रिम का सर या मुंह ढक गया तो क्या सज़ा है ?

जवाब : जान बूझ कर हो या भूल कर या किसी दूसरे की कोताही की बिना पर हुवा हो कफ़्फ़ारे देने होंगे हां जान बूझ कर जुर्म करने में गुनाह भी है लिहाज़ा तौबा भी वाजिब होगी । अब कफ़्फ़ारा समझ लीजिये : मर्द सारा सर या सर का चौथाई ($^1/_4$) ह़िस्सा या मर्द ख़्वाह औ़रत मुंह की टिक्ली सारी या'नी पूरा चेहरा या चौथाई ह़िस्सा चार पहर

1 : चार पहर या'नी एक दिन या एक रात की मिक़्दार म-सलन तुलूए़ आफ़्ताब से ग़ुरूबे आफ़्ताब या ग़ुरूबे आफ़्ताब से तुलूए़ आफ़्ताब या दो पहर से आधी रात या आधी रात से दो पहर तक। (ह़ाशिया अन्वारुल बिशारह मअ़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 757)

या ज़ियादा लगातार छुपाएं "दम" है और चौथाई से कम चार पहर तक या चार पहर से कम अगर्चे सारा मुंह या सर तो "स-दक़ा" है और चहारुम (या'नी चौथाई) से कम को चार पहर से कम तक छुपाएं तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर **गुनाह** है । (ऐज़न, स. 758)

सुवाल : नज़्ले में कपड़े से नाक पोंछ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : कपड़े से नहीं पोंछ सकते, कपड़ा या तोलिया दूर रख कर उस में नाक सिनक (या'नी झाड़) लीजिये । **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : कान और गुद्दी के छुपाने में ह़रज नहीं । यूंही नाक पर ख़ाली हाथ रखने में और अगर हाथ में कपड़ा है और कपड़े समेत नाक पर हाथ रखा तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर मक्रूह व गुनाह है । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1169)

एह़राम में टिशू पेपर का इस्ति'माल

सुवाल : टिशू पेपर से मुंह का पसीना या वुज़ू का पानी या नज़्ले में नाक पोंछ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं पोंछ सकते ।

सुवाल : तो मुंह पर कपड़े या टिशू पेपर का मास्क लगाना कैसा ?

जवाब : ना जाइज़ व गुनाह है । शराइत़ पाए जाने की सूरत में कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होगा ।

सुवाल : मोह़रिम ने ख़ुश्बूदार टिशू पेपर इस्ति'माल कर लिया तो ?

जवाब : ख़ुश्बूदार टिशू पेपर में अगर ख़ुश्बू का ऐन मौजूद है या'नी वोह पेपर ख़ुश्बू से भीगा हुवा है, तो उस तरी के बदन पर लगने की सूरत में जो हुक्म ख़ुश्बू का होता है, वोही इस का भी होगा। या'नी अगर क़लील (या'नी कम) है और उ़ज़्वे कामिल (या'नी पूरे उ़ज़्व) को न लगे, तो **स-दक़ा**, वरना अगर कसीर (या'नी ज़ियादा) हो या कामिल (पूरे) उ़ज़्व को लग जाए, तो **दम** है। और अगर ऐन मौजूद न हो बल्कि सिर्फ़ महक आती हो तो अगर इस से चेहरा वग़ैरा पोंछा और चेहरे या हाथ में ख़ुश्बू का असर आ गया, तो कोई "कफ़्फ़ारा" नहीं कि यहां ख़ुश्बू का ऐन न पाया गया और टिशू पेपर का मक़्सूदे अस्ली ख़ुश्बू से नफ़्अ़ लेना नहीं। (एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन, स. 31) अगर कोई ऐसे कमरे में दाख़िल हुवा जिस को धूनी दी गई और उस के कपड़े में महक बस गई, तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं, क्यूं कि उस ने ख़ुश्बू के ऐन से नफ़्अ़ नहीं उठाया। (عالمگیری ج۱ص۲٤۱)

सुवाल : सोते वक़्त सिली हुई चादर ओढ़ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : चेहरा बचा कर एक बल्कि इस से ज़ियादा चादरें भी ओढ़ सकते हैं, ख़्वाह पाउं पूरे ढक जाएं।

सुवाल : त़य्यारे या बस वग़ैरा की अगली निशस्त के पीछे या तक्ये पर मुंह रख कर मोह़रिम सो गया क्या हुक्म है ?

जवाब : तक्ये में मुंह रख कर सोने पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं लेकिन येह मक्रूहे तह़रीमी है। जब कि बस वग़ैरा की अगली सीट के पीछे मुंह रख कर सोना जाइज़ है क्यूं कि उ़मूमी त़ौर पर सीट तख़्ती, दरवाज़े की त़रह़ सख़्त होती है न कि तक्ये की त़रह़ नर्म।

सुवाल : घुटनों में मुंह रख कर सोना कैसा ? तक्ये पर मुंह रख कर सोने में कफ़्फ़ारा नहीं मगर मक्रूह है, क्यूं ?

जवाब : अगर तो सिर्फ़ घुटनों पर मुंह हो या'नी घुटने की सख़्ती पर तो जाइज़ है, क्यूं कि कपड़े के अन्दर अगर सख़्त चीज़ हो तो उस सख़्त चीज़ का हुक्म लगता है न कि कपड़े का, जैसा कि उ़-लमा ने बोरी और गठड़ी (कपड़े के इ़लावा) का हुक्म लिखा है। लेकिन घुटने पर मुंह रख कर सोने में येह कैफ़िय्यत बहुत मुश्किल है बल्कि नींद के दौरान घुटने की सख़्ती पर और सिर्फ़ कपड़े पर चेहरा आता रहेगा लिहाज़ा इस से एह़्तिराज़ किया (या'नी बचा) जाए वरना कफ़्फ़ारे की सूरतें पैदा हो सकती हैं और जहां तक तक्ये का तअ़ल्लुक़ है तो वोह नरमी में कपड़े के मुशाबेह है (इस लिये मन्अ़ किया गया) मगर مِنْ كُلِّ الْوُجُوه (या'नी हर त़रह़ से) कपड़ा नहीं (इस लिये कफ़्फ़ारा नहीं)।

सुवाल : मोह़रिम सर्दी से बचने के लिये ज़िप (zip) वाले बिस्तरे में चेहरा और सर छोड़ कर बाक़ी बदन बन्द कर के सो सकता है या नहीं ?

जवाब : सो सकता है। क्यूं कि आ़दतन इसे लिबास पहनना नहीं कहते।

सुवाल : मोह़रिम को क़त़रे आते हों तो क्या करे ?

जवाब : बे सिला लंगोट बांध ले कि एह़राम में लंगोट बांधना मुत़्लक़न जाइज़ है जब कि सिलाई वाला न हो।

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 664)

सुवाल : क्या बीमारी वग़ैरा की मजबूरी से सिला हुवा लिबास पहनने में भी कफ़्फ़ारे हैं ?

जवाब : जी हां। बीमारी वग़ैरा के सबब अगर सर से पाउं तक सब कपड़े पहनने की ज़रूरत पेश आई तो एक ही **जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी**[1] है। अगर चार पहर पहने या ज़ियादा तो **दम** और कम में "स-दक़ा" और अगर उस बीमारी में उस जगह ज़रूरत एक कपड़े की थी और दो[2] पहन लिये म-सलन ज़रूरत कुरते की थी और सिलाई वाला बनियान भी पहन लिया तो इस सूरत में कफ़्फ़ारा तो एक ही होगा मगर गुनहगार होगा और अगर दूसरा कपड़ा दूसरी जगह पहन लिया म-सलन ज़रूरत पाजामे की थी और कुरता भी पहन लिया तो एक जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी हुवा और एक जुर्मे इख़्तियारी।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1168, عالمگیری ج۱ص۲٤۲)

مدینہ

1 : जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी का मस्अला सफ़ह़ा 136 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

सुवाल : अगर बिग़ैर ज़रूरत सारे कपड़े पहन लिये तो कितने कफ़्फ़ारे देना होंगे ?

जवाब : अगर बिग़ैर ज़रूरत सब कपड़े एक साथ पहन लिये तो एक ही जुर्म है। दो जुर्म उस वक़्त हैं कि एक ज़रूरत से हो और दूसरा बिला ज़रूरत। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1168)

सुवाल : अगर मुंह दोनों हाथों से छुपा लिया या सर या चेहरे पर किसी ने हाथ रख दिया ?

जवाब : सर या नाक पर अपना या दूसरे का हाथ रखना जाइज़ है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : अपना या दूसरे का हाथ अपने सर या नाक पर रखना बिल इत्तिफ़ाक़ मुबाह़ (या'नी जाइज़) है क्यूं कि ऐसा करने वाले को ढकने या छुपाने वाला नहीं कहा जाता। (لُبابُ الْمَناسِك والْمَسْلَكُ الْمُتَقَسِّط ص۱۲۳)

सुवाल : तो क्या मोह़रिम दुआ़ मांगने के बा'द अपने हाथ मुंह पर नहीं फेर सकता ?

जवाब : फेर सकता है, मुंह पर हाथ रखने की मुत़्लक़न इजाज़त है, दाढ़ी वाला इस्लामी भाई मुंह पर बा'दे दुआ़ बल्कि वुज़ू में भी इस अन्दाज़ से हाथ मलने से बचे जिस से बाल गिरने का अन्देशा हो।

सुवाल : अगर कन्धे पर सिले हुए कपड़े डाल लिये तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : कोई **कफ़्फ़ारा** नहीं। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

फ़रमाते हैं : पहनने का मत़लब येह है कि वोह कपड़ा इस त़रह़ पहने जैसे आ़दतन पहना जाता है, वरना अगर कुरते का तहबन्द बांध लिया या पाजामे को तहबन्द की त़रह़ लपेटा पाउं पाइंचे में न डाले तो कुछ नहीं । यूंही अंग-रखा फैला कर दोनों शानों पर रख लिया, आस्तीनों में हाथ न डाले तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर मक्रूह है और मोंढों (या'नी कन्धों) पर सिले कपड़े डाल लिये तो कुछ नहीं । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1169)

ह़ल्क़ व तक़्सीर के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर उ़म्रे का ह़ल्क़ ह़रम से बाहर करवाना चाहे तो करवा सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं करवा सकता, करवाएगा तो **दम** वाजिब होगा, हां इस के लिये वक़्त की कोई क़ैद नहीं ।

(دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتار ج۳ص٦٦٦)

सुवाल : क्या **जद्दा शरीफ़** वग़ैरा में काम करने वालों को भी हर बार **उ़म्रे** में ह़ल्क़ या तक़्सीर करना वाजिब है ?

जवाब : जी हां । वरना एह़राम की पाबन्दियां ख़त्म न होंगी ।

सुवाल : जिस औ़रत के बाल छोटे हों (जैसा कि आज कल फ़ेशन है) उ़म्रों का भी जज़्बा है मगर बार बार क़स्र करने में सर के बाल ही ख़त्म हो जाएंगे, क्या करे ? अगर सर के सारे बाल ख़त्म हो गए या'नी एक पोरे से कम रह गए तो अब उ़म्रे करेगी तो क़स्र मुम्किन न रहा, मुआ़फ़ी मिलेगी या क्या ?

जवाब : जब तक सर पर बाल मौजूद हों औ़रत के लिये हर बार क़स्र वाजिब है। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "औ़रतों पर ह़ल्क़ नहीं बल्कि इन पर सिर्फ़ तक़्सीर (वाजिब) है।" (ابوداوٗد ج ۲ ص ۲۹۵ حدیث ۱۹۸۴)

ऐसी औ़रत जिस के बाल एक पोरे से कम रह गए हों, उस के लिये अब क़स्र की मुआ़फ़ी है क्यूं कि क़स्र मुम्किन न रहा और ह़ल्क़ कराना इस के लिये मन्अ़ है। ऐसी सूरत में अगर ह़ज का मुआ़-मला है तो अफ़्ज़ल येह है कि अय्यामे नह़्‍र के आख़िर में (या'नी 12 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** के ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द) एह़राम से बाहर आए, अगर अय्यामे नह़्‍र के आख़िर तक इन्तिज़ार न भी किया तो कोई चीज़ लाज़िम न होगी।

मु-तफ़र्रिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : सर या मुंह ज़ख़्मी हो जाने की सूरत में पट्टी बांधना गुनाह तो नहीं ?

जवाब : मजबूरी की सूरत में गुनाह नहीं होगा, अलबत्ता "जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी" का कफ़्फ़ारा देना आएगा। लिहाज़ा अगर दिन या रात या इस से ज़ियादा देर तक इतनी चौड़ी पट्टी बांधी कि चौथाई (1/4) या इस से ज़ियादा सर या मुंह छुप गया तो **दम** और कम में **स-दक़ा** वाजिब होगा (जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी की तफ़्सील सफ़ह़ा 136 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये) इस के

इलावा जिस्म के दूसरे आ'ज़ा पर नीज़ औ़रत के सर पर भी मजबूरन पट्टी बांधने में कोई मुज़ा–यक़ा नहीं।

सुवाल : ह़ज या उ़म्रे की सअ़्य के क़ब्ल ह़ल्क़ करवा लिया कई रोज़ गुज़र गए क्या करे ?

जवाब : **ह़ज** में ह़ल्क़ का मस्नून वक़्त **सअ़्य** से क़ब्ल ही होता है या'नी ह़ल्क़ से पहले सअ़्य करना ख़िलाफ़े सुन्नत है। लिहाज़ा अगर किसी ने सअ़्य से क़ब्ल ह़ल्क़ करवाया तो कोई ह़रज नहीं। और कई दिन गुज़रने से भी मज़ीद कुछ लाज़िम नहीं आएगा क्यूं कि सअ़्य के लिये कोई वक़्ते इन्तिहा (END TIME) मुक़र्रर नहीं है। हां अगर वोह सअ़्य के बिग़ैर ''वत़न'' चला गया तो अब तर्के वाजिब की वजह से **दम** लाज़िम आएगा, फिर अगर वोह लौट कर सअ़्य कर ले तो दम साक़ित़ हो जाएगा अलबत्ता बेहतर येह है कि अब वोह **दम** ही दे कि इस में नफ़्ए़ फ़ु–क़रा है। येह हुक्म उसी वक़्त है कि जब ह़ल्क़ अपने वक़्त या'नी अय्यामे नह़्र में दसवीं की **रम्य** के बा'द करवाया हो, अगर रम्य से क़ब्ल या अय्यामे नह़्र के बा'द ह़ल्क़ करवाया तो **दम** वाजिब होगा। **उ़म्रे** में अगर किसी ने सअ़्य से क़ब्ल ह़ल्क़ करवाया तो उस पर **दम** लाज़िम आएगा। फिर अगर पूरा या त़वाफ़ का अक्सर हि़स्सा या'नी चार फेरे कर चुका था तो एह़राम से निकल जाएगा वरना नहीं। कई दिन गुज़र जाने की

वजह से भी **सअ्य** साक़ित़ नहीं होगी क्यूं कि येह वाजिब है लिहाज़ा इसे सअ्य करनी होगी ।

सुवाल : क्या 13 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** से उ़म्रे शुरूअ़ कर दिये जाएं ?

जवाब : जी नहीं । अय्यामे तश्रीक़ या'नी 9, 10, 11, 12, और 13 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** इन पांच दिनों में **उ़म्रे** का एह़राम बांधना **मक्रूहे तह़रीमी** (ना जाइज़ व गुनाह) है । अगर बांधा तो **दम** लाज़िम आएगा । (دُرِّ مُختار ج ۳ ص ٥٤٧)

13 को ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द एह़राम बांध सकते हैं

सुवाल : क्या मक़ामी ह़ज़रात जिन्हों ने इस साल ह़ज नहीं किया वोह भी इन दिनों या'नी नवीं ता तेरहवीं पांच दिन उ़म्रह नहीं कर सकते ?

जवाब : इन के लिये भी इन दिनों उ़म्रे का एह़राम बांध कर उ़म्रह करना मक्रूहे तह़रीमी है । आफ़ाक़ी, ह़िल्ली और मीक़ाती सभी के लिये अस्ल मुमा-न-अ़त इन दिनों में उ़म्रे का एह़राम बांधने की है । उ़म्रे का वक़्त पूरा साल है, मगर पांच दिन उ़म्रे का एह़राम बांधना मक्रूहे तह़रीमी है, और अगर नवीं से क़ब्ल बांधे हुए एह़राम के साथ इन (पांच) दिनों में उ़म्रह किया तो कोई ह़रज नहीं और इस सूरत में भी **मुस्तह़ब** येह है कि इन दिनों को गुज़ार कर उ़म्रह करे ।

(لُبابُ الْمَناسِك ص٤٦٦)

सुवाल : **अश्हुरे** ह़ज में अगर कोई ह़िल्ली या ह़-रमी उ़म्रह भी करे और ह़ज भी करे तो उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा करने वाले पर **दम** वाजिब हो जाएगा क्यूं कि इस को सिर्फ़ ह़ज्जे इफ़्राद की इजाज़त है जिस में उ़म्रह शामिल नहीं । अलबत्ता वोह सिर्फ़ उ़म्रह कर सकता है ।

सुवाल : एह़राम में खाने से क़ब्ल और बा'द हाथ धोना कैसा ? न धोने से मैल कुचैल पेट में जाएगा और बा'द में नहीं धोएंगे तो हाथ चिकने और बदबूदार रहेंगे, क्या करें ?

जवाब : दोनों बार बिग़ैर साबुन वग़ैरा के हाथ धो लीजिये अगर कोई ख़ारिजी कालक या चिक्नाहट हाथों में लगी हो तो ज़रूरतन कपड़े से पोंछ लीजिये । मगर बाल न टूटें इस की एह़तियात़ कीजिये ।

सुवाल : वुज़ू के बा'द मोह़रिम का रुमाल से हाथ मुंह पोंछना कैसा है ?

जवाब : मुंह पर (और मर्द सर पर भी) कपड़ा नहीं लगा सकते, जिस्म का बाक़ी ह़िस्सा म-सलन हाथ वग़ैरा इतनी एह़तियात़ के साथ पोंछ सकते हैं कि मैल भी न छूटे और बाल भी न टूटे ।

सुवाल : मोह़रिमा चेहरा बचा कर पी केप वाला या कमानी दार निक़ाब डाल सकती है या नहीं ?

जवाब : डाल सकती है मगर हवा चली या ग़-लत़ी ही से अपना हाथ निक़ाब पर रख लिया जिस के सबब चाहे थोड़ी सी

देर के लिये भी चेहरे पर निक़ाब लग गया तो कफ़्फ़ारे की सूरत बन सकती है।

सुवाल : ह़ल्क़ करवाते वक़्त मोह़रिम सर पर साबुन लगाए या नहीं ?

जवाब : साबुन न लगाए क्यूं कि मैल छूटेगा और मैल छुड़ाना एह़राम में मक्रूहे (तन्ज़ीही) है।

सुवाल : माहवारी की ह़ालत में औ़रत एह़राम की निय्यत कर सकती है या नहीं ?

जवाब : कर सकती है मगर एह़राम के नफ़्ल अदा नहीं कर सकती, नीज़ त़वाफ़ पाक होने के बा'द करे।

सुवाल : सिलाई वाले चप्पल पहनना कैसा है ?

जवाब : वस्ते क़दम या'नी क़दम का उभरा हुवा ह़िस्सा अगर न छुपाएं तो ह़रज नहीं।

सुवाल : एह़राम में गिरह या बक्सुवा (सेफ़्टी पिन) या बटन लगाना कैसा ?

जवाब : ख़िलाफ़े सुन्नत है। लगाने वाले ने बुरा किया, अलबत्ता **दम** वग़ैरा नहीं।

सुवाल : मोह़रिम नाक या कान का मैल निकाल सकता है या नहीं ?

जवाब : वुज़ू में नाक के नर्म बांसे तक रूएं रूएं पर पानी बहाना **सुन्नते मुअक्कदा** है और ग़ुस्ल में फ़र्ज़। लिहाज़ा अगर नाक में रेंठ सूख गई तो छुड़ाना होगा, और पलकों वग़ैरा में अगर आंख की चीपड़ सूख गई है तो उसे भी वुज़ू और ग़ुस्ल के लिये छुड़ाना **फ़र्ज़** है मगर येह एह़तियात

ज़रूरी है कि बाल न टूटे। **रहा कान** का मैल निकालना तो इसे छुड़ाने की इजाज़त की सराहत किसी ने नहीं की लिहाज़ा इस का हुक्म वोही होगा जो बदन के मैल का है या'नी इस का छुड़ाना मक्रूहे तन्ज़ीही है। मगर येह एहतियात ज़रूरी है कि बाल न टूटे।

सुवाल : क्या ज़िन्दा वालिदैन के नाम पर **उ़म्रह** कर सकते हैं ?

जवाब : कर सकते हैं। फ़र्ज़ नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात नीज़ हर क़िस्म के नेक काम का सवाब ज़िन्दा, मुर्दा सब को ईसाल कर सकते हैं।

सुवाल : **एह़राम** की ह़ालत में **जूं** मारने के कफ़्फ़ारे बता दीजिये।

जवाब : अपनी **जूं** अपने बदन या कपड़े में मारी या फेंक दी तो एक **जूं** हो तो रोटी का एक टुकड़ा और दो या तीन हों तो एक मुठ्ठी अनाज और इस (या'नी तीन) से ज़ियादा में **स-दक़ा**। जूएं मारने के लिये सर या कपड़ा धोया या धूप में डाला जब भी वोही कफ़्फ़ारे हैं जो मारने में हैं। दूसरे ने इस के कहने पर इस की **जूं** मारी जब भी इस (या'नी मोह़रिम) पर कफ़्फ़ारा है अगर्चे मारने वाला एह़राम में न हो। ज़मीन वग़ैरा पर गिरी हुई **जूं** या दूसरे के बदन या कपड़ों की जूएं मारने में मारने वाले पर कुछ नहीं अगर्चे वोह दूसरा भी मोह़रिम हो।

अ़रब शरीफ़ में काम करने वालों के लिये

सुवाल : अगर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में काम करने

वाले म–सलन ड्राइवर या वहां के बाशिन्दे वग़ैरा रोज़ाना बार बार "**ताइफ़ शरीफ़**" जाएं तो क्या हर बार वापसी में उन्हें रोज़ाना उ़म्रे वग़ैरा का **एह़राम** बांधना ज़रूरी है ?

जवाब : येह क़ाइदा ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि अहले मक्का अगर किसी काम से "ह़ुदूदे ह़रम" से बाहर मगर मीक़ात के अन्दर (म–सलन जद्दा शरीफ़) जाएं तो उन्हें वापसी के लिये एह़राम की ह़ाजत नहीं और अगर "मीक़ात" से बाहर (म–सलन मदीनए पाक, त़ाइफ़ शरीफ़, रियाज़ वग़ैरा) जाएं तो अब बिग़ैर **एह़राम** के "ह़ुदूदे ह़रम" में वापस आना जाइज़ नहीं । ड्राइवर चाहे दिन में कई बार आना जाना करे हर बार उस पर ह़ज या उ़म्रह वाजिब होता रहेगा । बिग़ैर एह़राम के **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا आएगा तो **दम** वाजिब होगा अगर इसी साल मीक़ात से बाहर जा कर एह़राम बांध ले तो दम साक़ित़ हो जाएगा ।

एह़राम न बांधना हो तो ह़ीला

सुवाल : अगर कोई शख़्स **जद्दा शरीफ़** में काम करता हो तो अपने वत़न म–सलन पाकिस्तान से काम के लिये जद्दा शरीफ़ आया तो क्या **एह़राम** लाज़िमी है ?

जवाब : अगर निय्यत ही जद्दा शरीफ़ जाने की है तो अब **एह़राम** की ह़ाजत नहीं बल्कि अब जद्दा शरीफ़ से **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا भी जाना हो जाए तो एह़राम

के बिग़ैर जा सकता है। लिहाज़ा जो शख़्स **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में बिग़ैर एह्राम जाना चाहता हो वोह ह़ीला कर सकता है बशर्ते कि वाक़ेई उस का इरादा पहले म-सलन जद्दा शरीफ़ जाने का हो और **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ह़ज व उ़म्रे के इरादे से न जाता हो। म-सलन तिजारत के लिये जद्दा शरीफ़ जाता है और वहां से फ़ारिग़ हो कर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का इरादा किया। अगर पहले ही से **मक्कए पाक** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का इरादा है तो बिग़ैर एह्राम नहीं जा सकता। जो शख़्स दूसरे की त़रफ़ से **ह़ज्जे बदल** को जाता है उसे येह ह़ीला जाइज़ नहीं।

उ़म्रह या ह़ज के लिये सुवाल करना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ ग़रीब उ़श्शाक़ उ़म्रह या सफ़रे ह़ज के लिये लोगों से माली इमदाद का सुवाल करते हैं, क्या ऐसा करना **जाइज़** है ?

जवाब : ह़राम है। सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना **नईमुद्दीन** मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى नक़्ल करते हैं : ''बा'ज़ **य-मनी** ह़ज के लिये बे सरो सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आप को मु-तवक्किल (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखने वाला) कहते थे और **मक्कए मुकर्रमा** पहुंच कर **सुवाल** शुरूअ़ कर देते और कभी ग़स्ब व ख़ियानत के भी मुर-तकिब होते, उन के बारे में येह आयते मुक़द्दसा

नाज़िल हुई और हुक्म हुवा कि तोशा (या'नी सफ़र के अख़्राजात) ले कर चलो औरों पर बार न डालो, **सुवाल** न करो कि बेहतर तोशा (या'नी ज़ादे राह) परहेज़ गारी है।"

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 67, मक-त-बतुल मदीना)

चुनान्चे पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत नम्बर 197 में इर्शादे रब्बुल इबाद होता है :

وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى (پ ۲، البقرہ ۱۹۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़ गारी है।

सुल्ताने मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जो शख़्स लोगों से **सुवाल** करे हालां कि न उसे फ़ाक़ा पहुंचा न इतने बाल बच्चे हैं जिन की ताक़त नहीं रखता तो क़ियामत के दिन इस तरह आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त न होगा।" (شُعَبُ الْاِیْمان ج۳ص۲۷۴حدیث۳۵۲۶)

मदीने के दीवानो ! बस सब्र कीजिये, सुवाल की मुमा-न-अत में इस क़दर एहतिमाम है कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : गुस्ल के बा'द एहराम बांधने से पहले अपने बदन पर ख़ुश्बू लगाइये बशर्ते कि अपने पास मौजूद हो, अगर अपने पास न हो तो किसी से तलब न कीजिये कि येह भी **सुवाल** है। (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۵۵۹)

जब बुलाया आक़ा ने   ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उ़म्रे के वीज़े पर ह़ज के लिये रुकना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ लोग अपने वत़न से **र-मज़ानुल मुबारक** में उ़म्रे का वीज़ा ले कर **ह़-रमैने त़य्यिबैन** زادهما الله شرفاً وّتعظيماً जाते हैं, वीज़ा की मुद्दत ख़त्म हो जाने के बा वुजूद वहीं रहते हैं या **ह़ज** कर के **वत़न** वापस जाते हैं उन का येह फ़े'ल शरअ़न दुरुस्त है या नहीं ?

जवाब : दुन्या के हर मुल्क का येह क़ानून है कि बिग़ैर वीज़ा के किसी ग़ैर मुल्की को रुकने नहीं दिया जाता। **ह़-रमैने त़य्यिबैन** زادهما الله شرفاً وّتعظيماً में भी येही क़ाइदा है। मुद्दते वीज़ा ख़त्म होने के बा'द रुकने वाला अगर पोलीस के हाथ लग जाए, तो अब चाहे वोह एह़राम की ह़ालत में ही क्यूं न हो उसे क़ैद कर लेते हैं, न उसे **उ़म्रह** करने देते हैं न ही **ह़ज**, सज़ा देने के बा'द "**ख़ुरूज**" लगा कर उसे उस के वत़न रवाना कर देते हैं। **याद रहे ! जिस क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने पर ज़िल्लत, रिश्वत और झूट वग़ैरा आफ़ात में पड़ने का अन्देशा हो उस क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी जाइज़ नहीं।** चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عليه رحمة الرحمن फ़रमाते हैं : "मुबाह़ (या'नी जाइज़) सूरतों में से बा'ज़ (सूरतें) क़ानूनी तौ़र पर जुर्म होती हैं उन में मुलव्वस होना (या'नी ऐसे क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करना) अपनी ज़ात को अज़िय्यत

व ज़िल्लत के लिये पेश करना है और वोह ना जाइज़ है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 370) लिहाज़ा बिग़ैर visa के दुन्या के किसी मुल्क में रहना या "हज" के लिये रुकना जाइज़ नहीं। **ग़ैर क़ानूनी ज़राएअ़ से "हज" के लिये रुकने में काम्याबी ह़ासिल करने को** مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم **का करम कहना सख़्त बेबाकी है।**

ग़ैर क़ानूनी रुकने वाले की नमाज़ का अहम मस्अला

सुवाल : हज के लिये बिग़ैर visa रुकने वाला नमाज़ पूरी पढ़े या क़स्र करे ?

जवाब : **उ़म्रे** के वीज़े पर जा कर ग़ैर क़ानूनी तौर पर **हज** के लिये रुकने या दुन्या के किसी भी मुल्क में visa की मुद्दत पूरी होने के बा'द ग़ैर क़ानूनी रहने की जिन की निय्यत हो वोह वीज़ा की मुद्दत ख़त्म होते वक़्त जिस शह्र या गाउं में मुक़ीम हों वहां जब तक रहेंगे उन के लिये मुक़ीम ही के अह़काम होंगे अगर्चे बरसों पड़े रहें। अलबत्ता एक बार भी अगर 92 किलो मीटर या इस से ज़ियादा फ़ासिले के सफ़र के इरादे से उस शह्र या गाउं से चले तो अपनी आबादी से बाहर निकलते ही मुसाफ़िर हो गए और अब उन की इक़ामत की निय्यत बेकार है। म-सलन कोई शख़्स पाकिस्तान से उ़म्रे के VISA पर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا गया, VISA की

मुद्दत ख़त्म होते वक़्त भी मक्का शरीफ़ ही में मुक़ीम है तो उस पर मुक़ीम के अह्काम हैं। अब अगर म–सलन वहां से **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا **आ गया तो चाहे बरसों ग़ैर क़ानूनी पड़ा रहे, मुसाफ़िर ही है, यहां तक कि अगर दोबारा मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا **आ जाए फिर भी मुसाफ़िर रहेगा, इस को "नमाज़ क़स्र" ही अदा करनी होगी। हां दोबारा VISA मिल जाने की सूरत में इक़ामत की निय्यत की जा सकती है।**

ह़रम में कबूतरों, टिड्डियों को उड़ाना, सताना

सुवाल : ह़रम के कबूतरों और टिड्डियों को ख़्वाह म ख़्वाह उड़ाना कैसा ?

जवाब : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं ह़रम के कबूतर उड़ाना मन्अ़ है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 208)

सुवाल : ह़रम के कबूतरों और टिड्डियों (तिरिड्डी) को सताना कैसा ?

जवाब : ह़राम है। **सदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़रम के जानवर को शिकार करना या उसे किसी त़रह़ ईज़ा देना सब को **ह़राम** है। मोह़रिम और ग़ैर मोह़रिम दोनों इस हुक्म में यक्सां हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1186)

सुवाल : मोह़रिम कबूतर ज़ब्ह़ कर के खा सकते हैं ?

जवाब : बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 1180 पर है : मोह़रिम ने जंगल के जानवर को ज़ब्ह़ किया तो ह़लाल

न हुवा बल्कि मुर्दार है, ज़ब्ह़ करने के बा'द उसे खा भी लिया तो अगर कफ़्फ़ारा देने के बा'द खाया तो अब फिर खाने का कफ़्फ़ारा दे और अगर नहीं दिया था तो एक ही कफ़्फ़ारा काफ़ी है।

सुवाल : ह़रम की टिड्डी पकड़ कर खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : ह़राम है। (वैसे टिड्डी ह़लाल है, मछली की त़रह़ मरी हुई भी खा सकते हैं इस को ज़ब्ह़ करने की ज़रूरत नहीं होती)

सुवाल : मस्जिदुल ह़राम के बाहर लोगों के क़दमों से कुचल कर ज़ख़्मी और मरी हुई बे शुमार टिड्डियां पड़ी होती हैं अगर येह टिड्डियां खा लीं तो ?

जवाब : अगर किसी ने टिड्डियां खा लीं तो उस पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं क्यूं कि ह़रम में शिकार होने वाले उस जानवर का खाना ह़राम है जो शर-ई त़रीक़े से ज़ब्ह़ करने से ह़लाल होता हो जैसे हिरन वग़ैरा। और ऐसे शिकार के ह़राम होने की वजह येह है कि ह़रम में शिकार करने से वोह जानवर मुर्दार क़रार पाता है और मुर्दार का खाना ह़राम है। टिड्डी का खाना इस लिये ह़लाल है इस में शर-ई त़रीक़े से ज़ब्ह़ करने की शर्त़ नहीं, येह जिस त़रह़ भी ज़ब्ह़ हो जाए ह़लाल है, जैसे पाउं तले रौंदने से या गला दबाने से मारी जाए तब भी ह़लाल ही रहती है। अलबत्ता येह याद रहे कि बिलक़स्द (इरादतन) टिड्डियां शिकार करने की बहर ह़ाल ह़ुदूदे ह़रम में इजाज़त नहीं।

सुवाल : ह़रम के खुश्की के जंगली जानवर को ज़ब्ह़ करने का कफ़्फ़ारा भी बता दीजिये।

जवाब : इस का कफ़्फ़ारा इस की क़ीमत स-दक़ा करना है।[1]

सुवाल : ह़रम की मुर्ग़ी ज़ब्ह़ करना, खाना कैसा ?

जवाब : ह़लाल है। घरेलू जानवर म-सलन मुर्ग़ी, बकरी गाय, भेंस, ऊंट वग़ैरा ज़ब्ह़ करने, और इन का गोश्त खाने में कोई ह़रज नहीं। मुमा-न-अ़त खुश्की के वह़्शी या'नी जंगली जानवर के शिकार की है।

सुवाल : मस्जिदुल ह़राम के बाहर बहुत सारी टिड्डियां होती हैं अगर कोई टिड्डी पाउं या गाड़ी में कुचल कर ज़ख़्मी हो गई या मर गई तो ?

जवाब : कफ़्फ़ारा देना होगा, बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 1184 पर है टिड्डी भी खुश्की का जानवर है, उसे मारे तो कफ़्फ़ारा दे और एक खजूर काफ़ी है। **सफ़ह़ा** 1181 पर है : कफ़्फ़ारा लाज़िम आने के लिये क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) क़त्ल करना शर्त़ नहीं भूल चूक से क़त्ल हुवा जब भी **कफ़्फ़ारा** है।

सुवाल : मस्जिदुल ह़राम में ब कसरत टिड्डियां होती हैं, खुद्दाम सफ़ाई करते हुए वाइपर वग़ैरा से बे दर्दी के साथ घसीटते

1 : कफ़्फ़ारे के तफ़्सीली अह़काम मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 1179 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये बल्कि सफ़ह़ा 1191 तक मुत़ा-लआ़ कर लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह ज़रूरी मसाइल जानने को मिलेंगे कि आप ह़ैरान रह जाएंगे।

हैं जिस से ज़ख़्मी होतीं, मरती हैं। अगर न करें तो सफ़ाई की सूरत क्या होगी ? इसी त़रह़ सुना है कबूतरों की ता'दाद में कमी के लिये इन को पकड़ कर कहीं दूर छोड़ आते या खा जाते हैं।

जवाब : टिड्डियां अगर इतनी कसीर हैं कि इन की वजह से ह़रज वाक़ेअ़ होता है तो इन के मारने में कोई ह़रज नहीं, इस के इ़लावा मारने पर तावान लाज़िम होगा, चाहे जान बूझ कर मारें या ग़-लती से मारी जाएं। ह़रम का कबूतर पकड़ कर ज़ब्ह़ कर दिया तो तावान लाज़िम है यूंही ह़रम से बाहर भी छोड़ आने पर तावान लाज़िम होगा, जब तक कि इन के अम्न के साथ ह़रम में वापस आ जाने का इ़ल्म न हो जाए। दोनों सूरतों में तावान उस कबूतर की क़ीमत है और इस से मुराद वोह क़ीमत जो वहां पर इस त़रह़ के मुआ़-मलात की मा'रिफ़त व बसारत (या'नी जान पहचान व मा'लूमात) रखने वाले दो शख़्स बयान करें और अगर दो शख़्स न मिलते हों तो एक की भी बात का ए'तिबार किया जाएगा।

सुवाल : ह़रम की मछली खाना कैसा ?

जवाब : मछली ख़ुश्की का जानवर नहीं, इसे खा सकते हैं और ज़रूरतन शिकार भी कर सकते हैं।

सुवाल : ह़रम के चूहे को मार दिया तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब : कोई कफ़्फ़ारा नहीं इस को मारना जाइज़ है। बहारे

शरीअ़त जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 1183 पर है कव्वा, चील, भेड़िया, बिच्छू, सांप, चूहा, घूंस, **छछूंदर**, कटखन्ना कुत्ता (या'नी काट खाने वाला कुत्ता), पिस्सू, मच्छर, किल्ली, कछवा, केकड़ा, पतंगा, काटने वाली च्यूंटी, मख्खी, छुपकली, बुर और तमाम ह़श्रातुल अर्ज़ (या'नी कीड़ी मकोड़े), **बिज्जू**, लोमड़ी, गीदड़ जब कि येह दरिन्दे ह़म्ला करें या जो दरिन्दे ऐसे हों जिन की आ़दत अक्सर इब्तिदाअन ह़म्ला करने की होती है जैसे शेर, चीता, तेंदवा (चीते की त़रह़ का एक जानवर) इन सब के मारने में कुछ नहीं। यूंही पानी के तमाम जानवरों के क़त्ल में कफ़्फ़ारा नहीं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़रम के पेड़ वग़ैरा काटना

सुवाल : ह़रम के पेड़ वग़ैरा काटने के **मु-तअ़ल्लिक़** भी कुछ हिदायात दे दीजिये।

जवाब : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल**" **सफ़ह़ा** 1189 ता 1190 से चन्द मसाइल मुला-ह़ज़ा हों : ह़रम के दरख़्त चार क़िस्म हैं : ﴾1﴿ किसी ने उसे बोया है और वोह ऐसा दरख़्त है जिसे लोग बोया करते हैं ﴾2﴿ बोया है मगर इस क़िस्म का नहीं जिसे लोग बोया करते हैं ﴾3﴿ किसी ने उसे

बोया नहीं मगर इस क़िस्म से है जिसे लोग बोया करते हैं ﴾4﴿ बोया नहीं, न उस क़िस्म से है जिसे लोग बोते हैं। पहली तीन क़िस्मों के काटने वग़ैरा में कुछ नहीं या'नी इस पर जुर्माना नहीं। रहा येह कि वोह अगर किसी की मिल्क है तो मालिक तावान लेगा। **चौथी** क़िस्म में जुर्माना देना पड़ेगा और किसी की मिल्क है तो मालिक तावान भी लेगा और जुर्माना उसी वक़्त है कि तर हो और टूटा या उखड़ा हुवा न हो। जुर्माना येह है कि उस की क़ीमत का ग़ल्ला ले कर मसाकीन पर तसद्दुक़ करे, हर मिस्कीन को एक स-दक़ा और अगर क़ीमत का ग़ल्ला पूरे स-दक़े से कम है तो एक ही मिस्कीन को दे और इस के लिये ह़रम के मसाकीन होना ज़रूर नहीं और येह भी हो सकता है कि क़ीमत ही तसद्दुक़ कर दे और येह भी हो सकता है कि उस क़ीमत का जानवर ख़रीद कर ह़रम में ज़ब्ह़ कर दे रोज़ा रखना काफ़ी नहीं। **मस्अला 3 :** जो दरख़्त सूख गया उसे उखाड़ सकता है और उस से नफ़्अ़ भी उठा सकता है **मस्अला 5 :** दरख़्त के पत्ते तोड़े अगर उस से दरख़्त को नुक़्सान न पहुंचा तो कुछ नहीं। यूंही जो दरख़्त फलता है उसे भी काटने में तावान नहीं जब कि मालिक से इजाज़त ले ली हो उसे क़ीमत दे दे **मस्अला 6 :** चन्द शख़्सों ने मिल कर दरख़्त काटा तो एक ही तावान है जो सब पर तक़्सीम

हो जाएगा, ख़्वाह सब मोह़रिम हों या ग़ैर मोह़रिम या बा'ज़ मोह़रिम बा'ज़ ग़ैर मोह़रिम। **मस्अला 7 :** ह़रम के पीलू या किसी दरख़्त की मिस्वाक बनाना जाइज़ नहीं। **मस्अला 9 :** अपने या जानवर के चलने में या ख़ैमा नसब करने में कुछ दरख़्त जाते रहे तो कुछ नहीं। **मस्अला 10 :** ज़रूरत की वजह से फ़तवा इस पर है कि वहां की घास जानवरों को चराना जाइज़ है। बाक़ी काटना, उखाड़ना, इस का वोही हुक्म है जो दरख़्त का है। सिवा इज़्ख़र और सूखी घास के कि इन से हर त़रह़ इन्तिफ़ाअ़ जाइज़ है। खुम्बी के तोड़ने, उखाड़ने में कुछ मुज़ा-यक़ा नहीं।

मीक़ात से बिग़ैर एह़राम गुज़रने के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : अगर किसी आफ़ाक़ी ने मीक़ात से एह़राम नहीं बांधा, मस्जिदे आ़इशा से एह़राम बांध कर उ़म्रह कर लिया तो क्या हुक्म है?

जवाब : अगर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا के इरादे से कोई आफ़ाक़ी चला और मीक़ात में बिग़ैर एह़राम दाख़िल हो गया तो उस पर दम वाजिब हो गया। अब मस्जिदे आ़इशा से एह़राम बांधना काफ़ी नहीं या तो दम दे या फिर मीक़ात से बाहर जाए और वहां से उ़म्रे वग़ैरा का एह़राम बांध कर आए तब दम साक़ित़ होगा।

ماخذ و مراجع

قرآن پاک	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الایضاح فی مناسک الحج	المکتبۃ الامدادیہ مکۃ المکرمہ
تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	البحر العمیق فی المناسک	مؤسسۃ الریان بیروت
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مسلک متقسط	باب المدینہ کراچی
ابو داؤد	دار احیاء التراث العربی بیروت	لباب المناسک	باب المدینہ کراچی
ترمذی	دار الفکر بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاونڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
نسائی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	فتاوٰی حج وعمرہ	جمعیت اشاعت اہلسنت باب المدینہ کراچی
ابو یعلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	احرام اور خوشبودار صابن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	اِحیاء العلوم	دار صادر بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کشف المحجوب	نوائے وقت پرنٹرز مرکز الاولیاء لاہور
ابو داؤد طیالسی	دار المعرفۃ بیروت	الشفاء	مرکز اہل السنۃ برکات رضا ہند
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	المواہب اللدنیۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
المنامات	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بستان المحدثین	باب المدینہ کراچی
مسند امام شافعی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مثنوی	الفیصل ناشران وتاجران کتب مرکز الاولیاء لاہور
ابن عساکر	دار الفکر بیروت	اخبار الاخیار	فاروقی اکیڈمی گمبٹ پاکستان
جامع العلوم والحکم	دار الکتب العلمیۃ بیروت	جذب القلوب	النوریۃ الرضویہ پبلشنگ کمپنی مرکز الاولیاء لاہور
درمختار	دار المعرفۃ بیروت	کتاب الحج	مکتبہ نعمانیہ ضیاء کوٹ
ردالمحتار	دار المعرفۃ بیروت	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
فتاوٰی عالمگیری	دار الفکر بیروت	وسائلِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

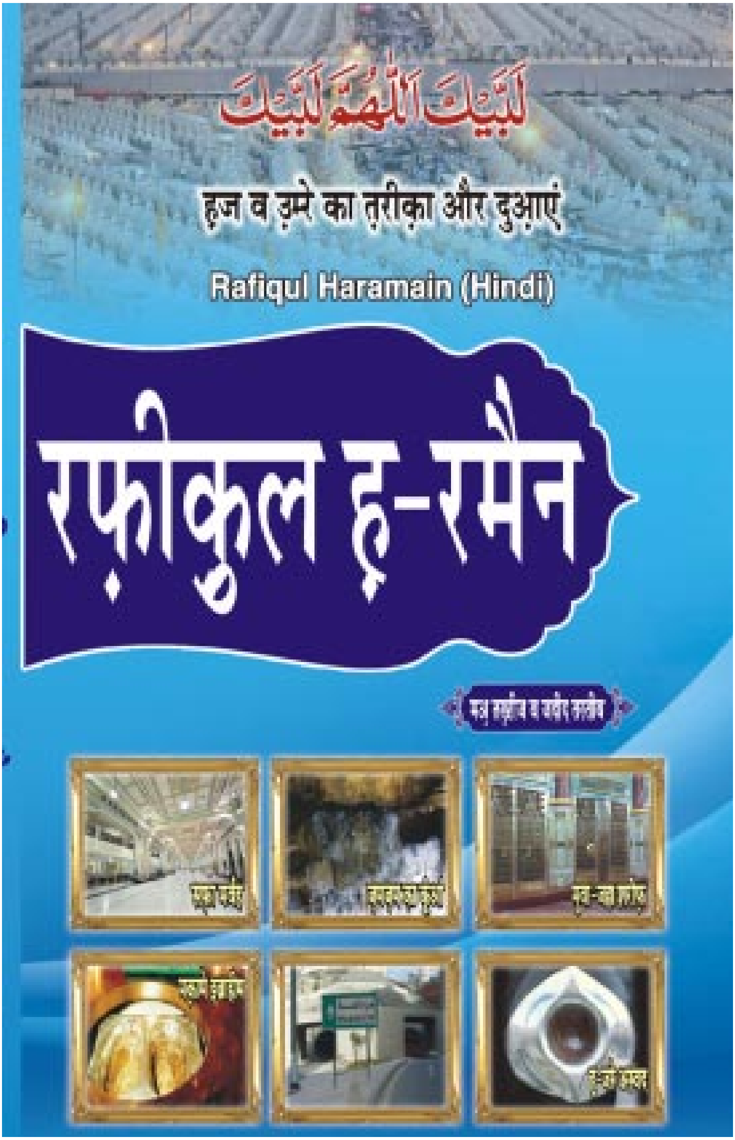
لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ
हज व उम्रे का तरीक़ा और दुआएं
Rafiqul Haramain (Hindi)
रफ़ीकुल ह-रमैन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

हवाई जहाज़ के गिरने और जलने से अम्न में रहने की दुआ

हवाई जहाज़ में सुवार हो कर अव्वल आखि़र दुरूद शरीफ़ के साथ येह **दुआए मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَاَعُوْذُ بِكَ
مِنَ التَّرَدِّیْ ط وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ
وَالْهَرَمِ ط وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ يَّتَخَبَّطَنِیَ الشَّيْطٰنُ
عِنْدَ الْمَوْتِ ط وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِيْلِكَ
مُدْبِرًا ط وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَمُوْتَ لَدِيْغًا ط

म–दनी फूल बुलन्द मक़ाम से गिरने को **तरद्दी** और जलने को **हरक़** कहते हैं । हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ मांगा करते थे ।[1] येह दुआ तय्यारे के लिये मख़्सूस नहीं, चूंकि इस दुआ में "बुलन्दी से गिरने" और "जलने" से भी पनाह मांगी गई है और हवाई सफ़र में येह दोनों ख़तरात मौजूद होते हैं लिहाज़ा उम्मीद है कि इसे पढ़ने की ब–र–कत से **हवाई जहाज़** हादिसे से महफ़ूज़ रहे

[1] ابو داؤد ج۲ ص۱۳۲ حدیث ۱۵۵۲